यूनेस्को

कूरियर

जुलाई 1968 (वर्ष : दो, अंक : एक) वार्षिक चंदा रु. 10.50 पै., एक प्रति : एक रुपया — July 1968 (2nd year)

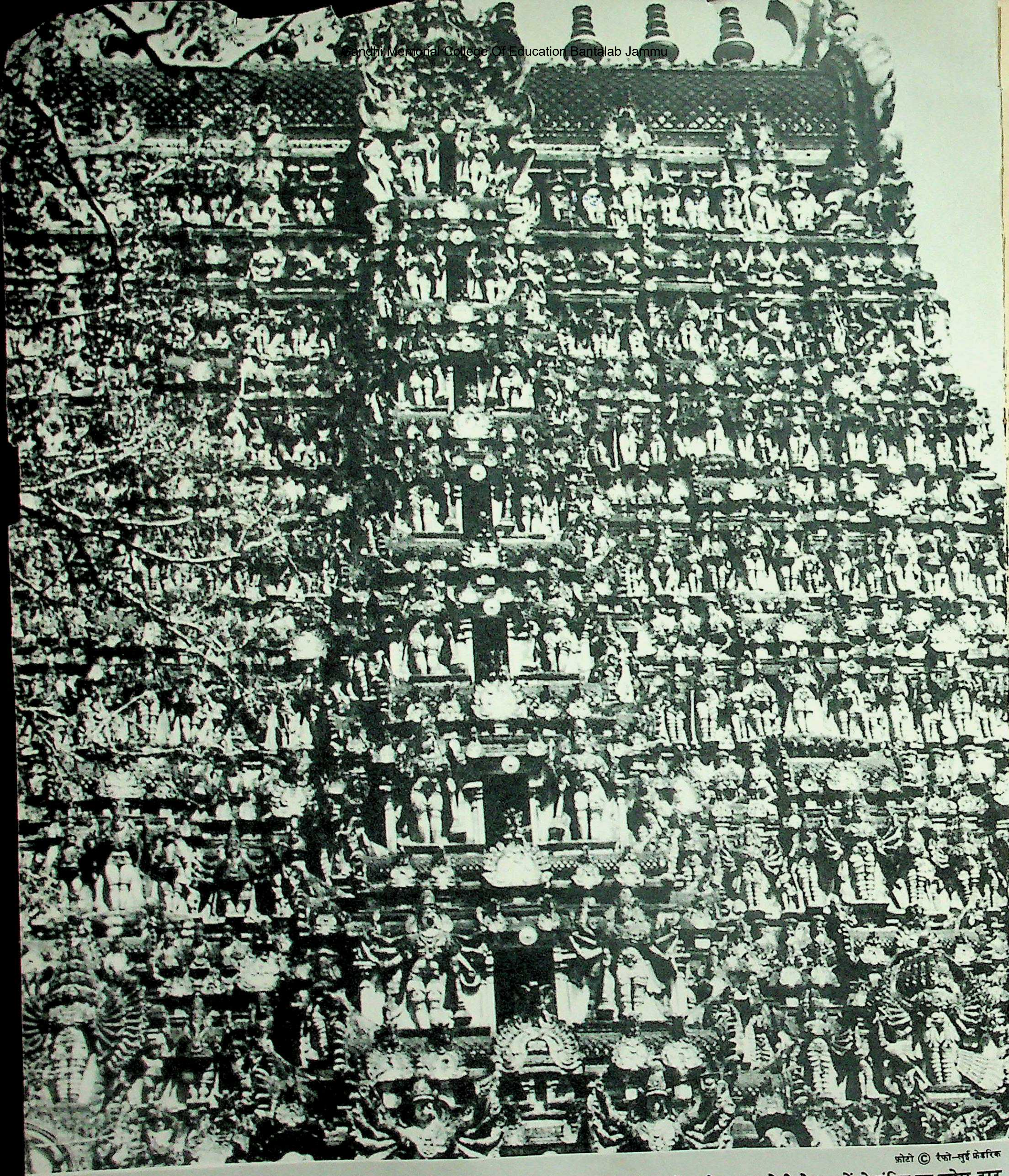
ख़तरे में :

पार्थिनॉन

बोरोबुदुर

श्रीरंगम्...





फ़ोटो © रैफो–लुई फ्रेडरिक

तीन करोड़ तीस लाख देवी-देवताओं के मंदिर का प्रवेश-द्वार

स्थापत्यकला का यह बृहत्काय पर्वत 52 मीटर ऊँचा है, जिस पर बनी असंख्य मूर्तियां और चित्र आकाश की ओर बढ़ते उसे छूते प्रतीत होते है। यह हिंदू देवता शिव की एक पत्नी मीनाक्षी को समर्पित मदुरई (दक्षिण भारत) में स्थित मंदिर का विशाल प्रवेश-द्वार अथवा गोपुरम् है। मीनाक्षी पांड्य नरेश की पुत्री थी जिसके वंश-चिह्न मत्स्य से उसने अपना यह नाम धारण किया। इसका अर्थ है 'मछली की आँख'। मंदिर-भवनों पर भव्य रूप से स्थापित संपूर्ण 3 करोड़ 30 लाख हिंदू देवी-देवताओं का यह देवालय है। सन् 1560 तथा 1680 के बीच निर्मित मीनाक्षी मंदिर 250 मीटर लंबा तथा 240 मीटर चौड़ा है तथा आश्चर्यजनक मूर्तियों से सुसज्जित इसमें नौ प्रवेशद्वार तथा दो पूजा-कक्ष हैं। प्रति 60 वर्ष पश्चात् इस पर रंग-रोगान किया जाता है (देखिए पृष्ठ 28)।

विश्व
कला
निधियाँ

यूनेस्को

विश्व-दर्शन की पत्रिका

कूरियर

जुलाई 1968 : (वर्ष : दो, अंक : एक) – July 1968 (2nd Year)

ग्यारह संस्करण

अंग्रेज़ी अरबी
फ्रेंच अमरीकी
स्पेनी जापानी
रूसी इतालवी
जर्मन हिंदी तमिल

संयुक्त राष्ट्र संघ शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संस्था—
यूनेस्को द्वारा प्रतिमास प्रकाशित।

बिक्री तथा वितरण केन्द्र :—

केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
वेस्ट ब्लॉक नं. 7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-22

वार्षिक चंदा : रुपए 10.50 पैसे, शैक्षिक संस्थाओं के लिए : रुपए 9.50 पैसे, एक प्रति : एक रुपया

यूनेस्को कूरियर अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मन, अरबी, अमरीकी, जापानी, इतालवी, हिंदी और तमिल भाषाओं में प्रति मास प्रकाशित होता है। अगस्त और सितंबर के अंक एक साथ निकलते हैं। इस प्रकार वर्ष में 11 अंक प्रकाशित होते हैं।

संपादकीय कार्यालय
यूनेस्को—प्लेस दि फ़ान्टैनी, पेरिस-7 (फ़्रांस)

विशेष सूचना

यूनेस्को कूरियर (जून–1968) का अंग्रेज़ी अंक, मई तथा जून मासों में फ़्रांस में मुद्रण एवं डाक विभाग के कर्मचारियों की सर्वव्यापी हड़ताल के कारण पर्याप्त विलंब से प्रकाशित हुआ। पेरिस में मुद्रकों पर इस हड़ताल का गंभीर प्रभाव पड़ा जिस कारण उन्हें इस सारी अवधि के दौरान काम बंद रखना पड़ा। फ़्रांस से बाहर छपने वाले अन्य भाषाओं के संस्करणों को पेरिस से सामग्री उपलब्ध न हो सकी और उनमें भी विलंब हुआ। इसके लिए हम अपने पाठकों से क्षमाप्रार्थी हैं।

यूनेस्को कूरियर अपने सामान्य प्रकाशन-क्रम को पुनः स्थापित कर पाए, इस दृष्टि से आगामी अंक को **अगस्त-सितंबर** अंक के रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है। "परमाणु-शक्ति के शांतिमय उपयोगों" को समर्पित इस अंक में अतिरिक्त पृष्ठों की संख्या 16 होगी।

हमारा नियमित वार्षिक संयुक्त-अंक **अक्तूबर-नवंबर** यथासमय प्रकाशित होगा और यह 'मीजी सांस्कृतिक क्रांति' तथा 'जापान का आधुनिकीकरण' के विषय में होगा। इसकी पृष्ठ-संख्या 68 होगी तथा आठ पूर्ण रंगीन पृष्ठ होंगे।

पृष्ठ



फ़ोटो © रैको–श्री. बायलॉन

आवरण चित्र

पश्चिमी संसार का संभवतः प्रसिद्धतम स्मारक 'पार्थिनॉन' ख़तरे में है। पृष्ठ 16 पर एक्रोपोलिस के निदेशक, जॉर्जिस दोंतास, पार्थिनॉन की दुर्दशा तथा यूनानी पुरातत्वशास्त्रियों द्वारा इसकी रक्षा हेतु परिकल्पित अपरिहार्य उपायों का वर्णन करते हैं।

हमारी प्राचीन पाषाण-कला का

एक विश्व-व्यापी चुनौती



फ़ोटो © पेरिस मैच–टोनी सांलनियर

ये भव्य पाषाण-मूर्तियाँ (ऊपर, मध्य प्रशांत महासागर में ईस्टर द्वीप पर; दाएँ, तुला, मैक्सिको में) शताब्दियों तक अज्ञात अथवा अमूल्यांकित दो पुरातन सभ्यताओं के प्रभावशाली स्मारक हैं जो अब दोनों देशों के समृद्ध सांस्कृतिक दाय के रूप में संगृहीत हैं। चिली की सरकार, यूनेस्को के सहयोग से, ईस्टर द्वीप में पुरातत्त्व-संबंधी अनुसंधान, स्मारक-पुनरुद्धार तथा पर्यटन-विकास के लिए एक विशाल कार्यक्रम का श्रीगणेश कर रही है (पृष्ठ 8 पर चित्र देखिए)। द्वीप में लगभग 150 प्राचीन पाषाण-मंच हैं जिन पर एक से 15 तक मूर्तियाँ हैं। यहाँ प्रदर्शित सातों मूर्तियाँ, जिनमें से प्रत्येक 4 मीटर से अधिक ऊँची तथा 15 टन भार की, 1960 तक आधी-आधी भूमि में दबी पड़ी थीं। पुरातत्त्वशास्त्री विधिवत् रूप से अन्य अवशेषों के लिए द्वीप की खुदाई करेंगे जिससे कि इसके प्रारंभिक इतिहास पर प्रकाश पड़ेगा। टॉल्टेक्स, मध्य मेक्सिको, की प्राचीन राजधानी तुला में प्राप्त नवीं शताब्दी की बसाल्ट पत्थर की मूर्तियाँ (दाएँ) किसी समय शुक्रग्रह के देव-मंदिर की छत का स्तंभ थीं। टॉल्टेक्सीय अवशेषों के अनुसंधान का कार्य केवल 30 वर्ष पूर्व आरंभ हुआ।

ले. हिरोशी दाइफ़ूकू

पार्थिनॉन, ताजमहल, अंगकोरवाट, बोरोबुदुर (मध्य जावा), माया-सभ्यता का तिकाल स्थल, ऐंडीज में माचू पिच्चू और पर्सिपोलिस, ये और इन जैसे अनेक बड़े-बड़े भवन और स्मारक हमें शताब्दियों की कथा सुनाते हैं। अपनी संस्कृति की धारणाओं और आकांक्षाओं को पत्थरों के माध्यम से व्यक्त करने में इनके निर्माणकर्त्ता सफल हुए। इनका अभी तक विद्यमान रहना, (जो कई जगहों पर हज़ारों की तादाद में दोहराए गए हैं) केवल संयोग है। लेकिन, आज इन सभी स्थलों और स्मारकों के अस्तित्व को ख़तरा उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

भूतकाल में भी कई कारणों से इन महत्त्वपूर्ण स्थलों तथा स्मारकों को सुरक्षित रखने के प्रयत्न किए गए। इनके अस्तित्व से, बाद में आनेवाली संस्कृतियों को प्रेरणा और योगदान मिलता रहा है।

उदाहरण के तौर पर चौदहवीं शताब्दी में इटली के पुनर्जागरण ने ग्रीस तथा रोम की आभिजात्य कला से प्रेरणा प्राप्त की। इस प्रेरणा से जिस मानववाद का जन्म हुआ, उसने वह वातावरण उत्पन्न किया जिससे खोज की यात्राएँ तथा विज्ञान के प्रति रुचि पैदा हुई, और इस प्रकार विश्व का इतिहास बदल गया। इसके बाद की पूर्वकालीन खोजों, जैसे पांपेइ तथा हरक्युलेनियम, प्राचीन मिस्र, मायसिनिया, बेबीलोन और निनीवेह, और यूकाटान, कंबोडिया आदि के उष्णकटिबंधीय वनों और अन्य स्थलों पर खोए हुए शहरों की खोज से कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली।

हिरोशी दाइफ़ूकू, 1954 से यूनेस्को सचिवालय सदस्य, सांस्कृतिक दाय के विकास-विभाग के अध्यक्ष हैं। पहले वे विस्कांसिन विश्वविद्यालय (यू. एस. ए.) के समाजशास्त्र तथा मानव-विज्ञान विभाग में अध्यापन-कार्य करते रहे तथा विस्कांसिन के राजकीय इतिहास संस्थान संग्रहालय की मानवविज्ञानीय प्रदर्शनियों के संग्रहाध्यक्ष थे। वे मानवविज्ञान, संरक्षण-विज्ञान तथा संग्रहालय-शास्त्र पर कई अध्ययन-रचनाओं के प्रणेता हैं। उनका अद्यतन लेख, "सांस्कृतिक संपत्ति का महत्त्व" यूनेस्को द्वारा हाल ही में प्रकाशित लेख-संकलन, "सांस्कृतिक संपत्ति का संरक्षण" में प्रकाशित हुआ है।

परिरक्षण



फ़ोटो यूनेस्को—अल्बर्ट रक्काह

प्रारंभिक पुरातत्त्वविज्ञ कुछ कुतूहल द्वारा प्रेरित थे और कुछ बहुमूल्य वस्तुओं के खोजी थे, अधिक-से-अधिक वस्तुएँ संग्रह करने वाले सफल माने जाते थे और ये वस्तुएँ संग्रहकर्त्ताओं को बेची जाती थीं अथवा अजायबघरों के लिए एकत्रित की जाती थीं।

इनमें से कई वस्तुएँ खंडित अवस्था में थीं, और बाज़ार में उनकी कीमत कम पड़ती थी। इनकी मरम्मत करनेवाले, जो कारीगर भी थे, और जालसाज भी, अपना व्यापार चलाते। विभिन्न मूर्तियों के विभिन्न भागों को एकत्रित करके, दरारों को अत्यंत चतुरता से छिपा देते थे। मिट्टी की वस्तुएँ आरे से काटी जाती थीं और फिर अलग-अलग भाग जोड़ दिए जाते थे। इसी तरह नकली मूर्तियाँ भी बनाई जाती थीं, जो धोखे से बेच दी जाती थीं। कुछ जालसाज़ इतने चतुर थे, कि इनसे निपुण व्यक्ति भी धोखा खा जाते थे।

शताब्दियों से दबी हुई वस्तुएँ, यदि पाई भी जातीं, तो वे भी हवा लगने से खंड-खंड हो जातीं और इनको बहाल करनेवाला अपनी चतुरता से इन्हें बचा लेता।

स्थलों और भवनों के संरक्षण के कार्य में भी रुचि पैदा हुई। फ्रांस में वियोले-ल-ड्यूक (1814-1879) ने राष्ट्रीय स्मारकों, विशेषकर मध्य-कालीन भवनों, की रक्षा का कार्यक्रम बनाया। उन्होंने ही नोत्रे दाम, गिरजाघर और अन्य गोथिक भवनों की मरम्मत की, और कार्कासोन जैसे ऐतिहासिक भवनों के समूहों तथा नगरों का पुनर्निर्माण किया।

इस प्रारंभिक काल में वास्तुशिल्पी अधिकतर खोए हुए भाग पूर्वस्थान पर पुनः स्थापित करते थे। कुछ ऐसे हिस्सों को भी, जो कभी ऐतिहासिक भवनों में नहीं पाए जाते थे, बना दिया करते थे। ऐसे पुनर्निर्माण का नतीजा पुराने भवन से बेहतर न होकर एक नया भवन होता। आंशिक रूप से स्वच्छंदतावाद पर आधारित एक विरोधी आंदोलन विकसित हुआ, जिसका उद्देश्य यह था कि कला की वस्तुओं और स्मारक-भवनों के रूप को अगर बढ़ाया नहीं जा सकता, तो कम से कम उसे अक्षुण्ण तो रखा ही जाए। इस प्रकार के धोखों के विरुद्ध एक बार फिर आवाज़ उठी और बीसवीं सदी के प्रारंभ में पुरातत्ववेत्ताओं ने पुरानों को नया बनाने अथवा नयों को पुरानों के रूप में प्रस्तुत करने के स्थान पर नये तथा पुराने को अलग किया तथा अलग करने के बाद, उन्हें इस प्रकार जोड़ा गया कि देखने में लगता था कि इन की फिर से मरम्मत की गई है।

आजकल इन दो विरोधी पक्षों के बीच का रास्ता अपनाया जाता है। पुराने तथा मरम्मत किए हुए भाग एक ही प्रकार के प्रतीत होते हैं, परंतु, यदि अच्छी तरह ग़ौर किया जाए तो मरम्मत किए हुए भाग स्पष्ट दीख पड़ते हैं। मरम्मत के रिकॉर्ड रखना भी अब नियम हो गया है, और इसके साथ चित्र भी रखे जाते हैं, ताकि विद्वानों और विशेषज्ञों के प्रयोग में आ सकें।

प्रस्तुत करने का ढंग, पुनर्निर्माण का केवल एक अंश है, शेष अन्य पदार्थों की तरह स्थलों और भवनों का भी परिवर्तन और ह्रास होता है। पुरातत्त्व-खुदाई के द्वारा जो वस्तुएँ प्राप्त होती हैं, वे शताब्दियों से सुरक्षित वातावरण में रही हैं। बाहर हवा में आने पर अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने से वस्तु अथवा स्मारक में, तापमान में परिवर्तन, नमी और शीतोष्ण कटिबंध में पाला पड़ने के कारण परिवर्तन आ जाते हैं।

अगले पृष्ठ पर जारी

इतिहास-पथ प्रशस्तक बुलडोज़र

परिणाम यह होता है कि पत्थर और ईंट की पपड़ियाँ उतर जाती हैं। काष्ठ तथा अन्य जैव पदार्थ इनसे अधिक भुरभुरे होते हैं और जो वस्तु अनभिज्ञ व्यक्ति को पहले-पहल दिखाई देने पर ठोस लगती है प्राप्त होने पर शीघ्र ही सिकुड़ने, ऐंठने या टुकड़े-टुकड़े होने लगती है।

प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा पत्थर का मिट्टी में परिवर्तन होने से, जैसे कि बैक्टीरिया और फफूँदी के प्रभाव से होता है, तथा पौधों की जड़ों के फैलने से भी स्थल और स्मारक नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ जलवायु का भी प्रभाव पड़ता है। ऑक्सीजन और प्राकृतिक गैस जैसे कार्बन डाय-क्साईड, (जो वर्षा के पानी से मिलकर कार्बोनिक अम्ल बनाती है) सब मिलकर अपक्षय की प्रक्रिया के कारण बनते हैं।

उद्योगीकरण से और भी कठिनाइयाँ आ गई हैं। फ़ॉसिल ईंधन (पेट्रोल) के जलने से बहुत से ऐसे यौगिक उत्पन्न होते हैं जो न केवल मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए, वरन् पत्थर, लकड़ी तथा शीशे जैसी भवन-निर्माण सामग्री के लिए भी हानिकारक हैं।

तनूकृत (पतले) होने पर भी नाइट्रस और नाइट्रिक अम्ल तथा सल्फ़्यूरस और सल्फ़्यूरिक अम्ल उस सामग्री पर प्रतिक्रिया करते हैं जो भवन-निर्माण में प्रयुक्त हुई है। भवन-निर्माण में प्रयुक्त चूना, और संगमरमर, बलुआ पत्थर और अन्य नर्म पत्थर, लकड़ी तथा अन्य जैव पदार्थ भी जलवायु के संदूषण का पता देते हैं। सख़्त से सख़्त पदार्थों पर भी समय का आक्रमण अचूक है।

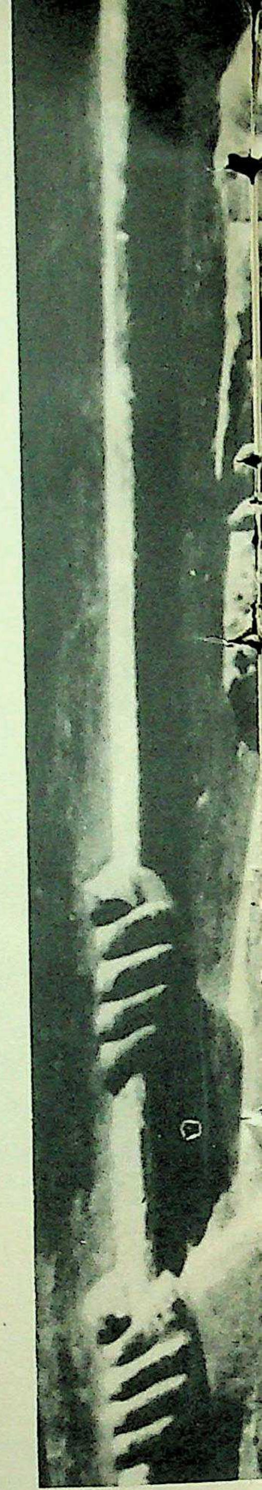
भवनों के लिए हानिकारक है क्योंकि ये भवन इन आघातों को सहन करने के लिए नहीं बने हैं।

दूसरे विश्व-युद्ध के अंत से उद्योगीकरण में तथा जनसंख्या में बहुत वृद्धि हुई है। बहुत ही बड़े पैमाने पर परिवर्तन होने लगे हैं जिनसे हमारी सभ्यता को ऐसी हानि पहुँच रही है जो पहले कभी नहीं पहुँची थी। इसी ख़तरे के कारण "यूनेस्को" के सांस्कृतिक संपत्ति की सुरक्षा के कार्यक्रम पर भी इसका असर पड़ा है। अब कई वर्षों के बाद एक स्पष्ट कार्यक्रम विकसित हुआ है।

इस क्षेत्र में 'यूनेस्को' की प्रथम अंतर्राष्ट्रीय प्रायोजना "सशस्त्र संघर्ष के समय सांस्कृतिक संपत्ति की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगमन" थी, जिसे 1954 में हेग में स्वीकार किया गया और जिसका अब 57 सदस्य-राष्ट्रों ने समर्थन किया है।

अन्य अंतर्राष्ट्रीय साधनों में मुख्य सदस्य-राष्ट्रों के महासम्मेलन की सिफ़ारिशें निम्नांकित हैं: पुरातात्त्विक उत्खनन को लागू होने वाले अंतर्राष्ट्रीय नियम जिन्हें 1956 में पारित किया गया; प्राकृतिक भू-दृश्यों व स्थलों की सुंदरता को बचाना जो 1962 में माना गया। "सांस्कृतिक संपत्ति को निजी तथा सरकारी निर्माण से सुरक्षित रखने" का प्रस्ताव, इस वर्ष नवंबर के महीने में होनेवाले महासम्मेलन में प्रस्तुत किया जाएगा।

प्राचीन "इंका" और पेरू में कुज़को को, जो स्पेन के उपनिवेश की राजधानी है, भूकंप से 1950 में पर्याप्त क्षति पहुँची। इनकी मरम्मत के लिए विशेषज्ञों का एक दल भेजा गया। यह एक सदस्य-राष्ट्र की सहायता के लिए यूनेस्को की प्रथम प्रायोजना थी। इसके बाद विशेषज्ञों को भेजना, शिक्षावृत्तियाँ तथा सामग्री उपलब्ध करने की योजना यूनेस्को का नियमित कार्यक्रम बन गया।



ढाई हज़ार वर्ष पूर्व अशमनी शासकों के ईरानी साम्राज्य की राजधानी पर्सिपोलिस की प्रसिद्ध प्रस्तर-वल्लरियों में से एक का यह प्रभावशाली चित्र है जिसमें प्रासाद-प्रहरी पंक्तिबद्ध होकर बढ़ रहे हैं। समय बीतने के साथ-साथ प्रत्येक उत्तरवर्ती शासक ने इन भव्य प्रासादों तथा निकटस्थित शाही मक़बरों में नये भवनों द्वारा कुछ न कुछ वृद्धि की (देखिए "यूनेस्को कूरियर", दिसंबर 1966)। आधुनिक ईरान को पर्सिपोलिस में अपनी राष्ट्रीय दाय की निरंतरता परिलक्षित होती है तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संपदा की रक्षाहेतु यूनेस्को के सहयोग से कार्यान्वित हो रहे ईरान के कार्यक्रम में इसके स्मारकों के संरक्षण (तथा किन्हीं मामलों में उनके पुनरुद्धार) को प्राथमिकता प्राप्त है। इस कार्यक्रम के अधीन पर्सिपोलिस ही में खुदाई और संरक्षण का काम रोम के प्रोफ़ेसर जिसेप तक्की के नेतृत्व में एक इतालवी दल कर रहा है।

फ़ोटो © हेनरी स्टियरलिन, जेनेवा

सामाजिक तथा आर्थिक शक्तियाँ भी इस स्थिति पर प्रभाव डालती हैं। नाश का एक स्पष्ट कारण युद्ध है। हमारी भौतिक उन्नति के सभी अंश हमारी सांस्कृतिक दाय के लिए इससे भी अधिक विश्वासघातक और भयानक हैं।

बुलडोज़रों की दहाड़, और भवन तोड़नेवालों के हथौड़ों की धमक ऐतिहासिक तथा कलात्मक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण भवनों के विलीन होने के प्रतीक हैं। प्राचीन स्थलों के स्थान पर शांत जलराशि, एक चौड़ी सड़क अथवा शीशे की खिड़कियों से सुसज्जित कई मंज़िलों वाली इमारत, अथवा अनेक फ़्लैटों वाले रहने के आवास बन रहे हैं।

आधुनिक इमारतों के समूह के बीच भी राज्य द्वारा सुरक्षित भवनों तथा स्थलों के जीवित रहने की संभावना है, किंतु अपनी शान और महत्ता के बिना।

ऐसे चौक, जो सरकारी कार्यालयों की महत्ता दिखाने के लिए अथवा प्रसिद्ध घरानों और व्यापार-गृहों की शान बढ़ाने के लिए बनाए गए थे, आजकल मोटरकारों से भरे हैं और गाड़ियों के विश्रामस्थल बन गए हैं। लॉरियों की घरघराहट, ट्रामों अथवा बड़ी-बड़ी बसों से उत्पन्न कंपन भी इन प्राचीन

पर्सिपोलिस के पत्थरों की जाँच और मरम्मत की सिफ़ारिश के लिए, मेक्सिको में बोनामपक के भित्ति-चित्रों के संरक्षण के लिए, पाकिस्तान में मोहनजोदाड़ो के अपक्षारीकरण के प्रश्नों की जाँच के लिए, मोरक्को में पाए गए मोज़ाईक पत्थरों के संरक्षण के लिए, लीबिया की मूर्तियों के पुनर्नवीकरण के लिए, अफ़ग़ानिस्तान में स्मारक-भवनों को फिर से ठीक करने के लिए, बोरोबुदुर भवन के पत्थरों के नष्ट होने के कारण जाँचने के लिए (पृष्ठ 23 देखिए), यूगोस्लाविया के भित्ति-चित्रों को ठीक करने के लिए, कज़ानलुक (बुल्गारिया) में थ्रासी क़ब्र की दीवारों पर बने हुए चित्रों को सुरक्षित रखने के लिए (पृष्ठ 35 देखिए), विशेषज्ञ-मंडलियाँ भेजी गईं।

जनवरी 1965 से आज तक यूनेस्को की संरक्षण और पुनःस्थापन मंडलियाँ 33 देशों को भेजी गईं। (पृष्ठ 8–9 पर विश्व-मानचित्र देखिए)।

इन मंडलियों ने सिद्ध किया है कि आजकल संरक्षण और पुनःस्थापन का कार्य 10वीं और बीसवीं शताब्दी से बहुत भिन्न है। अब ऐसी बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ स्थापित हुई हैं, जहाँ

भवन बनाने की सामग्री, प्रयुक्त रंग इत्यादि के नष्ट होने के कारणों का विश्लेषण होता है, और फफूँदी आदि का इलाज होता है। सांस्कृतिक संपत्ति को एकत्र करके उसकी मरम्मत करने के लिए अब संश्लिष्ट पदार्थ बना लिए गए हैं।

यह कार्य इतना बड़ा है कि रोम में स्थित अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का सबसे बड़ा काम सुरक्षित तथा मरम्मत की हुई संपत्ति की सूची बनाना है। रोम का यह केंद्र यूनेस्को द्वारा स्थापित और इटली की सरकार एवं 34 सदस्य-राष्ट्रों की अनुमति से बनाया गया है। विशेषज्ञ भी इतनी सूचनाओं और वस्तुओं की बढ़ती हुई बाढ़ के साथ अपना तादात्म्य नहीं रख सकते।

इन विशेषज्ञ मंडलियों द्वारा की गई छान-बीन के नतीजों ने यह स्पष्ट किया कि निपुण व्यक्तियों की अत्यंत कमी है, और इन्हें प्रशिक्षण की बेहतर सुविधाएँ आवश्यक हैं। इस आवश्यकता को पूरा



करने के लिए अब नये प्रायोजन बनाए जा रहे हैं (1)।

विशेषज्ञों की रिपोर्टें 'फ़र्स्ट एड' कार्य आरंभ करने का आधार बनीं। कहीं-कहीं राष्ट्रीय सेवा दल बनाए गए जिनके सदस्यों को यूनेस्को मिशन से सहायता तथा ट्रेनिंग मिल चुकी थी। फिर भी इन सबका परिणाम आंशिक रहा, क्योंकि जब भी किसी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम की विवेचना की गई, इसका ख़र्च करोड़ों डॉलरों में पहुँच जाता, और ऐसा ख़र्च बहुत से देशों के बूते के बाहर की बात थी। उनकी और भी आवश्यक समस्याएँ थीं, जैसे उत्पादन बढ़ाना, शिक्षा संबंधी सुविधाएँ उपलब्ध करना तथा उद्योगीकरण आदि, जिनसे जनता की भौतिक उन्नति हो सकती है।

इसके साथ-साथ महत्त्वपूर्ण लोकनिर्माण कार्य, जैसे सिंचाई और बिजली के लिए बाँधों का निर्माण, पुरानी इमारतों को हटाकर नई इमारतों के लिए स्थान बनाना तथा पुराने ऐतिहासिक पुलों की जगह ज़्यादा चौड़े पुल बनाना आदि, भी तेज़ी से चल रहा है।

संयुक्त अरब गणराज्य का आसवान के पास "हाई डैम" बनाने का निश्चय भी सैकड़ों ऐसे ही फ़ैसलों में से एक था। मगर नील के नूबियन क्षेत्र में बहुत से ऐसे दृश्य और भवन हैं, जिनमें चट्टानों से तराशा हुआ मंदिर भी है, जो रेमिसिज द्वितीय ने अबू सिंबल में बनाया था।

संयुक्त अरब गणराज्य ने 1959 में यूनेस्को से एक विस्तृत कार्यक्रम में सहायता के लिए प्रार्थना की। यह प्रार्थना पुरातत्त्व संबंधी प्राचीन अवशेषों की रक्षा करने और कई भवनों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए तथा अबू सिंबल के मंदिरों की रक्षा के लिए थी।

इस प्रार्थना को यूनेस्को ने स्वीकार किया और 1960 में विश्व के देशों से जो अपील की गई, उसके फलस्वरूप 24 देशों ने पुरातत्त्वज्ञों के दल भेजे जिन्होंने पानी में डूब जाने वाले क्षेत्रों की खुदाई की। 20 मंदिरों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया गया। अबू सिंबल के काटने तथा पुनः एकत्रित करने के लिए काफ़ी रुपया भी इकट्ठा हुआ। यूनेस्को अब हाई डैम और आसवान डैम के बीच स्थित फ़िला के मंदिरों को बचाने की योजना बना रही है।

पृष्ठ 11 पर जारी

---

(1) रोम केंद्र ने, रोम विश्वविद्यालय के सहयोग से, स्थापत्य प्रत्यास्थापक प्रशिक्षित करने के लिए एक पाठ्यक्रम चलाया है। 1969–70 में एक प्रशिक्षण-प्रयोगशाला की स्थापना की योजना बनाई जा रही है। दो ग़ैर-सरकारी संस्थाओं ने, यूनेस्को के सहयोग से, स्थलों तथा स्मारकों के वर्धन एवं विशेषज्ञों की भर्ती के कार्यक्रम को चलाया है। ये संस्थाएँ हैं 'अंतर्राष्ट्रीय स्मारक तथा स्मारक-स्थल परिषद्' और 'अंतर्राष्ट्रीय राजकीय पर्यटक संस्था संघ'।

यहां हम विभिन्न देशों की सरकारों की प्रार्थना पर संसार का एक मानचित्र प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें स्थलों तथा स्मारकों के संरक्षण एवं पुनरुद्धार में 1965 से क्रियाशील यूनेस्को दलों का ब्यौरा है। जनवरी, 1965 के अंक में दिए गए एक मानचित्र में निम्नलिखित देशों में 1965 से पहले काम कर रहे यूनेस्को दलों का विवरण था: अफ़ग़ानिस्तान, अल्जीरिया, बर्मा, कैमरून, चेकोस्लोवाकिया, इंडोनेशिया, ईराक़, ईरान, जार्डन, कोरिया गणतंत्र, लेबनान, मेक्सिको, मोरॉक्को, पाकिस्तान, पेरू, स्पेन, सूडान, सीरिया, संयुक्त अरब गणराज्य।

यूनेस्को कंज़रवेशन मिशंस का विश्व-मानचित्र

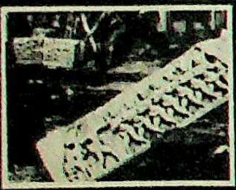


1 इंडोनेशिया

1400 बसाल्ट उच्चित्रों का बोरोबुदुर मंदिर सख़्त ख़तरे में। अनिवार्य पुनरुद्धार कार्यक्रम की आवश्यकता है (लेख पृष्ठ 23 पर देखें)। प्रांबनन, सेवु एवं प्लेक्सन में स्थलों के पुनरुद्धार एवं विकास द्वारा मध्य जावा में प्रथम पर्यटक केंद्रों की स्थापना की योजना है। यूनेस्को-मिशन 1968.

2 कंबोडिया

अंगकोर के भव्य मंदिरों के पुनरुद्धार का काम हो रहा है। ये 5 शताब्दियों से झाड़-झंखाड़, उष्ण कटिबंधीय वर्षा तथा अपक्षारण से नष्ट हो रहे थे (यूनेस्को-कूरियर जून, 1956, जनवरी 1965 देखें)। अंगकोर वाट के निकट स्थलों के सौंदर्य एवं विकास की रक्षा। यूनेस्को-मिशन 1967–1968.



3 थाईलैंड

अनुपम कला-कृतियों से समृद्ध थाईलैंड अपनी कला-कृतियों (इमारतें, मूर्तियां, सिरेमिक्स, भित्ति-चित्र) के निरंतर क्षय से चिंतित है। बैंकाक, अयुथ्या (देखें–यूनेस्को कूरियर, अक्तूबर 1966) थोनबरी, सुखोताई, लैपैंग आदि के असंख्य मंदिरों और आर्द्रता से भ्रष्ट अनेक भित्तिचित्रों के संरक्षणहेतु अत्यधिक प्रभावकारी तकनीकों का अध्ययन किया गया है। चित्र : पिमाई मंदिर के बसाल्ट-उच्चित्र का पुनरुद्धार। यूनेस्को मिशन 1967।

फ़ोटो यूनेस्को–एच. डाइफ़ूकू

4 भारत

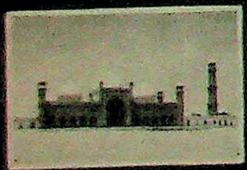
दक्षिण भारत के प्रसिद्ध स्मारकों एवं मंदिरों, विशेषकर मद्रास के निकट श्रीरंगम् का मंदिर, के नवीकरण एवं संरक्षण का कार्यक्रम (पृष्ठ 28)। यूनेस्को मिशन 1966.



5 नेपाल

काठमांडू और पाटन, भक्तपुर तथा कीर्तिपुर में स्थापत्य कला से समृद्ध स्मारकों के संरक्षण; 17वीं शताब्दी के भव्य मल्ल प्रासादों को संग्रहालयों में परिवर्तित करने का कार्यक्रम। हिमालय के मध्य मस्टंग क्षेत्र में बौद्ध स्मारकों के संरक्षण की अत्यधिक आवश्यकता है परंतु वहां पहुंचना कठिन है। भारत-नेपाल सीमा पर लुंबिनी, बुद्ध साक्य मुनि का जन्मस्थान (चित्र) में खुदाई, संरक्षण एवं स्मारक-पुनरुद्धार का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम भारतवर्ष के साथ मिलकर नियोजित किया गया। यूनेस्को मिशन 1963, 1964, 1968.

फ़ोटो © रैफ़ो–लुई फ़्रेडरिक



6 पाकिस्तान

कराची, लाहौर और ढाका में (चित्र : बादशाही मस्जिद, लाहौर) पर्यटन-विकास के साथ-साथ स्मारक-पुनरुद्धार का कार्यक्रम। मोहनजोदाड़ो के अवशेषों को लवण-अपक्षारण से बचाने के लिए प्रयोग हो रहे हैं। संसार की प्राचीनतम सभ्यता के इस स्मारक के संरक्षण एवं प्रदर्शन की योजना बनाने के लिए पुरातत्त्व-शास्त्रियों का एक अंतर्राष्ट्रीय आयोग सितंबर, 68 में इस स्थल पर जाएगा (देखिए "यूनेस्को कूरियर" जून 1965)। चार यूनेस्को मिशन 1966, 1967.

फ़ोटो यूनेस्को–एम. हक़

7 ईरान

पर्यटन-विकास के लिए विस्तृत कार्यक्रम (देखें–"यूनेस्को कूरियर" दिसंबर 1966)। राष्ट्रीय बजट में 8 करोड़ डॉलर मुख्य मार्गों, होटलों आदि के लिए रखे गए हैं जिसमें से 40 लाख डॉलर निम्नलिखित चार प्रमुख क्षेत्रों में स्थलों और स्मारकों के संरक्षण एवं प्रदर्शन के लिए हैं : (1) तेहरान और अरारात पर्वत के बीच (विशेष स्थल, मध्ययुगीन जर्मनी चर्च, मंगोल स्मारक, क्वाज़वीन की प्राचीन राजधानी, तब्रीज़ तथा यहाँ की प्रसिद्ध नीली मस्जिद); (2) तेहरान व उसके आसपास का क्षेत्र (संग्रहालय, प्रासाद, मंगोल चैत्य, सासानी अग्निमंदिर) (3) इस्फ़ाहान, नगर-स्मारक जो इस्लामी सभ्यता का रत्न है; (4) शिराज़ क्षेत्र, प्राचीन ईरान की जन्मभूमि, पर्सिपोलिस (देखें पृष्ठ 7 पर फ़ोटो), पसारगेड्स तथा बीशापुर आदि। दो यूनेस्को मिशन 1966.

8 ईराक़

बग़दाद में कला-संरक्षण प्रयोगशाला खोली गई; प्राचीन स्थलों का भूमि सर्वेक्षण; स्मारकों के संरक्षण की योजना। यूनेस्को मिशन 1966–1968.



9 सीरिया



34 प्राचीन स्थलों (रौज़े, दुर्ग, मीनार) के संरक्षण तथा अनुसंधान का कार्यक्रम, जो ऊपरी यूफ़्रेट्स के उस क्षेत्र में है जहाँ तबक़ा के निकट बाँध का पानी भर जाने की संभावना है। फ़ोटोग्रेमेट्रिक और टोपोग्रेफ़िकल रिकॉर्ड बनाए गए हैं; आप्लावित होने वाले क्षेत्रों से स्मारकों के हटाने की योजना। राष्ट्रीय संग्रहालय, दमिश्क में संरक्षण प्रयोगशाला की स्थापना। प्राचीन नगर बसरा का पुनरुद्धार : भव्य रोमन स्मारक (चित्र), दुर्ग, बारहवीं शताब्दी की मस्जिद। पाँच यूनेस्को मिशन 1967–68.

फ़ोटो यूनेस्को–डी. रॉजर

10 तुर्की



कला-संपदा और ऐतिहासिक स्मारकों का पर्यटन विकास के साथ संरक्षण एवं पुनरुद्धार का विशेष कार्यक्रम (देखें "यूनेस्को कूरियर"--दिसंबर 1966)। केपेडोसिया, (चित्र : चट्टान से तराशे गिरजे में बीज़टोइन प्रस्तर--वल्लरियों का विवरण) पेंफीलिया, इज़्मीर और अंतालिया के तटीय प्रदेशों को प्रमुखता प्रदान की गई। यूनेस्को मिशन 1965, 1966.

फ़ोटो © टोनी सॉलनियर

11 दहोमी

अबोमी (देखें "यूनेस्को कूरियर" जनवरी 1965) में राज-प्रासादों का संरक्षण एवं पुनरुद्धार कार्यक्रम। यूनेस्को मिशन 1965, 1968.

12 कैमरून

फ़ौंबन प्रासाद, तथा सरदारों के घरों और इसी प्रासाद में सूचीगत कलाकृतियों के पुनरुद्धार का कार्यक्रम। यूनेस्को मिशन 1968.

13 इथियोपिया



यूनेस्को की सहायता से इथियोपियाई पुरावशेष विभाग द्वारा ऐतिहासिक स्मारकों तथा स्थलों के संरक्षण एवं प्रदर्शन का राष्ट्रीय कार्यक्रम। प्राचीन हस्तलिपियों की माइक्रोफ़िल्म लाइब्रेरी की स्थापना; सांस्कृतिक संपत्ति के निर्यात के विनियमन के लिए नया विधेयक। फ़ोटो : लालीबेला में काप्टी भित्ति-चित्र का विवरण। यूनेस्को मिशन 1967–1968.

फ़ोटो © एंजेलिनी

14 संयुक्त अरब गणराज्य

मिस्र और सूडान में नूबियन स्मारकों का उद्धार, यूनेस्को के अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन को धन्यवाद। अबू सिंबल के मंदिरों का नये स्थलों पर स्थानांतरण का कार्य संपन्न ("यूनेस्को कूरियर" फ़रवरी, मई 60; अक्तूबर, दिसंबर 61; अक्तूबर, नवंबर 62; दिसंबर 64; नवंबर 65; फ़रवरी 67)। अंतिम विशाल कार्य : फिलाई। अबू सिंबल की तरह फिलाई के मंदिरों को भी तोड़कर, नील की पहुँच से दूर, पास के द्वीप में इनकी पुनःरचना। प्रसिद्ध पिरामिड के दक्षिण में चियोप्स के पलस्तर की रक्षा की योजना।

15 सूडान

जमई और तृतीय महाजल प्रपात के मध्य नीलघाटी में स्थलों का पुरातात्त्विक अन्वेषण जहाँ आसवान हाई बाँध द्वारा दक्षिणी भाग में पानी भर जाएगा ("यूनेस्को कूरियर" दिसंबर 1964)। यूनेस्को मिशन 1968.

16 लीबिया

पुरातत्त्व संबंधी अनुसंधान का कार्यक्रम, जिसमें सुल्तान और ज़्विलाह तथा फैज़ान क्षेत्र में इस्लामी स्थलों की खुदाई भी शामिल है; संरक्षण विभाग की स्थापना; उत्खनन के परिवीक्षण हेतु पुरातत्त्वशास्त्रियों का दल प्रशिक्षित किया गया। यूनेस्को मिशन 1964–65.

17 ट्यूनीशिया



दो मुख्य पुनरुद्धार कार्यक्रम स्वीकार किए गए; ट्यूनिश-कारथेज क्षेत्र में 'स्थल तथा स्मारक; बुल्ला रीगिया में विस्तृत रोमन अवशेष, सांस्कृतिक पर्यटन को दृष्टि में रखते हुए स्मारकों का राष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन तथा उनका पुनरुद्धार। फ़ोटो : ट्यूनीशिया की बड़ी मस्जिद (सत्रहवीं शताब्दी)। तीन यूनेस्को मिशन, 1967–1968.

फ़ोटो–नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ आरकेओलॉजी, ट्यूनिस

18 अल्जीरिया



विशाल स्मारक पुनरुद्धार कार्यक्रम (1963 में प्रारंभ) अब टिपासा में रोमन अवशेषों (चित्र) की खुदाई के द्वारा बढ़ाया गया कस्बाह (अल्जीयर्स), होनेन चहारदीवारी कैप मतीफ़ू की बंदरगाह तथा दक्षिणी अल्जीरिया में चट्टानों पर की चित्रकारी का संरक्षण। सांस्कृतिक संपत्ति के अंतर्राष्ट्रीय विनिमय का कार्यक्रम तैयार हो रहा है; अल्जीरिया में प्रयोगशाला के पुनरुद्धार की योजना। चार यूनेस्को मिशन, 1966, 1967, 1968.

फ़ोटो–यूनेस्को–एच. डि जांग

19 माल्टा



मदीना का विल्हेना महल, गोज़ो का ग्रान कैसिट्लो तथा वैलिटा में फ़ोर्ट सेंट एंजिलो क्षयग्रस्त। इन स्मारकों तथा प्रागैतिहासिक, फोनिशियन और रोमन स्थलों का संरक्षण-कार्यक्रम तैयार है। राष्ट्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय के पुनर्गठन की योजना (फ़ोटो : प्यूनिक पाषाण-ताबूत) तीन यूनेस्को मिशन, 1965 से 1967 तक।

फ़ोटो–नेशनल म्यूज़ियम, वैलेटा

20 साइप्रस



काटो पेफोस (फ़ोटो में विवरण) में 800 वर्ग मीटर की रोमन पच्चीकारी की कलाकृतियों की पुनरुद्धार-योजना। स्मारकों तथा स्थलों की सूची एवं संरक्षण का कार्यक्रम; उनकी वृद्धि के लिए आर्थिक अध्ययन। तीन यूनेस्को मिशन, 1966, 67, 68.

फ़ोटो © जी. लेनिटिस

21 बल्गेरिया

कज़ानलुक के थ्रासी मक़बरे के भित्ति-चित्रों का संरक्षण (देखें पृष्ठ 35 पर)। "फ़ॉर्टी मार्टियर्स" (टर्नोवो) के गिरजों के भित्ति-चित्रों का पुनरुद्धार, स्वेता पोता (सोफ़िया) एवं बोजाना। यूनेस्को मिशन, 1966.

22 ग्रीस

पार्थिनॉन गंभीर रूप से विनाशग्रस्त। ग्रीस ने विश्व प्रसिद्ध मंदिर की रक्षा के लिए यूनेस्को की सहायता माँगी है। अक्तूबर 1968 में एथेंस में यूनेस्को मिशन जाएगा। (लेख पृष्ठ 16 पर देखें)।

23 यूगोस्लाविया

राष्ट्रीय संग्रहालय (बेलग्रेड) एवं जग्रब संग्रहालय के लिए यूनेस्को प्रयोगशाला का सामान; हस्तलिपियों, पुस्तकों एवं प्राचीन कला-कृतियों के संरक्षण एवं पुनरुद्धार के लिए विशेषज्ञ प्रशिक्षित करने के लिए यूनेस्को शिक्षावृत्तियाँ।

अगले पृष्ठ पर जारी

24 इटली

नवंबर 4, 1966 की बाढ़ के पश्चात् फ़्लोरेंस और वेनिस के लिए यूनेस्को ने अंतर्राष्ट्रीय अभियान आरंभ किया (यूनेस्को कूरियर, जनवरी 1967)। दो विशेष "पेंटिंग हॉस्पिटल" फ़्लोरेंस में कई वर्षों तक कार्यरत रहेंगे। प्रयोगशालाओं को यूनेस्को से साज-सामग्री प्राप्त हुई। तसकनी के अभिलेखागार के पुनरुद्धार के लिए सहायता। डूबते वेनिस को बचाने के लिए यूनेस्को का विशाल-स्तरीय कार्यक्रम अनुमोदन की प्रतीक्षा में, यूनेस्को की सहायता से नगर में, कलाकृतियों के संरक्षण की स्थिति में नियमित जाँच की जा रही है।

25 मेक्सिको

मेक्सिको सरकार और यूनेस्को ने मेक्सिको नगर के निकट सांस्कृतिक संपत्ति के संरक्षण के लिए लेटिन-अमेरिकन केंद्र स्थापित किया है। यूनेस्को के छः विशेषज्ञ कोलंबो से पूर्व तथा उसके पश्चात् की कलाकृतियों के पुनरुद्धार के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं। लेटिन अमेरिका के सभी भागों के संग्रहालयाध्यक्षों तथा स्मारक-संरक्षकों के लिए प्रशिक्षण तथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों की व्यवस्था। यूनेस्को मिशन 1966 से 1968 तक (शेष कार्यक्रम 1976 तक)।

26 गुआतेमाला
होंडूरास
एल सैल्वाडोर
मेक्सिको

गुआतेमाला में हिस्पैनी काल के असंख्य स्मारकों के पुनरुद्धार का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम। यूनेस्को मिशन 1966. 'यूनाइटेड नेशन्स डवेलपमेंट प्रोग्राम' इस समय चार राष्ट्रों की पर्यटन-विकास योजना पर अध्ययन कर रहा है, जिससे कि मायन-स्मारकों को जनता देख सके। यदि यह योजना स्वीकार हो जाए तो यूनेस्को को इस क्षेत्र में संरक्षण, पुनरुद्धार तथा तत्संबंधी अन्य समस्याओं को हल करना होगा। इस क्षेत्र में बोनम्पक, चिचेन, इत्जा, पेलेंक, कोपान, तिकाल आदि प्रसिद्ध स्थल आते हैं (तिकाल का फ़ोटो पृष्ठ 33 पर देखें)।

27 जमैका



जून 7, 1962 को 'न्यू वर्ल्ड' का एक प्रसिद्ध व्यापार-केंद्र पोर्ट रॉयल भूचाल और ज्वारभाटा की लहरों से नष्ट हो गया। हाल ही में हुए सामुद्रिक पुरातात्त्विक अन्वेषणों से महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथा कलात्मक मूल्य के बहुत से पदार्थ प्रकाश में आए हैं (फ़ोटो : गोताखोर तांबे का कलश निकाल रहे हैं). 1967 में यूनेस्को मिशन ने जमैका के प्राधिकारियों को सामुद्रिक उपलब्धियों के लिए संरक्षण कार्यक्रम बनाने में सहायता दी। (यूनेस्को कूरियर की समुद्र में से प्राप्त स्थापत्य उपलब्धियों पर एक विशेष अंक प्रकाशित करने की योजना है)।

फ़ोटो–टूरिस्ट ऑफिस ऑफ जमैका

28 डोमिनिकन रिपब्लिक

ऐतिहासिक स्मारकों तथा स्थलों के संरक्षण की योजना, जिनमें से कुछ यूरोपियनों के अमरीका आने से पूर्व काल के हैं। यूनेस्को मिशन 1968.

29 कोलंबिया



उथल पुथल से भरे अपने इतिहास के बावजूद, कारिबियन में 1533 में निर्मित कर्तागिना डि इंडियाज़ नामक बड़ी बंदरगाह पर अब भी प्राचीन परकोटों, गिरजों, मठों, महलों आदि के स्मारक विद्यमान हैं (फ़ोटो : सान फर्नैंडो फ़ोर्ट)। यूनेस्को मिशन स्मारक-पुनरुद्धार तथा नगर के पर्यटन-विकास की योजना बना रहा है।

फ़ोटो © "कोलंबिया", एड. ब्रॉन एट सी, पेरिस से

30 पेरू

इंका के प्राचीन क्षेत्र कुज़को, क्विल्लाबम्बा-माचू, पिच्चू-पुनो के लिए, जो इंका साम्राज्य की जन्म-भूमि है, में बड़े स्तर पर पर्यटन-विकास-योजना बनाई जा रही है (यूनेस्को कूरियर, दिसंबर, 1966)। विश्वविद्यालय सैन मार्कों, लिमा, जो लैटिन अमेरिका में सबसे प्राचीन है के पुनरुद्धार तथा इतिहास के नये राष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना की योजना। इन परियोजनाओं तथा पेरू की सांस्कृतिक निधि के क्रमिक अध्ययन के लिए मिशनों ने परस्पर सहयोग से काम किया है। चार यूनेस्को मिशन 1965, 1966, 1967.

31 बोलीविया



सांस्कृतिक स्थलों, विशेषकर तियाहुआनाको के प्रसिद्ध पुरातत्त्व - अवशेषों (फ़ोटो : तितीकाका झील के दक्षिण से प्राप्त इंकापूर्व स्थापत्य-अवशेष) के पुनरुद्धार तथा विकास की पंच-वर्षीय-योजना; अलटीप्लानो क्षेत्रों में पर्यटन-विकास की संभावना की जाँच, ला-पाज़, उररू, पटोसी, कूचाबांबा में बारीक़ गिरजाघरों का अध्ययन तथा उनका संरक्षण। यूनेस्को मिशन 1966.

फ़ोटो © बर्नार्ड-विलारेट

32 ईस्टर आइलैंड (चिली)

यूनेस्को के पुरातत्त्व और मानव जाति विज्ञान मिशन ने चिली पुरातत्त्ववेत्ताओं के सहयोग से 1966 में विशाल मूर्तियों के पुनरुद्धार की योजना (चित्र, पृष्ठ 4 पर देखें) तथा द्वीप को पोलीनीशियन-प्रागैतिहासिक सभ्यता क महत्त्वपूर्ण संग्रहालय बनाने की योजना बनाई।

33 ब्राज़ील

ब्राज़ील की राष्ट्रीय स्तर की आर्थिक विकास योजना के अंतर्गत वहाँ के सांस्कृतिक स्रोतों के विकासार्थ ब्राज़ील के विशेषज्ञों के साथ मिलकर यूनेस्को ने एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया है। विशेष ध्यान प्रसिद्ध स्थलों, जैसे सैल्वाडोर डि बाहिया, ऊरोप्रीटो आदि को दिया जाएगा। (पृष्ठ 12 पर लेख देखें) तीन यूनेस्को मिशन 1966–1967.

आधुनिक महानगर हमें पाठ सिखा सकते हैं

इसके पश्चात् एक और आश्चर्यजनक घटना हुई। नवंबर 4, 1966 को, जब पेरिस में यूनेस्को का महासम्मेलन हो रहा था, इटली में बाढ़ आई जिसके कारण टसकैनी और विनीशिआ के बड़े क्षेत्र नष्ट हो गए और फ़्लोरेंस के बहुत से प्राचीन भाग तथा वेनिस शहर डूब गए। इस बाढ़ से फ़्लोरेंस की कलात्मक रचनाएँ और वेनिस की शिल्पी-संपत्ति ख़तरे में पड़ी और सारे विश्व में चिंता व्यक्त की जाने लगी। यूनेस्को के महासम्मेलन की ओर से डायरेक्टर जनरल ने इन दो शहरों तथा इनके आस-पास के क्षेत्रों को बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान आरंभ किया।

नूबिया के अभियान की सफलता तथा फ़्लोरेंस और वेनिस में संसार की रुचि ने यूनेस्को के कार्यक्रमों पर प्रभाव डाला। इससे ज्ञात हुआ कि विश्व के लोगों को सांस्कृतिक संपत्ति की रक्षा का ध्यान है, और ऐसे कार्यक्रम में वे सहायता देने को तत्पर हैं। इससे यह भी पता चला कि ऐसी रुचि तथा सहायता के होते हुए, यूनेस्को अपनी ज़िम्मेदारियों को विस्तृत कर सकता है।

नूबिया के अभियान का एक अप्रत्यक्ष परिणाम यह भी हुआ कि नूबिया में पर्यटन बढ़ गया। पहले केवल साहसी और वैज्ञानिक पर्यटक ही यहाँ आते थे, परंतु आज नावों, नये होटलों और अन्य सेवाओं के कारण हज़ारों लोग नूबिया जा सकते हैं, जिससे इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पर्याप्त उन्नति हुई।

इसके साथ ही, यातायात में उन्नति, अधिक अवकाश और लोगों की उन दूरस्थ स्थानों को, जिनके बारे में वे पढ़ चुके थे और देखने के इच्छुक थे—जाने की सामर्थ्य से भी पर्यटन बढ़ गया है। उन्नत देशों में, जहाँ पर्यटन एक सुस्थापित उद्योग है, यह उन्नति का एक कारण है। इंग्लैंड में यह उद्योग निर्यात-व्यापार में चौथे दर्जे पर माना जाता है और इसके कारण इंग्लैंड कई वर्षों से विदेशी मुद्रा अधिक से अधिक मात्रा में कमा रहा है। अन्य देशों में भी पर्यटन अब प्रथम दर्जे का उद्योग बन गया है।

इसका मतलब यह है कि वे देश जिनमें पुरातत्त्व के महत्त्वपूर्ण स्थल और गौरवमयी वस्तुएँ हैं अथवा जहाँ ऐसा समाज है जो प्राचीन तथा समाप्त हुई या समाप्त होनेवाली रहन-सहन की रीति, सभ्यता और संस्कृति में बसता है, और जहाँ ऐसे समुदायों की सुरक्षा के लिए कुछ संघ तथा दल हैं, अब इन्हें भार नहीं समझते अपितु आर्थिक संपत्ति मानते हैं।

पर्यटन अधिकतर मौसमी होता है, परंतु अब यह धीरे-धीरे वर्ष भर चलने लगा है। इसमें लगे हुए धन के परिणाम यह हैं—सड़कों और हवाई जहाज़ों से दर्शनीय स्थलों तथा स्मारक-भवनों तक जाने में आसानी होती ही है, साथ ही नये बाज़ार स्थानीय कृषकों और उद्योगों के लिए खुल जाते हैं; होटल और रेस्तराँ खुलने से रोजगार बढ़ता है; विद्युत् तथा आधुनिक यातायात से कुशल श्रमिकों तथा प्रशिक्षित तकनीशियनों को भी रोजगार मिलता है।

बहुत से देशों—ईरान, पेरू, इंडोनेशिया आदि—में पुरातत्त्व-कार्यालय अब योजना-मंत्रालय के अधीन हैं, जो योजना और आर्थिक विकास के कार्यक्रम चलाता है। इन पुरातत्त्व कार्यालयों में पहले कम कर्मचारी हुआ करते थे, और उनके पास यथेष्ट धन भी नहीं होता था। अब यह संरक्षण कार्य विलास के बजाय आवश्यकता प्रतीत होने लगा है। जैसा कि नैतिक एवं आर्थिक दृष्टिकोणों से ठीक भी है। तीन विभिन्न उपायों से यह कार्य हो रहा है:

(1) वे देश जो ऐसे कार्यक्रम बिना सहायता के, अन्य आर्थिक योजनाओं की तरह चलाते हैं, यूनेस्को या तो इनके कार्यक्रम में भाग लेता है अथवा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ या शिक्षावृत्ति के रूप में सहायता देता है।

(2) कुछ देशों को विशेषज्ञ तथा शिक्षावृत्ति के अलावा यूनेस्को ने बैंकों से अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक ऋण लेने में भी सहायता दी है।

(3) कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं, जहाँ पर योजनाओं का विकास संयुक्त राष्ट्र संघ के, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम और विशिष्टताप्राप्त एजेंसियों की सहायता से हो सकता है। जैसे खाद्य तथा कृषि संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा सिविल विमानन संगठन आदि, जो पर्यटन में, सड़कों और हवाई अड्डों को बनाने में, कृषि की उन्नति और कर्मचारियों के प्रशिक्षण आदि में सहायक हो सकते हैं।

यूनेस्को के पुराने और नये कार्यक्रमों में मात्रा का अंतर है। ईरान में वहाँ की सरकार ने इन्हीं दिनों 8 करोड़ डॉलर का कार्यक्रम होटलों तथा सड़कों आदि की उन्नति के लिए रखा है जिसमें 40 लाख डॉलर निम्नलिखित भवनों की रक्षा के लिए सम्मिलित हैं:—

- उत्तरी ईरान में : सुल्तानिया में मंगोल सुल्तान ओलजैतु ख़ुदाबन्दे की प्रसिद्ध अंत्येष्टि मस्जिद, और माकू में ग्यारहवीं शताब्दी का गिरजा क़ारा किलीसेह।
- इस्फ़ाहान में : जुमाई मस्जिद और मैदान-ए-शाह।
- फ़ारस प्रांत में : फ़िरोज़ाबाद और सर्वेस्तान के महल, तथा क़िला-ए-दोख़्तर (पुत्री का किला)।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के माध्यम से यूनेस्को इस योजना तथा परामर्श के लिए विशेषज्ञ भेजेगा, और भिन्न कार्यक्रमों के समन्वय की ज़िम्मेदारी लेगा।

पेरू तथा यूनेस्को के कई सदस्य-राष्ट्रों में पर्यटन को बढ़ाने के लिए दर्शनीय-स्थलों तथा स्मारक-भवनों को सुरक्षित रखने के प्रश्न विचाराधीन हैं। इनकी आर्थिक सहायता, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम तथा बैंकों के द्वारा होगी। इन देशों में इस कार्य के लिए बजट भी काफ़ी होगा। आकर्षण के द्वारा देश की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए, इन स्थलों तथा स्मारकों का रक्षा-कार्य केंद्रीय कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

जहाँ पर्यटन का प्रभाव अब पड़ना आरंभ हुआ है, अथवा जहाँ इसकी उन्नति की संभावना है, उन देशों की सरकारें प्राचीन भवनों की रक्षा के लिए संधान करने तथा इनको विधान तथा सेवा द्वारा स्थापन करने के लिए तैयार हैं। विरोधाभास है कि जिन देशों से विशेषज्ञों की भर्ती की गई है और जहाँ विधान तथा सेवाएँ बहुत दिनों से उपलब्ध हैं वहाँ ये समस्याएँ अधिक गंभीर हो सकती हैं।

कर्मचारियों की संख्या और भिन्न सेवाओं के लिए नियुक्त बजट अभी तक बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध की आवश्यकताओं पर आधारित है। आजकल जनांकिकीय, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन इतनी शीघ्रता से आ रहे हैं कि यदि सरकारें इस परिवर्तन में अपने को ढालती नहीं, तो इससे ऐसी हानियाँ हो सकती हैं जिनसे उबरा नहीं जा सकेगा।

न्यूयार्क तथा तोक्यो जैसे बड़े नगरों से यह सीख मिलती है और ऐसी ही हानियाँ सैकड़ों बड़े-बड़े नागरिक केंद्रों में हो रही हैं। इन बड़े शहरों में भूमि-मूल्य तथा यातायात की आवश्यकताओं और संपदा-कर के ढाँचे से पर्यटन का महत्त्व कम होने की आशंका है। इस बात में विश्व भर के विकासशील नगरों के आधुनिक क्षेत्र एक दूसरे से अधिक मेल खाते हैं, परंतु उनके शहरों के भीतर स्थित ऐतिहासिक भवनों का प्रश्न ही अलग है।

परंतु क्या बहुमंज़िला और मानकित सामग्री से बने एक जैसे दिखाई देने वाले मकान मनुष्य के लिए उपयुक्त वातावरण प्रस्तुत करते हैं? क्या मात्रा, प्रभेद तथा ऐतिहासिक अथवा कलात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण भवनों के समूह मनुष्य के लिए अधिक अच्छे वातावरण से सिक्त नहीं?

ये मनुष्य के भविष्य में स्वस्थ रहने की कुछ समस्याएँ हैं। वातावरण कैसे और किन चीज़ों से बनता है, इसका हमें बहुत कम ज्ञान है। वायु-प्रदूषण तथा भूमि-प्रबंध के विशेषज्ञ जीव-वैज्ञानिक जो महाद्वीपीय छज्जे पर कार्य करते हैं, तथा नागरिक आयोजक, सभी की राय है कि परिवर्तन तेज़ी से हो रहे हैं, और जल्दी ही इसके उपाय किए जाने चाहिएँ। इस संदर्भ में हमारी सांस्कृतिक संपत्ति की रक्षा भी महत्त्व रखती है। ये कार्य यूनेस्को की नई योजना का भाग हैं, जो 1969–1970 में कार्यान्वित की जाएगी।



ब्राज़ील में सांस्कृतिक पर्यटन की विशाल योजना

ले. मिशल पेरैंट

दुनिया के लिए ब्राजील के नाम में ही सम्मोहन है। इसके नाम से ही अस्पृश्य वनों के बिंब, रंगीन तथा लयात्मक लोकगीत, तथा साहसिक कहानियों एवं खोजों का समृद्ध इतिहास स्मरण हो आता है। संक्षेप में कहें तो यह यात्री का स्वर्ग है।

इसके विपरीत ब्रासीलिया की नई राजधानी में शहरी आयोजन का सुंदर प्रयोग किया गया है जिसे बहुत लोग भविष्य के शहरों का नमूना मानते हैं (यूनेस्को कूरियर, जून, 1961 देखें)। यह इतना सत्य है कि अब लोग यह नहीं पूछते, 'क्या आप रियो के कार्निवाल में गए हैं? बल्कि पूछते हैं, "क्या आपको ब्रासीलिया देखने का अवसर मिला है?"

ब्राज़ील के किसी भी चमत्कार (जैसे भव्य दृश्यावली अथवा तत्कालीन स्थापत्य-कला) में इतना बल नहीं था कि ब्राज़ील के विकास के लिए पर्यटन को बढ़ावा मिल सकता।

1966 में ब्राज़ील में एक लाख से अधिक विदेशी दर्शक नहीं आए जिनमें से एक चौथाई अर्जेनटाइना तथा उरुग्वे जैसे पड़ोसी देशों से आए थे। इन आँकड़ों में वे विदेशी यात्री भी सम्मिलित हैं जो ब्राज़ील में व्यापार के लिए या पर्यटन से प्रत्यक्षतः असंबंधित कारणों से आए।

यहाँ तक कि स्थानीय पर्यटन भी अत्यंत सीमित है। साओ पालो अथवा रियो डी जैनीरो के ब्राज़ील निवासी, जो यात्रा करने की सामर्थ्य रखते हैं, यूरोप, उत्तरी अमरीका या एशिया के सुदूर देशों को जाना पसंद करते हैं, परंतु अपने ही देश की सुंदरताओं की खोज में रुचि नहीं रखते।

तेज अंतर्महाद्वीपीय-हवाई-यात्रा, कम किराये और यूरोप के कुछ ग्रीष्मकालीन समुद्री विश्राम-स्थलों की अत्यधिक भीड़ के कारण ब्राज़ील में भी भावी वर्षों में (विश्व के अन्य भागों के समान) परिवर्तन की संभावना है। ब्राज़ील में इसके विपरीत असंख्य समुद्री किनारे हैं जहाँ सारे वर्ष धूप और छाया मिलती है।

इस परिवर्तन के लिए दो बातें आवश्यक हैं। एक तो यह कि ब्राज़ील में पर्याप्त सड़कें तथा होटल होने चाहिएँ, जिनके बिना पर्यटन का सही विस्तार असंभव है। दूसरे, यह कि देश का स्वाभाविक

मिशल पेरैंट फ्रांस में ऐतिहासिक स्मारकों के प्रवर निरीक्षक हैं तथा ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण और पुनरुद्धार इनका विशेष उत्तरदायित्व है। इन्होंने राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर उद्यानों की श्रृंखला के निर्माण की योजना बनाई है तथा बर्गुंडी और पेरिस के प्रदेश में ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण के लिए विशेष कार्रवाई की है। कला-इतिहास पर इन्होंने कई पुस्तकें लिखी हैं: "कैथेड्रेल डि स्ट्रास्बर्ग", "बोर्गोन", "हिस्टरी डि ल' आर्किटेक्चर" (एड. क्विलेट, पेरिस द्वारा प्रकाशित)। इनकी अन्य रचनाओं में प्रयोगात्मक रंगमंच के लिए नाटक तथा दृश्यशास्त्र-संबंधी अनुसंधान पर अध्ययन-लेख सम्मिलित है। ये हाल ही में एक यूनेस्को दल लेकर ब्राजील गए जिसने उसकी राष्ट्रीय पर्यटन विकास योजना के अंतर्गत वहाँ के सांस्कृतिक स्रोतों तथा प्राकृतिक स्थलों के पुनरुद्धार एवं संरक्षण के कार्यक्रम बनाने में उसकी सहायता की।



फ़ोटो © कार्लस डि सा मौरेरा

कोंगनहास डो कैम्पो के गिरजे (मिनास गिरैस राज्य, ब्राज़ील) के चबूतरे पर बहुरंगी प्रतिमाओं—12 ईशदूतों—का एक विलक्षण संग्रह है। ये अठारहवीं शताब्दी के ब्राज़ील के सर्वश्रेष्ठ कलाकार ऐंटोनियो फ़ांसिस्को लिस्बोआ, जिसे ओ अलीजाविन्हो ("छोटा विकलांग") भी कहा जाता है, द्वारा निर्मित है। बाएँ, गिरजे के घंटा-स्तंभों की पृष्ठभूमि में ईशदूत जोयल का सिर दिखाई देता है। ओ अलीजाविन्हो ने ब्राज़ील को बारोक़ कला की एक विशिष्ट पद्धति दी जो उच्च कोटि की शक्ति एवं ओज से अनुप्राणित है। औरो प्रेटो के गिरजे इसकी कला के नमूनों से सुसज्जित हैं; इस नगर को अब ब्राज़ील के एक राष्ट्रीय स्मारक का रूप दे दिया गया है।

सौंदर्य तथा उसकी स्थापत्य-कला को (जिसकी विदेशों में बहुत कम जानकारी है) सुरक्षित रखने के लिए प्रत्येक संभव प्रयत्न किए जाने चाहिएँ। जैसा कि आज हो रहा है, वैसा अगर कुछ देर होता रहा, तो संसार के जानने से पहले ही ये चीजें समाप्त हो जाएँगी।

इस योजना की सफलता के लिए एक साथ तीन कार्रवाइयाँ करनी होंगी। एक, पर्यटक की जानकारी के लिए ब्राज़ील के कलात्मक तथा प्राकृतिक कोषों का संक्षिप्त सर्वेक्षण; दो, इन कोषों की सुरक्षा के लिए प्रशासनात्मक तथा वैधानिक उपाय काम में लाए जाएँ जिनसे वर्तमान सेवाओं में विस्तार तथा ब्राज़ील में इस कार्य के हक में लोकमत उत्पन्न किया जाए; तीन, स्थलों तथा स्मारकों की सुरक्षा और मरम्मत, जिससे पर्यटन की संभावनाएँ बढ़ें।

ब्राज़ील राज्य की प्रार्थना पर पिछले दो वर्षों में यूनेस्को के तीन दलों (संयुक्त-राष्ट्र-संघ-विकास-कार्यक्रम की सहायता से) ने ब्राज़ील के विशेषज्ञों के साथ मिलकर इस देश के आर्थिक विकास के साथ-साथ इसके सांस्कृतिक साधनों की प्रगति का कार्यक्रम बनाया है। प्राकृतिक और कलात्मक कोषों की सुरक्षा की सभी योजनाएँ, जिन्हें ब्राज़ील राज्य विकसित करना चाहता है, तभी संभव हैं जब इन्हें संपूर्ण आर्थिक विकास की योजनाओं का अंग बनाया जाए।

किंतु सांस्कृतिक विकास का समाकलन आर्थिक विकास के साथ तभी प्राप्त हो सकता है, जब आर्थिक विकास को सांस्कृतिक विकास से मिलाया जाए। मैं इसे स्पष्ट करूँगा। ज्यों-ज्यों किसी देश का जीवन-स्तर उन्नत होता जाता है, त्यों-त्यों हम देखते हैं कि व्यक्ति के सांस्कृतिक प्रश्न तथा संपूर्ण देश की अवकाश क्रियाएँ महत्त्वपूर्ण होती जाती हैं। कम-से-कम हमें ऐसी आशा ही है।

अधिकतर हम देखते यह हैं कि सांस्कृतिक कार्यकलापों को टुकड़ों में विभक्त करके देखा जाता है, और इसी तरह उन पर कार्य किया जाता है। बहुत कम बार सांस्कृतिक विकास की संपूर्ण योजना के रूप में उसे देखा जाता है। उदाहरणार्थ, नाटक या संगीत के विकास को कभी-कभी ही स्थापत्य-कला अथवा सांस्कृतिक स्मारकों के विकास के साथ देखा जाता है। आवश्यकता यह है कि राष्ट्र के सांस्कृतिक विकास की सामान्य योजना बने और इसे सामान्य आर्थिक विकास की विस्तृत योजना में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

ब्राज़ील ऐसा राष्ट्र है जहाँ असामान्य प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक संपदा होने के कारण ऐसा कार्यक्रम लागू हो सकता है। शर्त यह है कि इसके सामान्य विकास की कुछ समस्याएँ हल की जाएँ जैसे, देशीय आयोजन, संचार-व्यवस्था में सुधार, व्यावसायिक प्रशिक्षण। साथ ही पर्यटकों के लिए सुविधाएँ भी उपलब्ध की जाएँ।

पचासी लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल का ब्राज़ील एक अत्यंत विस्तृत देश है। खुले स्थानों को पहले अभिशाप समझा जाता था, किंतु आज यही वरदान सिद्ध हो रहे हैं। बहुत से देशों में आजकल असीम जनसंख्या तथा स्थान का अभाव पाया जाता है, जिसके कारण वायु एवं जल दूषण तथा इनसे उत्पन्न अन्य असुविधाएँ होती हैं। पर ब्राज़ील में जनसंख्या में वृद्धि तथा पर्यटन में तीव्र प्रगति बिना किसी कठिनाई के हो सकती है।

ब्राज़ील के कुछ क्षेत्रों में भारी जनसंख्या है, जबकि कुछ अन्य क्षेत्रों से लोग निकल रहे हैं। उत्तर-पूर्वी ब्राज़ील के रैसिफ़ी और सैल्वाडोर में अल्प-विकास तथा साओ पालो में अतिविकास इसके कारण हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि अर्थव्यवस्था का विकेंद्रीकरण, उद्योगों का छितराव तथा कृषि का आधुनिकीकरण हो। पर्यटन का विकास इन्हीं आधारभूत सुधारों पर निर्भर है। पर पर्यटन

अगले पृष्ठ पर जारी

ब्राज़ील के भव्य-भवनों के गौरव का पुनरुत्थान

स्वयं ही आर्थिक विकास को संवर्धित तथा जीवन-स्तर को उन्नत कर सकता है, जिससे आर्थिक विकास के अन्य बहुत से नये मार्ग निकलते हैं।

इन बातों की पृष्ठभूमि में हमें ब्राज़ील के पर्यटन विकास का परीक्षण करना चाहिए। बहुत-से प्रसिद्ध, विस्मयकारी स्थलों के अतिरिक्त ब्राज़ील का बड़ा आकर्षण इसके क्षेत्र का फैलाव तथा इसका 3,600 मील लंबा अखंडित समुद्र-तट है। किंतु यह प्राकृतिक वैभव शीघ्र ही नष्ट होने वाला है। विगत दो शताब्दियों में इसके उष्ण कटिबंधीय वनों का इतना नाश हुआ है कि अब एमेज़ोनिया को छोड़कर ये केवल 8 प्रतिशत रह गए हैं (एमेज़ोनिया केवल 30 प्रतिशत और उन्मुक्त किंतु बेकार स्थल 62 प्रतिशत हैं)।

शेष समुद्र-तट के वनों तथा भीतरी वन्य क्षेत्रों की किसी भी मूल्य पर रक्षा करनी होगी। इस पर समुद्री किनारों तथा पर्यटन-विश्राम स्थलों के लिए भविष्य के स्थलों का चुनाव निर्भर है। इन स्थलों को राष्ट्र के सुंदर शहरों और ऐतिहासिक स्थलों से मिलाने से ब्राज़ील के दो आकर्षण––प्रकृति तथा कला––दर्शकों को सुगमता से मिल सकेंगे।

जब सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगाली लोग ब्राज़ील आए, तो उन्होंने पाया कि ब्राज़ील के आदिवासियों ने अपनी किसी स्थापत्य-सभ्यता का विकास नहीं किया था, जैसा कि स्पैनिश लोगों ने मैक्सिको और पेरू में ऐसा नहीं पाया था। इन बस्तियों में पुर्तगालियों ने यूरोपीय स्थापत्य-शैली को अपनाया। सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में पादरियों ने गिरजाघरों, मठों, अन्य भवनों का निर्माण किया जिन पर यूरोपीय प्रभाव स्पष्ट था।

उपनिवेश-काल में निर्मित "फ़ाज़िदा", देहात के बड़े मकानों में ये चिह्न नहीं दीखते थे, विशेषकर साओ पालो में जहाँ मौलिक ब्राज़ीली शैली दिखाई देती थी।

इसके बाद 18वीं और 19वीं शताब्दी में बारोक़ स्थापत्य-कला संपूर्ण ब्राज़ील में फैल गई जिस पर यूरोपीय प्रभाव था, किंतु जो गर्म देश की वनस्पतियों तथा वातावरण द्वारा संपन्न एवं पुनर्जीवित थी। अलीजादिन्हो की भव्य मूर्तियाँ विशेषरूप से रहस्यवादी अभिव्यक्ति की चरम सीमा पर पहुँच गई जिनकी मध्यकाल को छोड़कर संपूर्ण यूरोप में भी कोई तुलना न थी।

यह सोचना अनुचित होगा कि ब्राज़ील की कला विशुद्ध धार्मिक है। देहाती 'फ़ाज़िदा' स्थापत्य कला के युग के पश्चात् शीघ्र ही 'सोब्राडो' का युग आया; ये भवन ब्राज़ीली किस्म के बहुमंज़िले बड़े-बड़े मकान थे। ये सोब्राडो ब्राज़ील के उत्तर-पूर्वी शहरों तथा अन्य स्थानों में पाए जाते हैं। सैल्वाडोर डि बाहिया में बने हुए ऐसे मकान विशेषरूप से अति सुंदर तथा आकर्षक हैं। इस कलात्मक शहर में तथा रैसिफ़ी के निकट साओ-लुई और ऑलिंडा एवं मिनाज़ गिरैस के शहरों में बारोक़ गिरजे बने थे।

आज वही उच्चवर्ग द्वारा निर्मित भव्य सोब्राडो भवन अपने ही निर्माताओं द्वारा त्याग दिए गए हैं (फ़ाज़िदा भवनों की तरह ही)। ये अब शहर के ऐसे जीर्ण-शीर्ण भाग बन गए हैं (रियो डी जैनिरो के "फ़ाविला" भवनों की तरह) जो अत्यंत गंदे, उपेक्षित लोगों से ठसे, तथा नष्टप्राय हैं। यहाँ आधुनिकीकरण के अधूरे प्रयत्न भी होते हैं, और स्वास्थ्य-रक्षा के लिए अधूरे प्रयत्न भी किए जाते हैं जिनसे वहाँ बसने वाले निर्धनों की दशा में सुधार बहुत कम होता है।

लगभग 50 वर्ष पहले ये भवन ब्राज़ील के शहरों की शान थे। आज भी ये उष्णकटिबंधीय वनस्पति से घिरे ब्राज़ील की स्थापत्य-कला के आदर्श नमूने हैं। यहाँ के वर्तमान निवासियों को सुव्यवस्थित बनाने के प्रयत्न करने चाहिएँ ताकि ये पहले जैसा गौरव प्राप्त कर सकें। इन लोगों को यहाँ से निष्कासित करने से सोब्राडो की महत्ता ही समाप्त हो जाने का ख़तरा है। पर्यटन तथा संस्कृति के नाम पर सोब्राडो के निवासियों को निकालकर उन्हें अपने शहरों तथा प्राचीन ज़िलों के लगाव से वंचित करना अनुचित होगा।

दूसरे शब्दों में, भविष्य में इन ज़िलों का नवीकरण करने के लिए पर्यटन को केवल एक कारण मात्र समझना चाहिए। तभी पर्यटक यहाँ के दैनिक जीवन को समझ सकेगा और उसमें रुचि लेगा। इस प्रकार "सांस्कृतिक पर्यटन" के ज़रिए ही भिन्न-भिन्न जातियों के लोग एक दूसरे के निकट आएँगे––इन क्षेत्रों को शून्य एवं निर्जीव बनाकर नहीं।

यहाँ पर मैं यह कहना चाहूँगा कि ब्राज़ील के शहरों की सांस्कृतिक दाय को सुरक्षित रखने की समस्या के लिए (विशेषकर सैल्वाडोर डि बाहिया जैसे शहरों के लिए) नगर-नवीकरण का एक व्यापक कार्यक्रम आवश्यक है। बड़े शहरों के भागों तथा समूचे छोटे शहरों की न केवल मरम्मत बल्कि इनका समूचा नवीकरण (जैसे जल, मल निर्यास, विद्युत् तथा सड़कें आदि) करने के लिए संयुक्त प्रयत्नों की आवश्यकता है।

ब्राज़ील की पत्थर-संपदा इसकी अतीत सभ्यता के खंडहरों तथा स्मारकों में नहीं, वहाँ के बसे हुए शहरों में पाई जाती है। इस प्रकार इसकी सांस्कृतिक दाय को इसके शहरों के रोज़मर्रा जीवन से पृथक् नहीं किया जा सकता। यह सांस्कृतिक दाय इसके लोक-साहित्य, रीति-रिवाज़ों, विश्वासों, त्योहारों, संगीत एवं साहित्य से बनी है तथा ब्राज़ील की परंपरा और जीवन-प्रणाली से संबद्ध है।

इस तरह ब्राज़ील तीन विचारधाराओं और सभ्यताओं––अमरीकी आदिवासीवाद, अफ़्रीकावाद तथा लैटिन ईसाई-मत––का संगम है। ये तीनों धाराएँ ऐसी मिल जुल गई हैं (यद्यपि इसे केवल सूक्ष्म दृष्टि ही देख सकती है) कि ब्राज़ील निवासियों को ये एक अखंडित इकाई प्रतीत होती हैं।

जिस प्रकार विगत 50 वर्षों ने ब्राज़ील के स्मारकों की दशा बिगड़ती देखी है, उसी प्रकार तेज आधुनिकीकरण परिवर्तनों से (जिनके बिना देश का विकास संभव नहीं है) यहाँ की समृद्ध परंपरागत दाय भी नष्ट हो रही है। सौभाग्यवश ब्राज़ील निवासियों में परंपरागत जीवन-प्रणालियों तथा नई जीवन-प्रणालियों को अपना लेने की अनुकूलनीयता है। साथ ही वे आधुनिक प्रवृत्तियों को अपने वातावरण में सँजो लेने में कुशल हैं (जैसा कि उन्होंने फ़ैशन तथा नये वस्त्रों के प्रयोग में किया है) तथा आधुनिकीकरण के प्रवर्त्तक हैं (जैसे स्थापत्य कला में)।

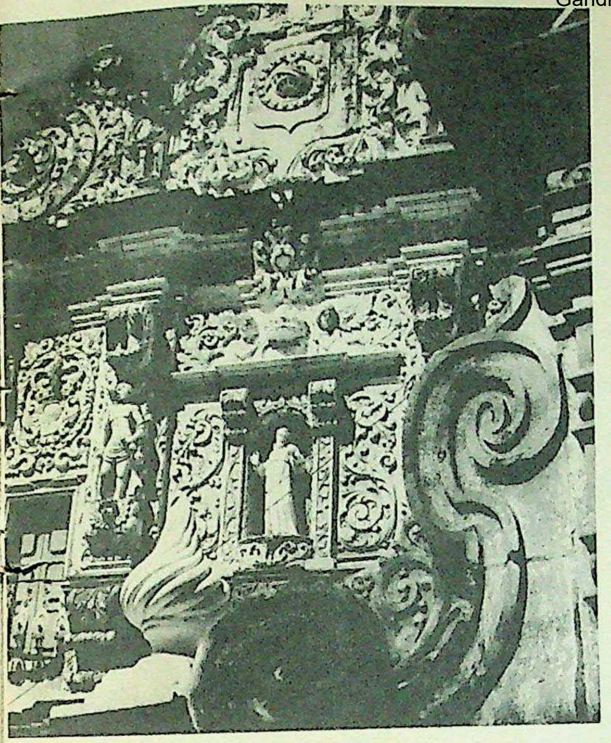
इन सबके बावजूद ब्राज़ील के परंपरागत कौशल, स्मारकों तथा प्राकृतिक दृश्यों से भी अधिक तेज़ी से विलीन हो रहे हैं। यदि इस सांस्कृतिक दाय को निकृष्ट बनाकर केवल पर्यटन के विकास के के लिए प्रयोग में लाया गया, तो इसकी महत्ता समाप्त हो जाएगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह प्रक्रिया एक बार आरंभ होने पर रुकती नहीं। तकनीक तथा रीति-रिवाज जो समाज के दैनिक जीवन के अंग थे, "निर्मित वस्तुएँ" बनकर रह जाएँगे। इन परंपराओं को बनाए रखने के लिए शीघ्र ही कदम उठाने चाहिएँ और ब्राज़ील के स्मारकों की मरम्मत तथा सुरक्षा के कार्यक्रम बनाने के साथ साथ जातीय अध्ययन भी आरंभ करने चाहिएँ।

ऐसे वैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा स्थानीय परंपराओं, कलाओं तथा हस्तकलाओं का अजायबघरों की सहायता से एक संग्रह तैयार किया जा सकता है। इससे इन परंपराओं के प्रति एक नई रुचि भी जागृत होगी। परंपरागत तकनीकों का अध्ययन बहुत सीमा तक इनकी सुरक्षा में भी सहायक सिद्ध होता है और तत्कालीन कलाकार एवं शिल्पी इनका कल्पनात्मक प्रयोग करने से एक नई बहुविध भावी सभ्यता का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

आजकल हर जगह यह आवश्यक है कि अतीत के महत्त्वपूर्ण स्मारकों तथा परंपराओं को आधुनिक जीवन से जोड़ा जाए जिससे तत्कालीन संस्कृति को इन परंपरागत साधनों से प्रेरणा प्राप्त होती रहे। ब्राज़ील के नाटक, लोकगीत तथा लोकप्रिय त्योहार, जो देश के सभी भागों में पाए जाते हैं, यहाँ के जीवन को समृद्ध बनाते हैं। इनसे आकर्षित होकर पर्यटक वर्षभर यहाँ आते रहते हैं और इन माध्यमों द्वारा लोगों से अधिक संपर्क होता है।

यह एक स्पष्ट तथ्य क्रम है कि सामान्यतः बारोक़-कला, तथा विशेषकर इसका ब्राज़ील में धारण किया हुआ रूप, ब्राज़ील के त्योहारों द्वारा विकसित सामाजिक जीवन से उत्पन्न हुआ है।

यदि स्थापत्य-कला अंतराल की तालबद्ध कला है, तो मनुष्य के नेत्र एवं शरीर के लिए यह न केवल उसके दैनिक कार्यों बल्कि त्योहारों के मनाने में भी लय उत्पन्न करती है। विश्रांति-क्रियाएँ विशेषकर स्थापत्य कला तथा रचना की सीमा के भीतर ही होती हैं और यदि इन्हें इस सीमा से पृथक् कर दिया जाए तो प्रायः इनकी विशिष्टता समाप्त हो जाती है। अतः उन देशों में, जहाँ अभी तक परंपरागत विधियाँ वर्तमान हैं, हमें चाहिए कि





वैभव और ह्रास सैल्वाडोर डि बाहिया (उत्तर पूर्वी ब्राज़ील) के नगर में एक दूसरे के पड़ोसी हैं। इस नगर को अपने सैकड़ों गिरजों पर अभिमान है जोकि वास्तुकला तथा सज्जा-कला के के रत्न हैं। सेंट फ़्रांसिस का गिरजा (ऊपर) अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल की विशिष्ट ब्राज़ीलियन बारोक़ शैली में निर्मित किया गया। दाएँ, बाहिया में वैरियो जीसस का हवाई जहाज़ से लिया गया चित्र। यहाँ ब्राज़ीलियन सरकार ने, यूनेस्को की सहायता से, स्मारकों एवं कला संपदा के संरक्षण तथा परिरक्षण की राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत नगर के प्राचीन भवनों और गिरजों के एक समूचे भाग (पिल्लोरी स्क्वायर) के पुनरुद्धार एवं वर्धन के लिए एक कार्यक्रम चलाया है।

फ़ोटो © लिवाली रोवेमर्ग

उनके विषय में प्रत्येक जानकारी अंकित करें जिससे संस्कृति के रूपों का विकास हो सके।

ब्राज़ील के स्वजात त्योहार इसके स्थापत्य-वातावरण के भीतर की उपज हैं। ऐसे त्योहारों का विकास निःसंदेह ब्राज़ील की स्थापत्य-कला को और प्रसिद्ध करेगा; शर्त केवल यह है कि यहाँ के भवनों तथा स्मारकों की सुरक्षा के जो कार्यक्रम बनाए गए हैं, उनसे वे पुनः भव्यता प्राप्त कर लें। तभी पर्यटकों को यहाँ आने में आकर्षण होगा तथा उनका आना उपयोगी सिद्ध होगा। वर्तमान सम्मोहिनी वाले ब्राज़ील में उन्हें दुःख तथा दारिद्र्य के सिवाय कुछ भी नहीं मिलता।

ब्राज़ील के स्मारकों तथा भवनों की दुर्दशा के साथ-साथ इसके देहातों की दशा भी बिगड़ती गई है। इसके कारण हैं—जंगलों का काटा जाना, कृषि संबंधी क्षेत्रों का कम होना, जनता की कंगाली, संपूर्ण जनसंख्या का समुद्री क्षेत्रों की ओर गमन तथा बड़े-बड़े शहरों में बाढ़।

बनों की अंधाधुंध कटाई से यह असामंजस्य और बढ़ गया है और भूमि के कमज़ोर पड़ने से ब्राज़ील की सड़कों के निर्माण में गंभीर बाधा उपस्थित हो गई है। ब्राज़ील के एक लेखक, मिराँ डो बैरोस लतीफ़ ने कहा है कि उष्ण कटिबंधीय वनस्पति, जीव-जंतु, आपस में इतने सुसंबद्ध हैं कि वे मनुष्यों के लिए कम स्थान छोड़ते हैं। धरती के इन कटु नियमों को अपनाकर ही मनुष्य प्रारंभ में बस सका था। बाद में जब यूरोपीय सभ्यता यहाँ आ गई तो इस बढ़ते हुए वन को काटकर तथा एक-एक फ़ुट के लिए संघर्ष करके ही उनका जंगल के मुकाबले में यहाँ रह सकना संभव हुआ।

किंतु आज ब्राज़ील की दशा नितांत भिन्न है और हमें यहाँ की प्रकृति तथा सभ्यता के आपसी संबंधों के विषय में नये सिरे से विचार करना चाहिए। आज दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं और एक को दूसरे की प्रतिक्रियात्मक उपयोगिता की अपेक्षा है।

यहाँ यह कहना आवश्यक होगा कि ब्राज़ील के सांस्कृतिक विकास के लिए तकनीकी-सहायता-कार्यों में सर्वप्रथम स्थान भूमि-वैज्ञानिकों का है जो यहाँ के कुछ स्मारकों को गिरने से बचाने के लिए ऐसी योजना बनाएँ जिससे भूमि स्थिर हो सके।

यह सहायता ब्राज़ील के लिए बहुत लाभदायक होगी, क्योंकि यहाँ पुरानी मानवतावादी परंपरा है और सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए आवश्यक ढाँचा भी है। आवश्यकता केवल इस परंपरा के विकास की है। ब्राज़ील के ऐतिहासिक स्मारक तथा ललित कला-सेवा-विभाग में उच्चकोटि के शिल्पकार तथा पुरातत्त्वज्ञ हैं, किंतु उनका कार्य अभी तक राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रम का भाग नहीं बना है।

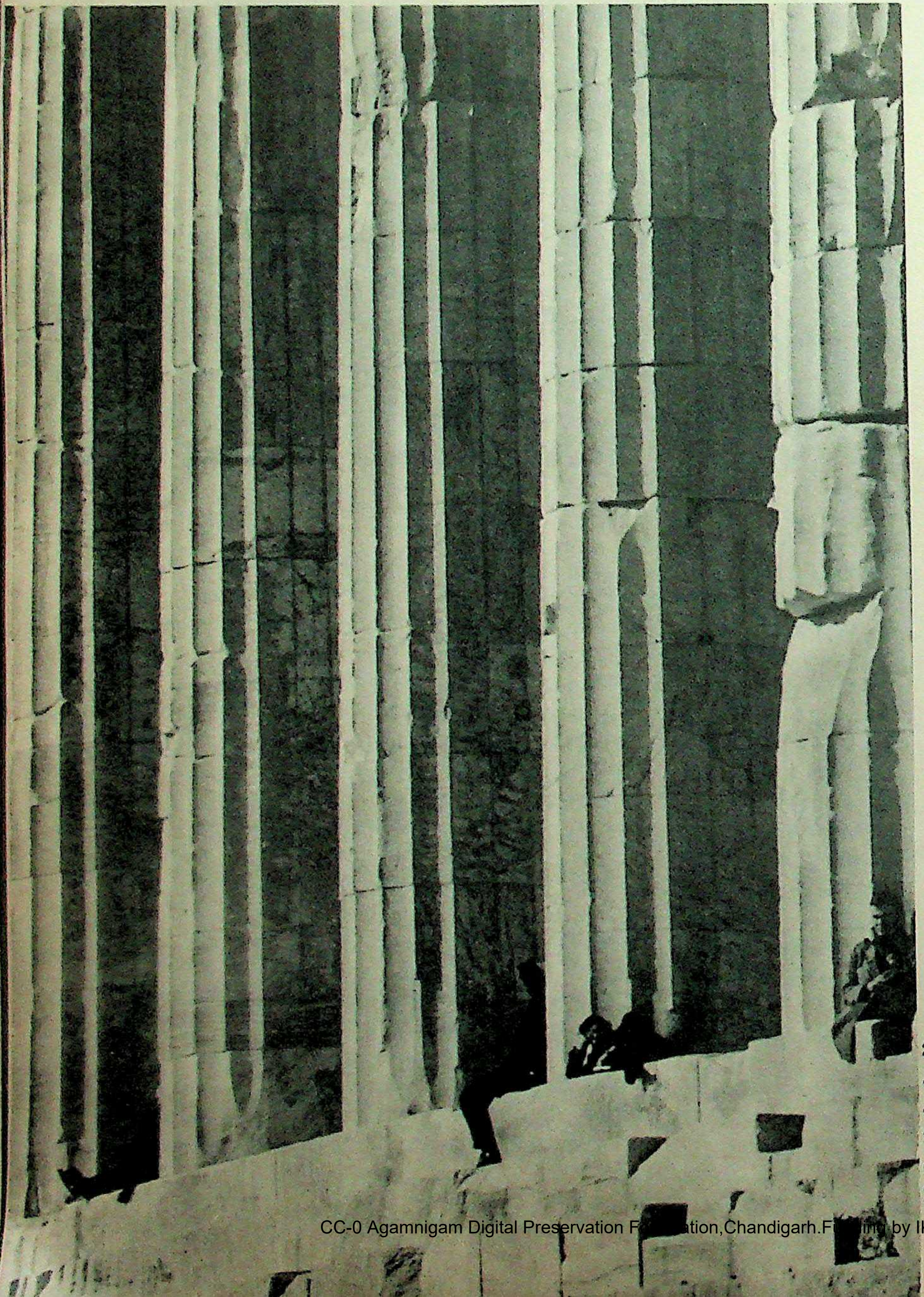
मरम्मत करने वाले तकनीशियनों के प्रशिक्षण के लिए ब्राज़ील के स्थापत्य-विद्यालयों को सक्षम किया जाना चाहिए। ये तकनीशियन ऐतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा के राष्ट्रीय कार्यक्रम में भली प्रकार से प्रयोग में लाए जा सकेंगे। उपर्युक्त विभिन्न कारणों से ब्राज़ील की सांस्कृतिक क्रियाओं को केंद्रीय स्तर पर फैलाने व मज़बूत करने से उसी प्रकार लाभ होगा जिस प्रकार ऐतिहासिक स्मारक-विभाग तथा ललित कला-विभाग को लाभ हुआ है।

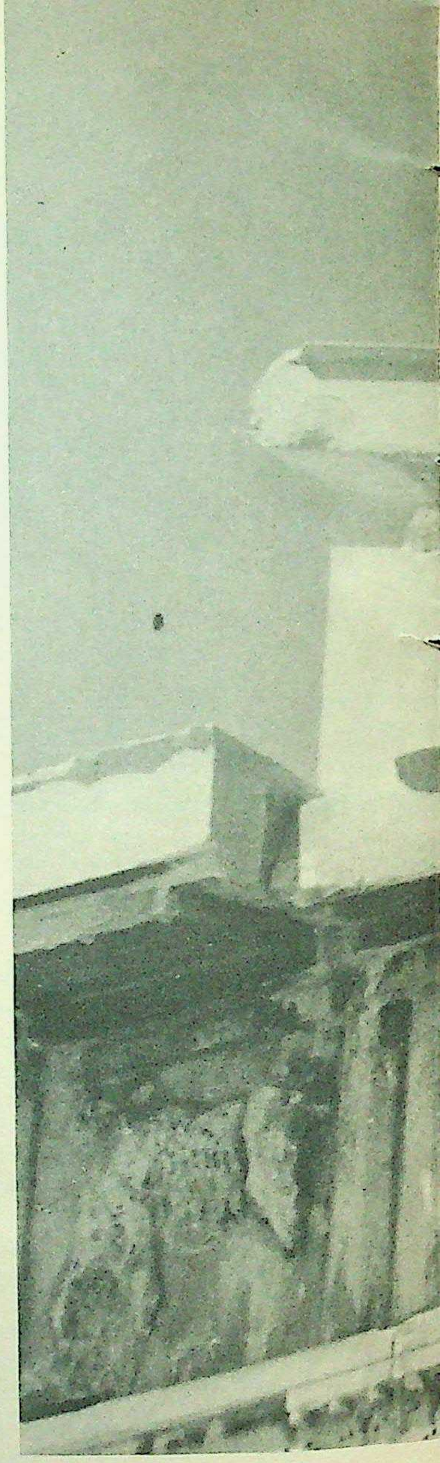
बड़े पैमाने पर ब्राज़ील की सांस्कृतिक दाय की रक्षा तथा उसका उचित उपयोग कोई व्यर्थ कार्य नहीं होगा। ब्राज़ील का सांस्कृतिक जीवन समृद्ध है जिसकी जड़ें उसकी परंपराओं, उसके विज्ञान के प्रति विशेष मोह तथा उसके मानवतावाद में हैं। इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक चलाने के लिए शायद अंतर्राष्ट्रीय सहयोग अपेक्षित हो, मगर यह सफलता ब्राज़ील की ओर से विश्व-समुदाय को एक अमूल्य भेंट होगी।

पार्थिनॉन ख़तरे में

ले. जॉर्जिस दोंतास

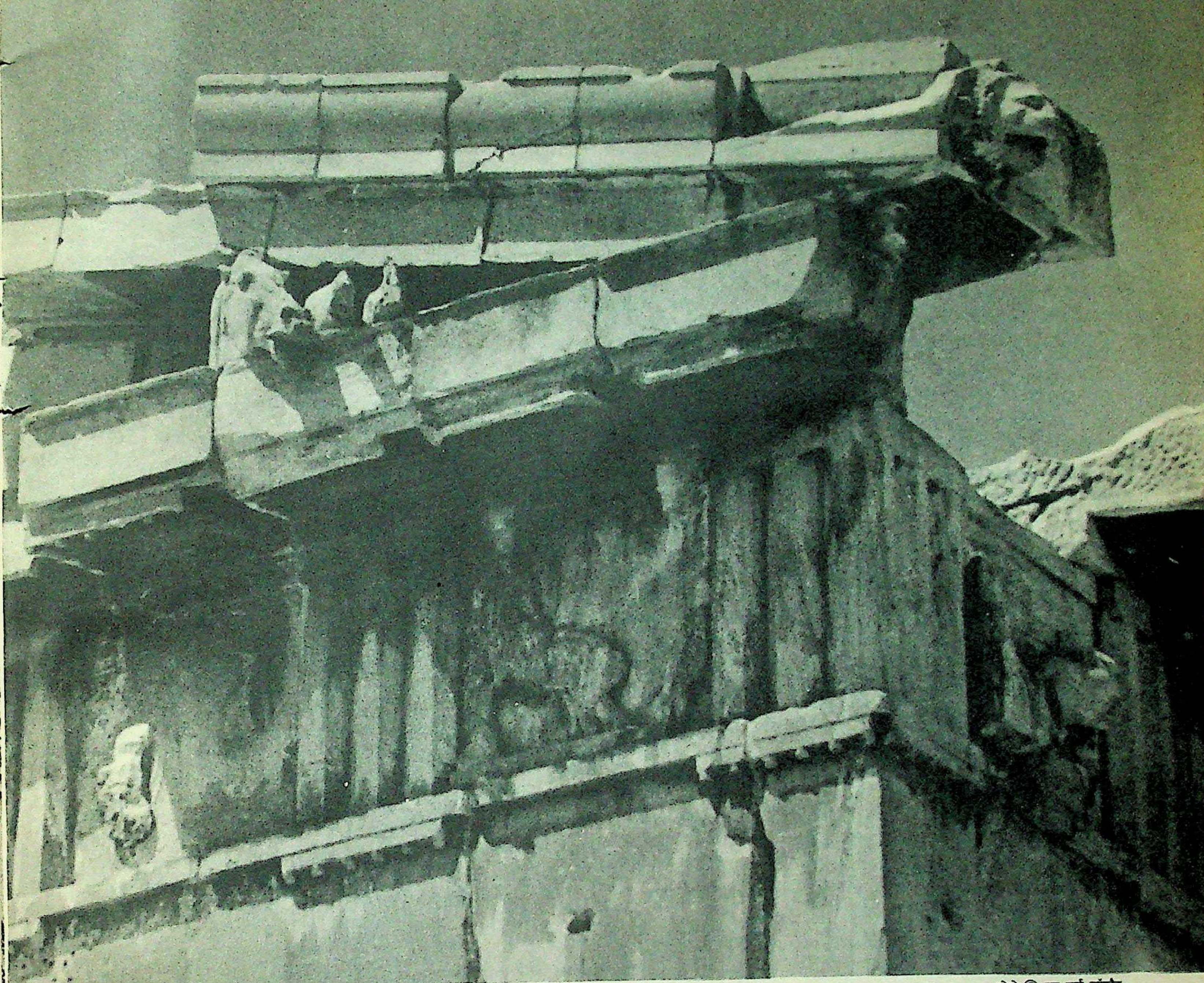
पार्थिनॉन ख़तरे में है। विश्वविख्यात यूनानी मंदिर धीरे-धीरे ढह रहा है और यदि इसकी रक्षा हेतु प्रभावकारी उपाय न किए गए तो इसके नष्ट हो जाने का ख़तरा है। यूनान का पुरातत्त्व विभाग, पार्थिनॉन के एक-एक पत्थर की जाँच करके स्थिति का सामना करने की तैयारी कर रहा है। इसके अतिरिक्त, यूनानी प्राधिकारियों के काम में हाथ बँटाने के लिए आगामी अक्तूबर मास में यूनेस्को का एक दल एथेंस जा रहा है। इस लेख में एक्रोपोलिस के निदेशक ने यूनानी वास्तुकला की अत्युत्कृष्ट कृति की वर्तमान दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत किया है।





फ़ोटो © सारोपियामिस-होमर सेबेल

कोर्निस के ढह चुके खंड से घिरा सैलीन का घोड़ा मानो चिल्ला-चिल्ला कर पार्थिनॉन के दुःख को व्यक्त कर रहा है जिसे आज नये संकटों का सामना करना पड़ रहा है। किसी समय पूर्वी द्वार-तोरण (दाईं ओर का चित्र) फ़िदियास तथा उसके अनुयायियों की स्थापत्य-कला द्वारा प्रदर्शित एथींना के जन्म-दृश्यों से सुसज्जित था (सैलीन के घोड़े की मूल प्रतिमा अब ब्रिटिश म्यूज़ियम, लंदन में है)। अपनी भग्नावस्था में भी पार्थिनॉन, अपनी सूक्ष्म रेखाओं, संतुलित अनुपात तथा पत्थरों की शुद्धता—अत्तीका का मुलायम और बारीक पर्तों वाला संगमरमर जिस पर समय ने हौले से एक सुनहरी चमक पोत दी है—के साथ अब भी संपूर्णता का साकार रूप प्रतीत होता है। बाएँ, बाहरी स्तंभावली में से कुछ स्तंभ। प्रत्येक दोरिक स्तंभ में 20 जोड़ हैं। इनकी औसत ऊँचाई 10 मीटर है, आधार का व्यास 1.9 मीटर है जो शीर्ष पर घट कर 1.5 मीटर रह जाता है। दृष्टि-विज्ञान संबंधी भ्रांतियों का यूनानी स्थापत्य-कलाविदों ने किस प्रकार निवारण किया, इसकी व्याख्या के लिए देखिए चित्र, पृष्ठ 18 तथा साथ की पाद टिप्पणी।



फ़ोटो © एल. बाई. लॉयरैट

दो हज़ार से अधिक वर्ष बीत चुके हैं, जब पार्थिनॉन का मंदिर बनकर तैयार हुआ और अंतिम कारीगर अपने औज़ार एकत्रित करके मंदिर से बाहर निकल गया। यह मंदिर ऐथीना का है जो एथींस की देवी थी। एक्रोपोलिस की ऊँची चट्टान पर स्थित, मंदिर का ताज़ा तराशा संगमरमर और शानदार रंगों से बनी हुई मूर्तियाँ उन दिनों ग्रीस की धूप में चमकती थीं।

आज भी इस सादा भव्य मंदिर का शिखर एथींस के आधुनिक व्यस्त शहर के ऊपर छाया किए हुए है। सैकड़ों वर्षों से यह मंदिर समय से जूझता रहा है और अपने (इसके) रूप के प्रति अंधे मनुष्यों के अत्याचार भी इसने सहे हैं।

मसीहा से 300 वर्ष पहले मैसिडोनिया के राजा डेमिट्रियॉज़ पोलियोरसिटीज़ ने अपने कर्मचारीवर्ग के साथ यहाँ डेरा जमाया था। छठी शताब्दी में ईसाइयों ने इसे गिरजे में और 15वीं शताब्दी में तुर्कों ने इसे मस्जिद में बदल दिया।

लेकिन सबसे बड़ा अनर्थ 1687 में हुआ। वेनिस के मुख्य मजिस्ट्रेट फ़्राँसेस्को मोरोसीनी ने ऐथींस को घेरा। उस समय शहर पर कब्ज़ा करने वाली तुर्की सेना ने पार्थिनॉन को बारूदख़ाना बना रखा था। बमबारी के समय एक गोला पार्थिनॉन पर पड़ा और बारूदख़ाना फट गया। दोरिक मंदिर के दो भाग हो गए और अन्य नुकसान भी हुआ। 1803 में लॉर्ड एल्गिन यहाँ से बहुत-सी मूर्तियाँ इंग्लैंड ले गए। ये मूर्तियाँ आजकल ब्रिटिश म्यूज़ियम में हैं।

टूट फूट के बावजूद पार्थिनॉन अभी तक ग्रीस के कई पुराने मंदिरों से अधिक सुरक्षित है। इसके ऊँचे ऊँचे स्तंभ अभी तक उस स्थान को घेरे खड़े हैं जो कभी ऐथीना देवी के "सेको" कहलाते थे। चित्रवल्लरी का एक भाग अभी तक अपने स्थान पर वर्तमान है। प्रस्तर पर कुछ मूल मूर्तियाँ भी अभी तक विद्यमान हैं।

1830 में जब ग्रीस स्वतंत्र हुआ, पार्थिनॉन के बचे भाग दो खंडहरों में बँटे थे—एक पश्चिम की ओर और दूसरा पूर्व की ओर। यह मंदिर अपने संरचनात्मक एकत्व को पुनः प्राप्त हुआ उस पुनर्नवीकरण के कार्य द्वारा जो ग्रीस की पुरातत्त्व सेवा ने उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में (विशेषतः 1922 एवं 1933 के बीच) किया।

मगर आज फिर पार्थिनॉन बड़े ख़तरे में पड़ा है। इसको फिर से बनाने में कई नई वस्तुएँ प्रयोग में लानी पड़ेंगी, और इनके फलस्वरूप जो चीज़ बनेगी वह पुनर्निर्मित कहलाई जाएगी, पुरानी

अगले पृष्ठ पर जारी

जॉर्जिस दोंतास एक्रोपोलिस तथा एक्रोपोलिस संग्रहालय के निदेशक और एथेंस के एक भाग में पुरावशेष-निदेशक हैं। पहले वे डोडेकानीज़ में पुरातत्त्व विभाग में थे। वे आयोनियन द्वीप-समूह में पुरावशेष-निरीक्षक तथा नेशनल म्यूज़ियम, एथेंस के निदेशक के रूप में भी काम कर चुके हैं। वे यूनानी स्थापत्य-शास्त्र तथा कला और ह्रोडेस, एथेंस तथा कॉर्फ़ू में पुरातत्त्व अनुसंधान पर कई अध्ययन-लेखों के रचयिता हैं।

एक्रोपोलिस को आहत करने वाली सात आपदाएँ

चीज नहीं। किसी पुराने स्मारक का पुनर्निर्माण, चाहे वह एक भाग का ही क्यों न हो, आजकल उचित नहीं माना जाता जब तक कि ऐसा करना अनिवार्य न हो।

पार्थिनॉन को अब सात ख़तरे हैं जो दो स्रोतों से पैदा हुए हैं: भवन की भीतरी कमजोरी से और बाहर से आनेवाले। ग्रीस के पुरातत्त्व-सेवा-विभाग ने इन दोनों तरह के ख़तरों का मुकाबला करने के लिए योजनाएँ बनाई हैं।

प्रथम, प्रश्न इसकी नींव का है। पार्थिनॉन चूने वाले कुछ नर्म से पत्थर पर स्थित है, जिसे टूफ़ा कहते हैं, और यह पत्थर बहुत समय तक नमी का मुकाबला नहीं कर सकता। कुछ समय पूर्व मंदिर के फ़र्श की संगमरमर की शिलाएँ बहुत स्थानों पर लापता थीं, जिसके कारण इसकी नींव तक वर्षा का पानी जाता रहा। शनैः-शनैः टूफ़ा पत्थर नर्म पड़ता गया और मंदिर की नींव कमजोर होती गई। अब फ़र्श की करीब-करीब सब शिलाएँ फिर से लगा दी गई हैं और जो रह गई हैं, वे शीघ्र ही लगाई जाएँगी।

सबसे बड़े ख़तरों में से एक ख़तरा है पार्थिनॉन के समतल पत्थरों के फ़र्श को जिसका कारण हजारों-लाखों दर्शकों के आते जाते पैरों का दबाव है। यह ख़तरा न केवल पार्थिनॉन को है, बल्कि एक्रोपोलिस के हर एक स्थल एवं पथरीले चबूतरे को भी है। जहाँ तक पार्थिनॉन का प्रश्न है, विश्वास किया जाता है कि अगर शीघ्र ही उपाय न किए गए तो उसके समानांतर रेखाओं के उभरे हुए भुकाव जल्दी ही नष्ट हो जाएँगे, विशेषकर उन जगहों पर जहाँ अधिक से अधिक ऊँचाई है (1)।

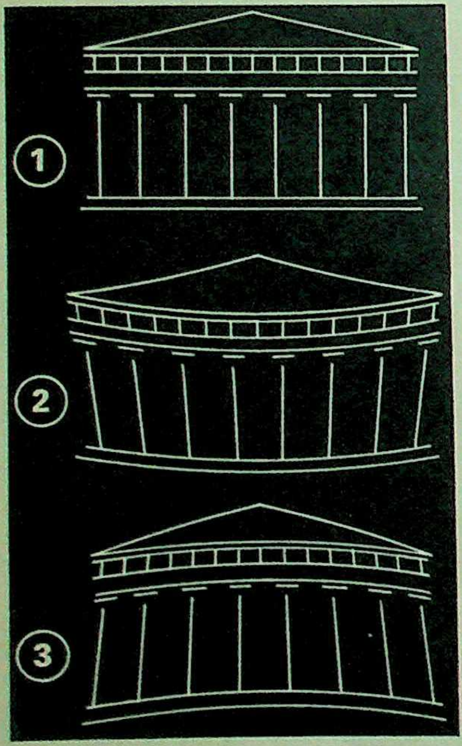
इस प्रश्न का एक समाधान यह हो सकता है कि मंदिर के अंदर यात्रियों का आना जाना बंद कर दिया जाए। सौंदर्य की दृष्टि से मंदिर का भीतरी भाग, बाहर सामने वाले भाग की अपेक्षा बहुत कम आकर्षक है क्योंकि पार्थिनॉन मंदिर की अब वह एकता नहीं रही जो उस समय थी जब इसके भीतरी कक्ष की दीवारें खड़ी थीं और जिसमें देवी की मूर्ति स्थापित थी। कक्ष के भीतर से यात्री बाहर का दृश्य स्तंभों की पंक्तियों के बीच से नहीं देख सकते थे। आजकल ग्रीस का पुरातत्त्व विभाग यात्रियों के अंदर जाने पर प्रतिबंध लगाने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है।

एक और प्रश्न, यथास्थान खड़ी मौलिक मूर्तियों का है: उन्हें हवाओं तथा मौसमों की हानियों से कैसे बचाया जाए? कुछ वर्ष पूर्व ग्रीस के पुरातत्त्व विभाग ने इसकी पश्चिमी चित्रवल्लरी को सुरक्षित रखने के लिए इसकी छत की मरम्मत करने की योजना बनाई थी। परंतु यह योजना इस भय से त्याग दी गई कि कहीं नये संगमरमर के टुकड़ों का भार इस भवन को ख़तरे में न डाल दे।

अब प्रस्ताव है कि हल्की सामग्री, जैसे लकड़ी या प्लास्टिक के टुकड़े प्रयोग में लाए जाएँ और भवन की मूल रेखाएँ यथावत् रखी जाएँ। फ़िलहाल, कुछ वर्ष पहले चित्रवल्लरी की आकृतियों को सीमेंट तथा सरेस आदि साधारण विधियों से ठीक किया गया है।

पार्थिनॉन की दो त्रिकोणिकाओं में जो मूर्तियाँ अभी तक मौजूद हैं उनकी समस्या अधिक गंभीर है। चित्रवल्लरी की आकृतियों से भिन्न, ये मूर्तियाँ ऐसे रखी गई हैं कि इनको सुरक्षित रखना कठिन है। मेरे विचार में इन्हें हटाकर अजायबघर में सुरक्षित रखना चाहिए और इनकी जगह नकल-प्रतिमाएँ रखी जानी चाहिएँ—ठीक वैसे ही जैसे

पृष्ठ 34 पर जारी



दृष्टि-विज्ञान संबंधी भ्रांति-निवारण पार्थिनॉन के पूर्वी अनुभाग की ये रेखा-आकृतियाँ प्राचीन यूनानी स्थापत्य कलाशास्त्रियों द्वारा, दृष्टि विज्ञान संबंधी भ्रांति निवारण के लिए, प्रयुक्त तकनीक को प्रदर्शित करती हैं।

1.—दर्शक के समक्ष मंदिर का रूप इसकी रेखाएँ पूर्णतया क्षैतिज अथवा ऊर्ध्वाधर प्रतीत होती हैं, यद्यपि वे वस्तुतः मुड़ी हुई और भुकी हुई हैं जैसे कि चित्र 3 में।

2.—मंदिर के अग्रभाग का वह रूप यदि दृष्टि विज्ञान संबंधी भ्रांति-निवारण के बिना, चित्र 1 के अनुसार, ही इसका निर्माण किया जाता।

3.—अंदर की ओर भुके ऊर्ध्वाधर अक्षों एवं स्तंभ-पंक्ति की उत्तल आधार-नींव, मेहराब की नक्काशी स्तंभोर्ध्व तथा चबूतरे सहित मंदिर का वास्तविक निर्माण जिसने इसे चित्र 1 का दृष्टिगत रूप प्रदान किया।

रेखा-आकृतियाँ सर बैनिस्टर फ्लेचर द्वारा लिखित तथा चार्ल्स स्क्रिबनर्स संस, न्यूयार्क, बी.टी. बैट्स्फोर्ड लि., लंदन, द्वारा 1948 में प्रकाशित पुस्तक "ए हिस्ट्री ऑफ़ आर्किटेक्चर ऑन दि कंपैरेटिव मैथड" से साभार।

(1) यह सर्व-विदित है कि पार्थिनॉन के निर्माण में कहीं भी सीधी रेखा नहीं है। यदि ऊपर को उठे किसी भवन का निर्माण पूर्णतया सीधी क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर रेखाओं से किया जाए तो यह दर्शक को बाहर की ओर मुड़ा हुआ तथा नीचे की ओर भुका हुआ प्रतीत होगा। दृष्टि-विज्ञान संबंधी इन भ्रांतियों के निवारण-हेतु यूनानी स्थापत्य कला के महान् युग में कई प्रकार की परिष्कार-पद्धतियों का प्रयोग किया गया। पार्थिनॉन इन परिष्कार-प्रयोगों का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। मेहराबों की नक़्क़ाशी, कार्निस तथा स्तंभपंक्ति की आधार-नींव (वह क्षैतिज आधार अथवा उपसंरचना जिस पर स्तंभ टिकते हैं) जैसी संरचनाओं की लंबी क्षैतिज रेखाएँ साधारण, अतिसूक्ष्म उत्तल रूपरेखा पर बनाई गईं। सीधी होने पर ये संरचनाएँ अपनी लंबाई के मध्य में बैठती या गिरती हुई दिखाई पड़तीं। पार्थिनॉन की स्तंभ पंक्ति की आधार-नींव मध्य में पूर्वी तथा पश्चिमी अग्रभाग पर 2.61 इंच तथा पार्श्व-अग्रभाग पर 4.39 इंच ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी। इसी प्रकार स्तंभों के ऊर्ध्वाधर शिखर ऊपर की ओर जाते हुए अंदर को मुड़े हुए थे जिससे कि बाहर की ओर संरचना के गिरने की भ्रांति का निवारण हो सके तथा आधार की ओर सूक्ष्म उत्तल मोड़ दिया जा सके ताकि सीधे स्तंभों के निर्माण से होने वाली खला का भ्रम दूर हो जाए (पश्चवर्ती भ्रांति निवारण को "स्तंभ-दंड की उत्तल रेखा" (एंटासिस) कहते हैं)। यह ज्ञात हुआ है कि पार्थिनॉन में नति इस प्रकार है कि यदि सभी स्तंभों के अक्ष बढ़ते ही चले जाएँ तो वे धरती से ऊपर एक मील की ऊँचाई पर आपस में मिल जाएँगे।

रंगीन पृष्ठ

सामने

रूसी कला की अत्युत्कृष्ट कृति—दीर्घकाल तक रूसी स्थापत्य तथा लोक कलाओं में सामग्री रूप में प्रयुक्त लकड़ी में खुदी पंद्रहवीं शताब्दी की यह देव-प्रतिमा मास्को के उत्तर पूर्व में 400 किलोमीटर दूर स्थित गैलिच से प्राप्त हुई है। यह नारियों, गृहस्थ जीवन तथा पर्वों की संरक्षिका, सेंट पारास्कियेवा का चित्र है जिसने अपने ये लक्षण प्राचीन स्लाविक देवी लाडा से उत्तराधिकारस्वरूप प्राप्त किए। असाधारण रूप से संरक्षित यह प्रतिमा इस समय गैलिच एथनोग्राफ़िकल म्यूज़ियम में है। स्मारकों तथा कलाकृतियों के पुनरुद्धार का यह विशालतम रूसी केंद्र मास्को में है। इस अनुसंधान संस्थान की स्थापना 1918 में यू.एस.एस.आर. अकादमी ऑफ़ साइंसिज़ के इगोर ग्राबर ने की जिसे 1949 में कलाकृतियों तथा सांस्कृतिक स्मारकों के परिरक्षण एवं पुनरुद्धार की तकनीकों के विकास और मूल्यांकन हेतु एक विशेष केंद्रीय परिषद् की स्थापना का श्रेय भी प्राप्त है। इसी प्रकार की परिषदें इस समय सोवियत संघ के 15 गणतंत्रों में हैं। भूतल के छठे भाग पर बसे इस देश में सर्वत्र फैले 10,000 ऐतिहासिक स्मारकों की देखभाल के लिए सोवियत संघ को भारी संख्या में निरीक्षकों तथा इतिहासविदों, पुरातत्त्वशास्त्रियों, स्थापत्य-कलाविदों और कारीगरों के विशेष दल प्रशिक्षित करने पड़े।

फ़ोटो © ए. पी. एन.

बीच के रंगीन पृष्ठ

थ्रासी-मक़बरे का भीतरी दृश्य—कज़ानलुक, बल्गेरिया, में उत्खनित एक थ्रासी मक़बरे के गुंबद पर लगभग 2,200 वर्ष पूर्व चित्रित यह भित्तिचित्र हैलिनिस्टिक युगीन थ्रासी सरदार के जीवन का सुस्पष्ट चित्र-अभिलेख है (देखिए पृष्ठ 35)। भोजन करने के साथ-साथ बाँसुरी-संगीत का आनंद ले रहे सरदार तथा उसकी पत्नी (बीच की आकृतियाँ) की वैभवशाली वेशभूषा, भव्य साज-सज्जा तथा भोजन-विधि उन परिष्कृत रुचियों को प्रदर्शित करती है जो इस सभ्यता ने दक्षिण-पूर्व यूरोप में प्राप्त की। (चित्र का फ़ोटो लेने के कारण) फ़ोटोग्राफ़िक दृश्याधार से भ्रष्ट, गुंबद के ऊपरी भाग में सईस कई अश्वसमूहों को चला रहे हैं। गुंबद की चोटी के इर्द-गिर्द का भित्तिचित्र रथों की दौड़ का है। इसके ऊपर गुंबद का ग्रेनाइट से बना ढक्कन देखा जा सकता है। भित्तिचित्रों की शैली तथा स्तर से प्रकट होता है कि वे यूनानी चित्र-पद्धति से प्रेरित किसी कलाकार की रचनाएँ हैं।

फ़ोटो—यूनेस्को का बल्गेरियन डेलिगेशन











बोरोबुदुर

जावा का भव्य पूजा कक्ष, संसार का विशालतम बौद्ध उन्चित्र-समूह निकटवर्ती विनाश के सम्मुख

ले. बर्नार्ड पी. ग्रॉसलियर

रंगीन पृष्ठ

ऊपर, बोरोबुदुर (इंडोनेशिया) के भव्य मंदिर के तीन ऊपरी चबूतरों पर जालीदार दीवारों वाले स्तूपों (घंटाकार वेदियों) के तीन क्रमबद्ध वृत्त हैं जो सभी के सभी एक विशाल स्तूप को घेरे हैं (चित्र में दाईं ओर प्रदर्शित)। प्रत्येक स्तूप में बुद्ध की एक प्रतिमा चिर-समाधि की मुद्रा में है। गत शताब्दियों में बहुत सी प्रतिमाएँ टूट-फूट गई हैं और यहाँ तक कि कला-विध्वंसकों ने कइयों के सिर तक तोड़ डाले हैं। अग्रभूमि में बुद्ध-प्रतिमा पर प्राकृतिक प्रभावों से रक्षा के लिए कोई स्तूप नहीं रहा। नीचे, छः किलोमीटर लंबी चबूतरे की समूची दीवार पर बने बसाल्ट के 1,460 उन्चित्रों में से एक, जो बौद्ध सृष्टि-विज्ञान की समृद्ध मूर्तिनिर्माण-कला को प्रकट करता है। चित्र में दर्शित आक्रामक कीच और काई, पाषाण-कार्य का अपक्षारण तथा विस्थापन समूचे मंदिर के लिए विनाशकारी हैं।

फ़ोटो © टोनी सॉलनियर

बर्नार्ड पी. ग्रॉसलियर कंबोडिया में अंगकोर के समीप सिएम रीप स्थान पर इकोले फ़ैंसाइस डि' एक्स्ट्रीम-ओरिएंट में पुरातत्त्व-विज्ञान अनुसंधान-अधिकारी हैं। अंगकोर में प्रमुख स्मारक-संरक्षक के रूप में इन्होंने इस विश्व-विख्यात स्थल पर कई वर्षों तक पुनरुद्धार तथा परिरक्षण कार्यक्रम का संचालन किया है। इस वर्ष इन्होंने डच भूगर्भशास्त्री सीज़रवाऊट के साथ बोरोबुदुर में वहाँ के विशाल मंदिर को हो रही क्षति के सर्वेक्षण के लिए एक यूनेस्को दल का नेतृत्व किया, और विनाश से इसकी रक्षा हेतु एक विस्तृत योजना बनाई। इन्होंने मध्य जावा में अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी अध्ययन किया और उनके पुनरुद्धार तथा विकास के लिए एक परियोजना प्रस्तुत की। इनकी दो पुस्तकों का अंग्रेज़ी में अनुवाद हो चुका है : "दि आर्ट ऑफ़ इंडोचाइना", मैथुएन, लंदन, 1962 ("इंडोचाइना" शीर्षक के अंतर्गत वर्ल्ड पब्लिकेशंस, न्यूयार्क तथा मुल्लर, लंदन, द्वारा 1967 में पुनर्मुद्रित); और "अंगकोर, आर्ट एंड सिविलिज़ेशन", प्रैगर, न्यूयार्क, 1966।

बोरोबुदुर जावा द्वीप के बीचोंबीच स्थित है—देवताओं के सिंहासनों सरीखी, बादलों से भी ऊँची, ज्वालामुखी पहाड़ियों से घिरा, बुद्ध के दया और शांति के अमर संदेश की मानव को याद दिलाता हुआ।

आठवीं शताब्दी में बोरोबुदुर संसार का सबसे बड़ा मंदिर था जिसे शक्तिमान् शैलेंद्र राजाओं ने बनवाया था। दक्षिणी समुद्रों के द्वीपों पर इन राजाओं का शासन था। आज भी यह मंदिर बुद्धमत के असाधारण चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है, जो भारत में जन्म लेकर पूरे एशिया में फैल गया और अंत में अपनी जन्मभूमि से उस समय समाप्त हुआ जब इसके बड़े भव्य भवन उन अन्य देशों में बनाए जा रहे थे जहाँ यह धर्म प्रचलित हुआ था।

बोरोबुदुर मंदिर जैसा शायद ही कोई स्थान होगा जिसे 'निष्ठा का कार्य' कहा जा सके। इसके 117 वर्ग मीटर के चबूतरे पर एक ही प्रकार की चार वेदिकाएँ हैं जो एक दूसरे के ऊपर छोटी होती हुई एक पिरामिड बनाती हैं। चबूतरे को सहारा देनेवाली दीवारें और चौकोर वेदिकाओं की दीवारें नक्काशी से भरी पड़ी हैं।

प्रत्येक वेदिका के चारों ओर चलने वाले रास्ते के साथ-साथ एक ऊँचा जँगला है, जो दोनों ओर मूर्तियों से विभूषित है। इनमें सबसे ऊपर बहुत सारे ताख हैं जिनमें चारों दिशाओं के स्वामी बुद्धों की मूर्तियाँ हैं।

इन वेदिकाओं के बीच की तंग सीढ़ियाँ चढ़कर जब यात्री इन खुली वीथियों में चलता है, तो उसे आकाश के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आता। वह संसार और संसार के प्रलोभनों से कट जाता है और इस प्रकार शिल्पी द्वारा खोदे गए संदेश पर वह अपना ध्यान केंद्रित कर सकता है। यात्री की दृष्टि जब ज़मीन से उठती है तो ऊपर उसे बुद्धों के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता जो आशा के प्रतीक बनकर खड़े हैं।

यह लंबी आध्यात्मिक यात्रा समाप्त करने के बाद यात्री ऊपर की तीन वेदिकाओं तक पहुँचता है, जो पूर्ण वृत्त बनाती हैं और सज्जाविहीन हैं। यहाँ 72 स्तूप हीरों के तिहरे मुकुट की तरह खड़े हैं, जिनकी नक्काशी के बीच से यात्री को बुद्ध की ध्यान-मग्न मूर्तियाँ दिखाई पड़ती हैं।

बोरोबुदुर के शिखर पर एक बड़ा स्तूप है जो ज़मीन से 40 मीटर ऊँचा है। इस खोखले तथा बंद स्तूप के भीतर केवल परम सत्य-निर्वाण है, जो सबके लिए अप्राप्य है, क्योंकि यह उसी क्षण प्राप्त होता है जब ज्ञानी इसे प्राप्त करने की चेष्टा त्याग देता है।

पग-पग पर यात्री अपनी आध्यात्मिक खोज में पत्थरों की इस सुमिरनी से प्रेरणा प्राप्त करता है। पिरामिड की असली आधार-शिला उभरी हुई मूर्तियों से विभूषित थी जिनमें सांसारिक इच्छाओं तथा भोग-विलास का चित्रण था। इन्हें पत्थरों के ढेरों से छिपा दिया गया है। यह कार्य समाप्त नहीं हो पाया। इस छिपाने के पीछे क्या कारण रहा होगा, यह अब वाद-विवाद का विषय बन गया है।

कुछ लोगों का कहना है कि यह दूसरी आधार-शिला भवन को धँसने से बचाने के लिए बनाई गई थी, कुछ इसको भिक्षुओं की दृष्टि से पाप छिपाने का पर्दा मानते हैं। छिपाने वाले ये पत्थर उन्हें उभरी हुई मूर्तियों के अस्तित्व की याद दिलाते हैं कि पाप कितना व्यापक ख़तरा है। एक और मत यह है कि किसी बाद में आने वाले राजा ने इस मंदिर की मरम्मत की होगी तथा इसे बढ़ाया होगा ताकि आसानी से इस कार्य के लिए उसे प्रसिद्धि मिले, जो इसके प्रतिष्ठाता को मिलनी चाहिए।

ऐसे बहुत से उदाहरण एशिया में पाए जाते हैं

अगले पृष्ठ पर जारी

पत्थर की भूलभुलैया, जीवन-तत्त्व से अनुप्राणित मूर्तियाँ, एक 'विश्वास-कृति'

और मैं समझता हूँ कि यह अंतिम मत ठीक है। जो भी कारण रहा हो, इस बाद में बनी दीवार के कारण हम बहुत सी मूर्तियों से वंचित रह गए हैं विशेषकर मूल स्थापत्य रूपरेखा से, जो आज की रूपरेखा से कहीं अधिक आकर्षक थी। अगर मरम्मत से बोरोबुदुर अपनी प्रारंभिक शान पुनः प्राप्त कर सके, तो यह कोई असाधारण कार्य नहीं होगा।

चार आयताकार वेदिकाओं की दीवारों पर अंकित है:--गौतम-बुद्ध की कथा, उनके पूर्व जन्मों की घटनाएँ जिन्होंने उनके बाद के जीवन को रूप दिया, उनके जीवन की महिमामयी कथा। इसके अतिरिक्त मनन के लिए बोधिसत्त्व सुधान का ऋषियों से मिलने का उदाहरण है। मैत्रेय की महान् दृष्टि का उदाहरण है जिन्होंने बाद में जाकर मानव का उद्धार किया। और अंत में हैं 32 बुद्ध निर्वाण प्राप्त करते हुए।

इस लंबी, आत्म संयम के रास्ते की, यात्रा के बाद, तीर्थयात्री ऊपर की वेदिकाओं के पवित्र स्थान पर आ पहुँचता है--एक ऐसे संसार में जिसका कोई रूप नहीं है और इसीलिए जिसमें कोई इच्छाएँ नहीं हैं। वह अपने आपको अधर में पाता है। जिस रास्ते से वह यहाँ तक पहुँचा है, वह स्थापत्य रूपरेखा की बारीकियों के कारण अब दिखाई नहीं देता। इस प्रकार यात्री अपने आपको संसार से असंपृक्त पाता है।

यात्री के चारों ओर प्रकाश का सागर है और उसकी दृष्टि क्षितिज पर उठती ज्वालामुखी पहाड़ियों पर पड़ती है। निकट ही, मगर-स्तूपों के झुटपुटे में काफ़ी दूर, बुद्ध ध्यानस्थ दिखाई देते हैं और उनके सामने, ब्रह्मांड पर छाया हुआ मध्य-स्तूप अप्राप्य सत्य को घेरे खड़ा है।

मूर्ति और आकार के अपूर्व संगम में मोक्ष की ओर जाती हुई पत्थर की भूलभुलैया--यह है बोरोबुदुर: संसार में सबसे विशाल तथा सबसे परिपूर्ण बुद्ध की उभरी मूर्तियों का संग्रह जिसकी कलात्मकता अद्वितीय है।

यह ऐंडिसाइट से बना है, जो नीली और भूरी, छिद्रयुक्त, खुरदरी ज्वालामुखी चट्टान है। इसके बावजूद जावा के शिल्पकार इसे गढ़ने में आश्चर्यजनक रूप से सफल रहे। रेखाएँ स्पष्ट और गहरी हैं और तीखी भी। छोटी से छोटी खुरदरी सतह भी प्रकाश को प्रतिबिंबित करती है।

उभरी मूर्तियों की बारीक गोलाइयाँ शरीरों और होठों में जान डाल देती हैं। जाति-वैज्ञानिकों की भाँति शिल्पकारों ने वस्त्रों तथा आभूषणों की छोटी से छोटी तफ़सील का ध्यान रखा है। संयोजन में बहुत सादगी तथा लावण्य है: छाया-नाटक के एक दृश्य की तरह कुछ व्यक्तियों का समूह और स्थान को स्पष्ट करता हुआ एक वृक्ष, एक पक्षी, अथवा एक फूल।

बौद्ध प्रतिमा-विज्ञान के कर्मकांडी और रूढ़ विषय जिन्हें इन सैकड़ों पत्थरों पर उतारा गया है, बहुत आसानी से एकरस हो सकते थे। किंतु मौलिक प्रतिभा तथा उत्साह से शिल्पकारों ने इन विषयों में इतनी विविधता ला दी है कि अन्दाज, भाव और मुख-मुद्रा के परस्पर प्रभाव से प्रत्येक दृश्य एक पृथक् श्रेष्ठ कृति बन गया है।

दक्षिणी गोलार्द्ध में बोरोबुदुर प्रत्येक दृष्टिकोण से सबसे बड़ा, सबसे प्राचीन और सबसे सुंदर स्मारक है। एशिया के सर्वोत्कृष्ट भवनों में इसे गिना जा सकता है: भारत में साँची और अजंता, कंबोडिया में अंगकोरवाट और बैआन, चीन की बड़ी दीवार, और जापान में होरियूजी का कोंडू। दक्षिण में पाई जाने वाली उत्कृष्ट कृतियों से इसकी तुलना की जा सकती है: पिरामिड से पर्सिपोलिस, पार्थिनॉन से पैंथीयॉन, सेंट सोफ़िया से चार्टरीज और सेंट पीटर।

मगर ऐसा भव्य स्मारक होते हुए भी बोरोबुदुर के नष्ट हो जाने का ख़तरा है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में जब इसकी पुनः खोज हुई, तब से इसकी रक्षा की जा रही है, विशेषकर 1907 और 1911 के बीच इसकी पर्याप्त मरम्मत हुई है। किंतु समय ने स्पष्ट कर दिया है कि यह मरम्मत अपर्याप्त थी और पिछले कुछ वर्षों में नाश की प्रक्रिया इतनी तीव्र हो गई है और ऐसा लगने लगा है कि यदि इसकी सुरक्षा के लिए उचित कदम न उठाए गए, तो यह नष्ट हो जाएगा।

एक पहाड़ी के शिखर पर बना हुआ यह मंदिर (जो आदर्श आधार नहीं है) वेदिकाओं की दीवारों से बना है, जो छोटे-छोटे प्रस्तर-खंडों से बनी हैं, जो आपस में ठीक बैठते हैं मगर जिन्हें जोड़ने के लिए किसी मसाले का प्रयोग नहीं किया गया है। मंदिर का भीतरी भाग सख़्त मिट्टी का है जो भवन के निर्माण के समय डाली गई थी।

भूमध्यवर्ती स्थान होने के कारण यहाँ वर्षा बहुत तेज होती है। यह वर्षा भवन में अगले भागों के जोड़ों, विशेषकर फ़र्शी पत्थरों में से होकर टीले की भीतरी मिट्टी को बहा ले जाती है। मिट्टी नरम पड़ जाने से दीवारें, जँगलों के बोझ के कारण, अत्यंत कमज़ोर स्थानों पर हिलकर बाहर की ओर झुक जाती हैं।

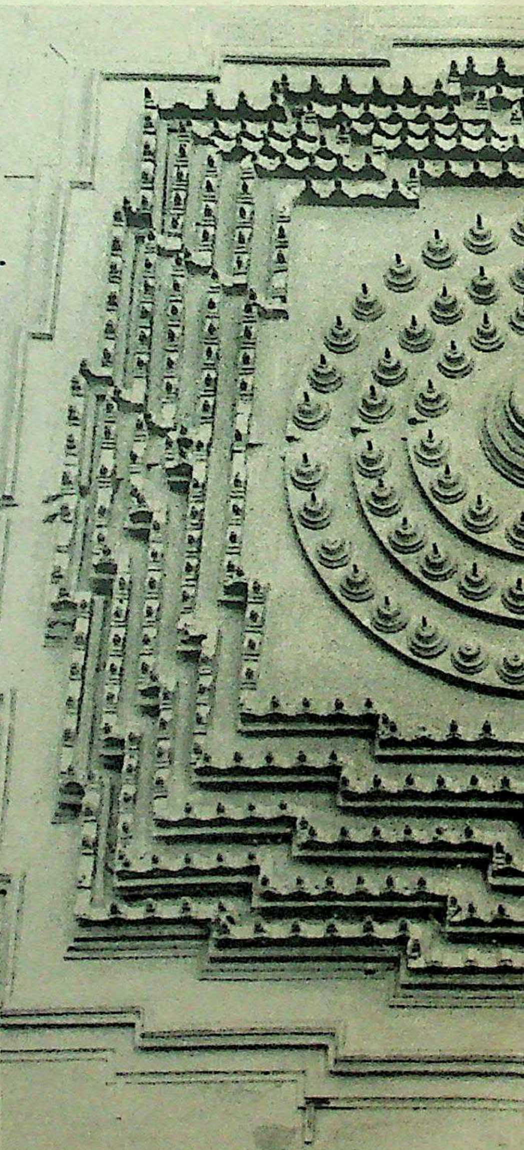
स्पष्ट है कि यह गति संपूर्ण भवन में होती है जो नीचे की ओर झरने की तरह तेज होती जाती है। इसके नीचे की वेदिका लगभग गिरने ही वाली है; वह अब तक गिर भी गई होती यदि इंडोनेशिया के पुरातत्त्व-सेवा-विभाग ने इस पर पड़ा हुआ भार कुछ जँगले गिराकर कम न कर दिया होता। यह कहना अनुचित न होगा कि यदि इसकी आधारभूत वेदिका गिर जाए, तो मिट्टी और मूर्तियों की अत्यंत भयंकर बौछार के साथ बोरोबुदुर का मंदिर नीचे आ बैठेगा।

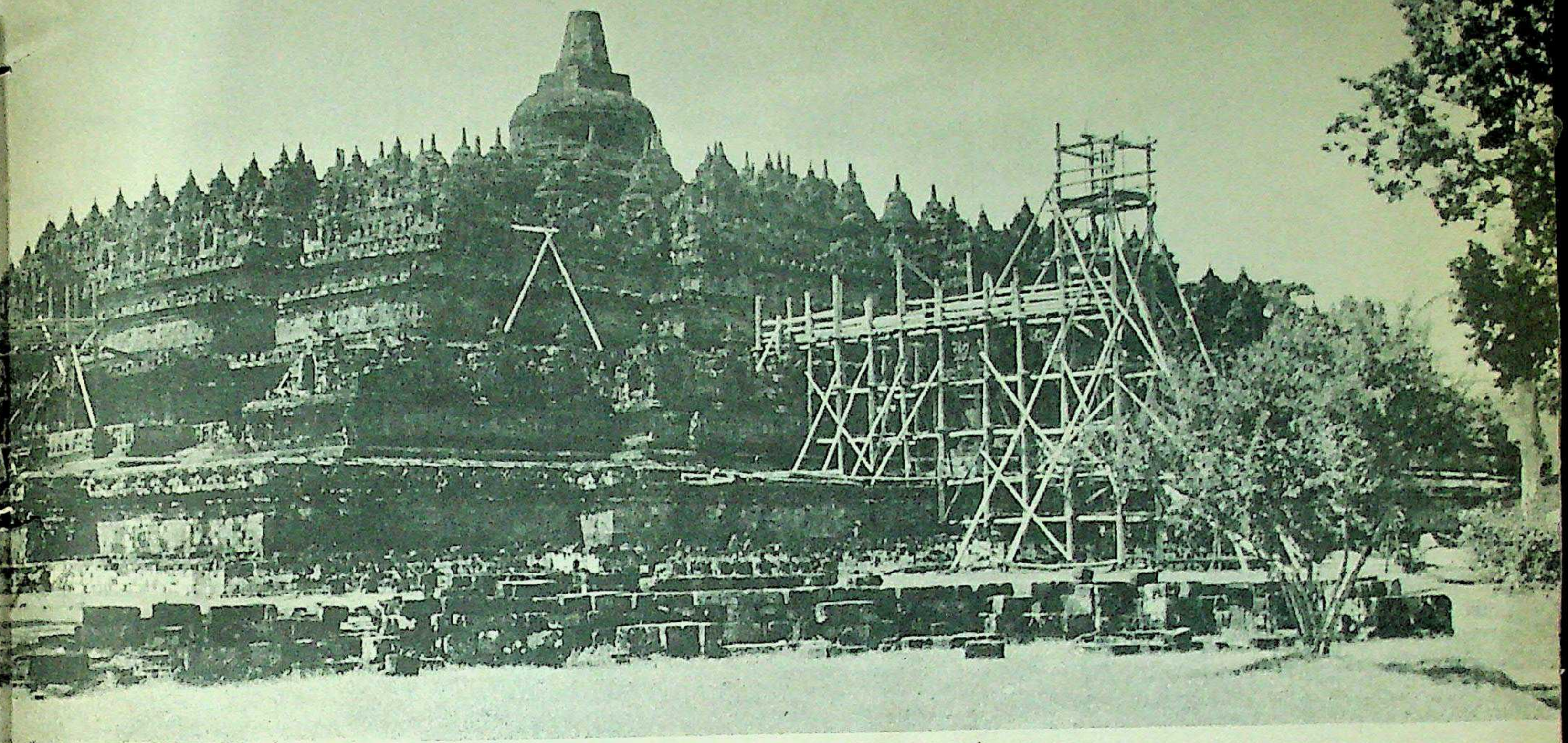
न केवल यह भवन, बल्कि इसकी सुंदरता से तराशी हुई अलंकृति भी ख़तरे में है। टीले के भीतर टपकने वाला पानी जमीन में बह नहीं

पृष्ठ 26 पर जारी

दक्षिणी गोलार्द्ध का निस्संदेह विशालतम तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्मारक बोरोबुदुर 1,100 वर्ष पूर्व मध्य जावा में पहाड़ी की एकचोटी के गिर्द बनाया गया था। यह अनुमान लगाया गया है कि इसके 20 लाख घन फुट पत्थर को काटने, लाने तथा स्थापित करने, 504 बुद्ध-मूर्तियाँ गढ़ने में एवं 2,500 वर्गमीटर उच्चित्रों तथा चौखटों के निर्माण कार्य में हज़ारों मजदूर, कारीगर और कलाकार बीसियों वर्षों तक काम करते रहे होंगे। नीचे, मंदिर का प्रतिरूप, जिससे आधारभूत स्थापत्य-लक्षण स्पष्ट हैं: मूर्तियों से भरी वीथियों वाले चार चबूतरे, 72 जालीदार स्तूपों का तिहरा मुकुट जिसके मध्य में भूमितल से 40 मीटर ऊँचा केंद्रीय स्तूप है। यहाँ हम देखते हैं कि किस प्रकार वृत्त (आकाश का प्रतीक) तथा वर्ग (धरती का प्रतीक) को मंदिर की प्राचीन रूपरेखा में मिला दिया गया है।

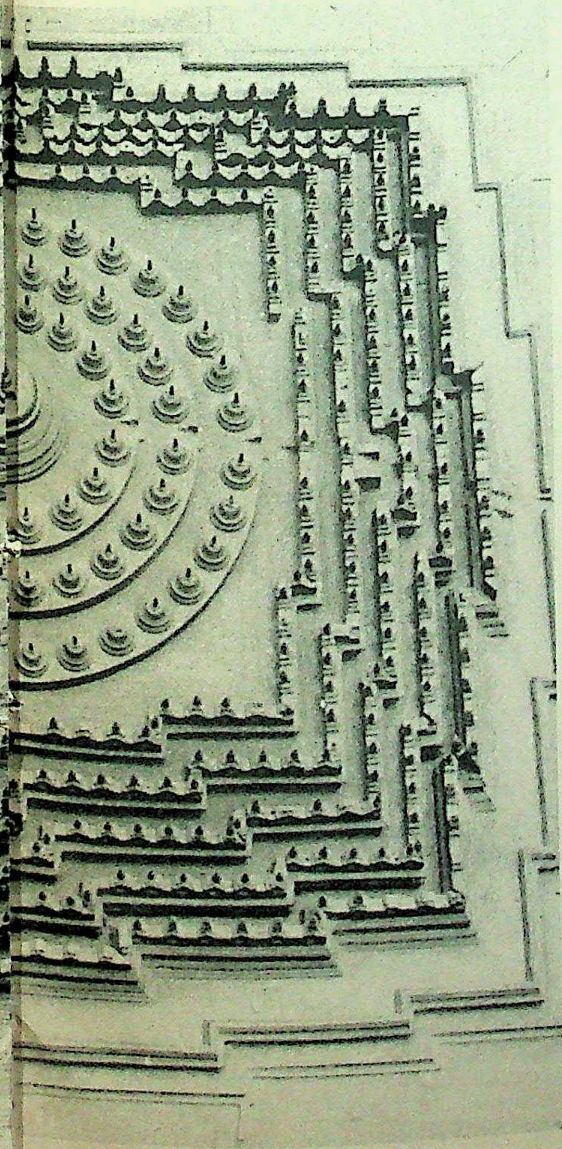






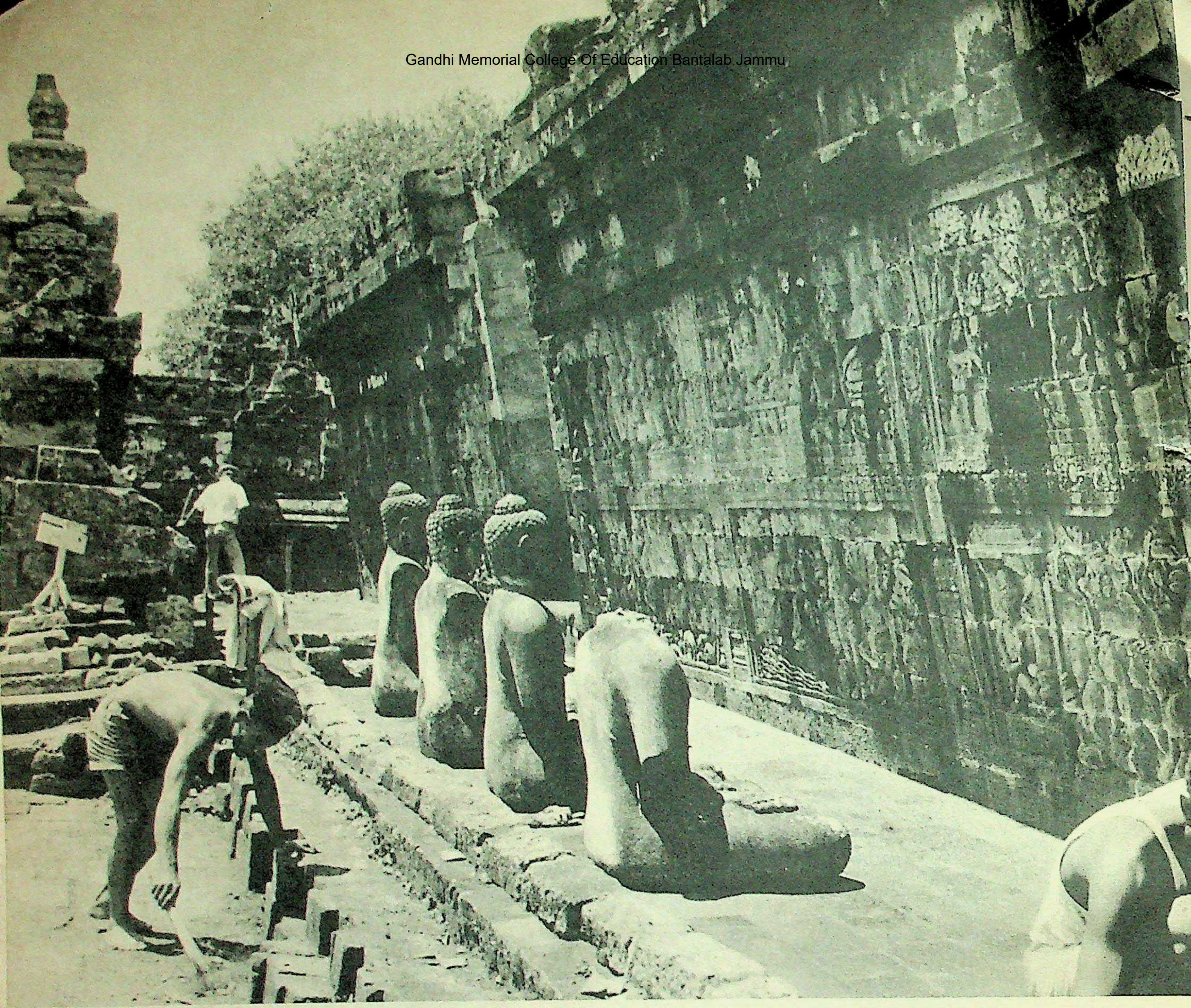
फ़ोटो यूनेस्को–टॉर जेस्डाल,

बोरोबुदुर की दूसरी मंज़िल के चबूतरे पर "दैवी संगीतकारों" के बसाल्ट-उच्चित्र पर क्षति के धब्बे स्पष्ट हैं। काले चत्ते उस स्थान की ओर संकेत करते हैं जहाँ बारिश के पानी ने अंदर रिसकर पत्थर का अपक्षारण कर दिया है। दाईं ओर की खुदाई प्रायः समूची ही अपक्षारण से प्रभावित है।





फ़ोटो © बर्नार्ड प्रॉसलियर



बोरोबुदुर (जारी)

सकता, इसलिए वह भाप बनकर ऊपर उठता है और इसके जोड़ों से तथा पत्थरों से (जो विशेषकर छिद्रल हैं), बाहर निकलता है।

नमी से कई भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तन हो रहे हैं जिनसे इसके चूर्ण-पत्थर टूट रहे हैं, विशेषकर उभरे हुए चित्र। इन पर कई तरह की काईयाँ उग रही हैं। नमी के कारण बहुत से कीड़े उत्पन्न हो रहे हैं, जिनसे इस मंदिर के विघटन की प्रक्रिया में तेजी आ रही है। इसके उभरे हुए चित्र पहले से ही नष्ट हो चुके हैं और जो कुछ गिरने से बचे हैं, वे भी उसी प्रकार मिट जाएँगे।

बोरोबुदुर को बचाना ही होगा चाहे यह कार्य कितना ही बड़ा क्यों न हो। संसार के विभिन्न भागों में भी प्रस्तरखंडों की मरम्मत तथा रक्षा के अनुभव सिद्ध करते हैं कि यह संभव है।

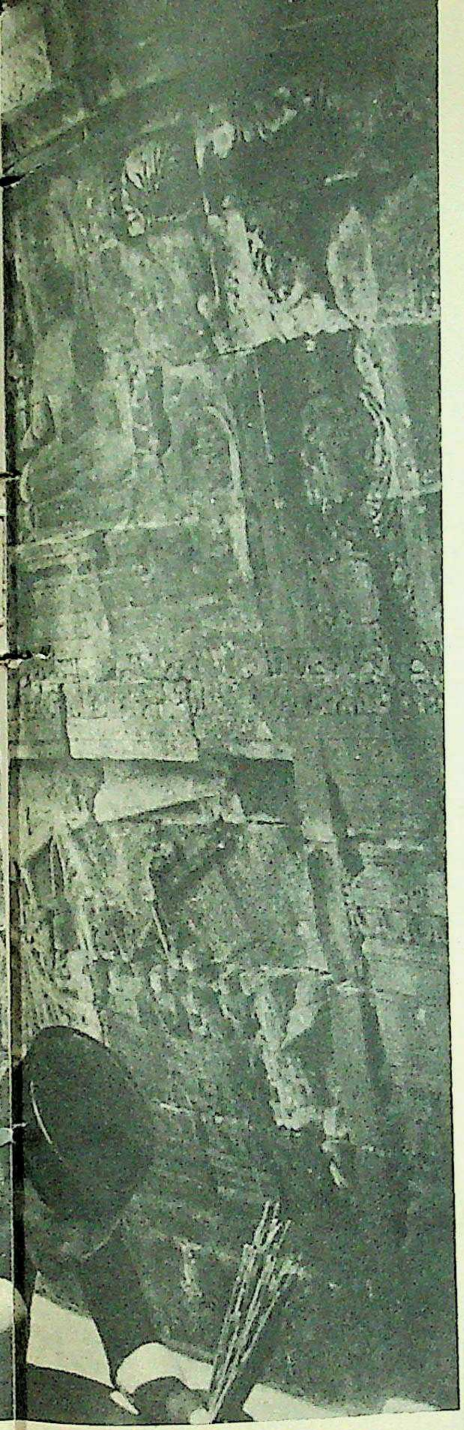
निश्चय ही यह बहुत बड़ा काम है। इसका एकमात्र हल यह है कि इस मंदिर को गिराकर एक-एक पत्थर करके फिर से बनाया जाए। इसका आधार सीमेंट-कंक्रीट से ऐसा बनाया जाए कि मंदिर का बोझ संपूर्ण आधार पर एक जैसा बँट जाए और इसे भूकंप का भय भी न रहे। सीमेंट-कंक्रीट का आधार पानी को अंदर जाने से भी रोकेगा और इस प्रकार पत्थर भी सुरक्षित रहेंगे। ऐसी जलनिकास-प्रणाली होगी जो वर्षा के पानी को कुछ नुकसान करने से पहले ही बहा ले जाए।

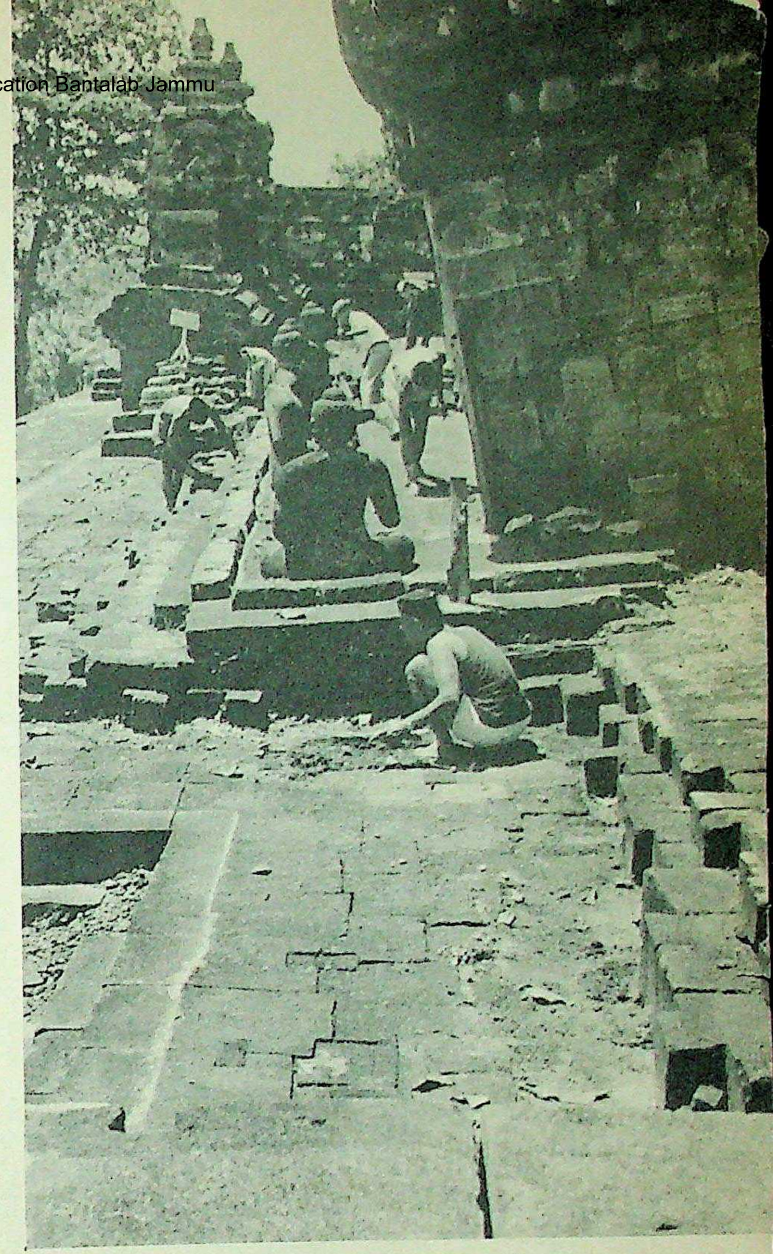
संक्षेप में बोरोबुदुर एक मिट्टी से भरे बाँध की तरह बनाया जाएगा जिसके भीतर पानी न जा सके। यह कार्य समाप्त होने पर उसकी रक्षा करने वाले भाग दिखाई नहीं देंगे और मंदिर अपनी पुरानी भव्यता पुनः प्राप्त कर लेगा। यदि इसकी आधार-शिला की बाहरी दीवार गिराकर उभरे चित्रों से पर्दा हटा दिया जाए, तो यह मंदिर फिर से अपना वास्तविक विराट् रूप प्राप्त कर लेगा। यह निश्चित है कि आधुनिक शिल्प-कला की सहायता से इन पत्थरों पर जलवायु का प्रभाव कम किया जा सकता है।

संकल्प और यथेष्ट साधनों के द्वारा बोरोबुदुर की रक्षा तकनीकी तथा वैज्ञानिक ढंगों से संभव हो सकती है।

इंडोनेशियाई प्रजातंत्र तथा इसकी योग्य पुरातत्त्व-सर्वेक्षण-सेवा यह मानती है कि बोरोबुदुर के नष्ट होने का खतरा अवश्य है। उनके ठोस प्रयत्नों के बावजूद उन्हें यूनेस्को के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से सहायता माँगनी पड़ी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि भूतकाल के इन महान् प्रसिद्ध संदेशों को सुरक्षित रखने के साधन मिल जाएँगे। मानव-जगत् को इस प्रकार के उच्च तथा निःस्वार्थ उद्देश्य की पूर्ति के लिए बहुत ही कम बार चेताया गया है।





अनिष्टकर ढलाव

ये चित्र स्पष्ट रूप से बोरोबुदुर की दुर्दशा व्यक्त करते हैं जहां पाषाण-विस्थापन से मिट्टी तथा मूर्तियों की भयंकर बौछार के रूप में मंदिर के ढह जाने का भय है। पहले चबूतरे (बाएँ तथा दाएँ) के साथ-साथ दीवारें ख़तरनाक रूप से झुकी हुई हैं तथा भव्य उच्चित्रों में पत्थर अलग हो कर खिसक रहे हैं। इस विनाश-प्रक्रिया को रोकने के लिए विशाल परिरक्षण-उपायों की तुरंत आवश्यकता है। दीवार की ओर मुँह करके रखी हुई बुद्ध-मूर्तियों को ताक़ों से हटाकर अस्थायी रूप से सुरक्षित रख दिया गया है।

फ़ोटो यूनेस्को-टॉर जोस्डाल



मंदिर के चारों ओर से एक-एक सीढ़ी ऊपर चोटी तथा बड़े स्तूप तक जाती है जिसमें "परम सौंदर्य" स्थित है। ताक़ों में रखी बुद्ध-मूर्तियों की दृष्टि में से गुज़रता हुआ दर्शक अब सीढ़ियाँ चढ़ता है तो वह मंदिर की स्थापत्य कला योजना और इसकी असंख्य मूर्तियों की सज्जा के प्रतीकों में बौद्ध मुक्तिमार्ग के सभी चरणों में से निकलता है। लौकिक अस्तित्व तथा आकांक्षाओं के क्षेत्र (निचले चबूतरे का आधार) से व्यक्ति रूप अथवा समाधि के क्षेत्र (बौद्ध-उच्चित्रों से युक्त चार वीथियाँ) में तथा अंततः भावी बुद्धों के स्वर्गलोक (झरीदार स्तूपों के मुकुट) में प्रवेश करता है।

फ़ोटो © बर्नार्ड पॉमलियर

दक्षिण भारत के भव्य मंदिर

सत्रहवीं शताब्दी में मदुरई (मद्रास राज्य) एक रियासत की राजधानी था जिसके शासक, तिरुमल नायक, जोकि प्रसिद्ध कला-संरक्षक था, ने विस्तृत मूर्तियों से अलंकृत एक स्थापत्य शैली को अपना नाम प्रदान किया। इसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं मदुरई में मीनाक्षी मंदिर के गोपुर (द्वार-स्तंभ)। नीचे का चित्र, सबसे ऊँचे गोपुरम् की चोटी से लिया गया है (आवरण पृष्ठ के अंदर का चित्र भी देखिए)। यह प्रवेश-द्वार के ऊपरी दैत्याकार निर्माण को प्रकट करता है और इसके नीचे स्वर्णकमलसर को जा रही सीढ़ियाँ हैं जिसमें यात्री पूजा-कक्ष में प्रवेश करने से पूर्व अपने पैर धोते हैं। मंदिर के दूसरे दो प्रवेश-द्वारों से परे मंदिर के अहाते को घेरे दीवार है तथा पृष्ठभूमि में मदुरई नगर है जो आजकल एक विशाल औद्योगिक केंद्र है। दाएँ चित्र में सहस्र स्तंभ-कक्ष है जिसमें से पूजा-कक्ष को जाने वाला यात्री-समूह गुजरता है। अग्रभूमि में एक-पाषाण-खंडीय स्तंभ पर की प्रतिमाएँ लौह-युग तथा पुरुष पर स्त्री के प्रभुत्वाधिकार की प्रतीक मानी जाती हैं।





फ़ोटो © रैफ़ो-सुई फ़ेडरिक



भारत का विशाल उपमहाद्वीप बहुमूल्य कलात्मक निधियों तथा स्मारकों से भरपूर है जो इसके बीस शताब्दियों से अधिक समय की दाय के प्रतीक हैं। भारत में एक दूसरे के पश्चात् भिन्न-भिन्न जातियों ने, दर्शन-शास्त्रों और धर्मों ने, अपनी-अपनी जटिल सभ्यताएँ स्थापित की जिन्होंने राष्ट्र पर एक अमिट छाप छोड़ दी है।

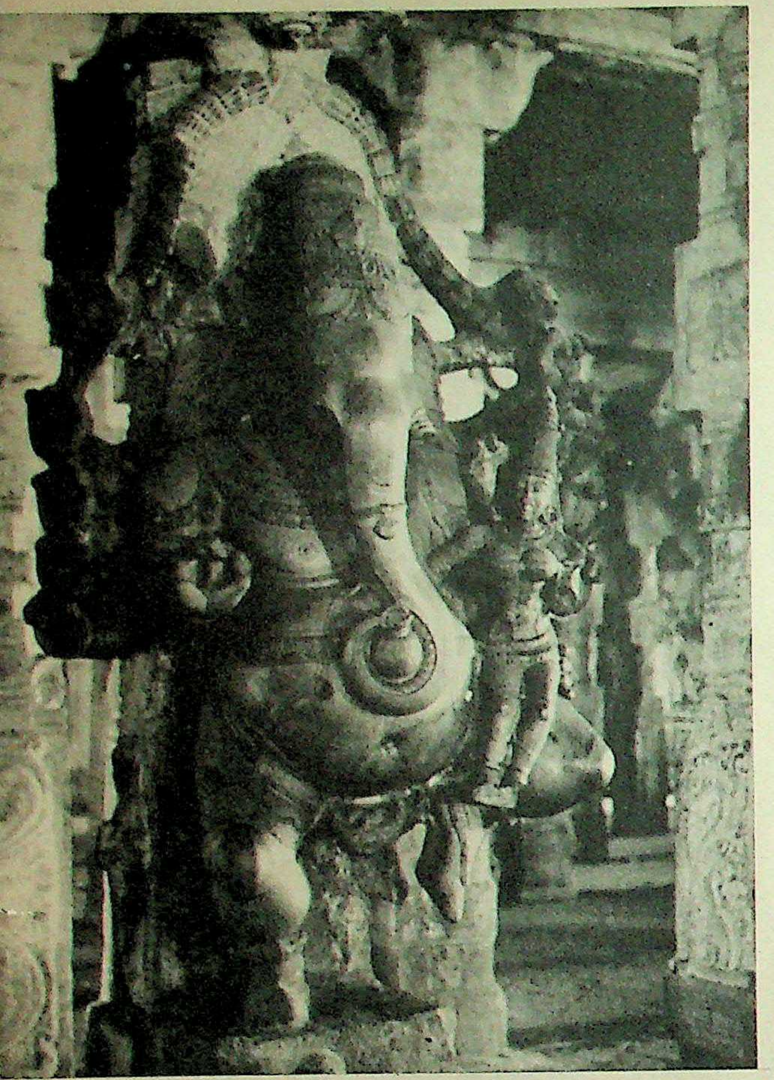
दक्षिण भारत के अनुपम कलात्मक मंदिरों की अपूर्व गरिमा ऐसे समृद्ध ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक विकास के परिप्रेक्ष्य में ही देखी जानी चाहिए। ब्राह्मण धर्म धारण करने के बाद दक्षिणी क्षेत्रों के द्रविड़ों ने ऐसा वास्तुशिल्प रचा जो भारत के उत्तरी क्षेत्रों से भिन्न था। उनके महान् मंदिर तक्षित-पत्थर के सजीव खंड हैं जो देवताओं तथा मनुष्यों के जीवन की कहानी कहते हैं।

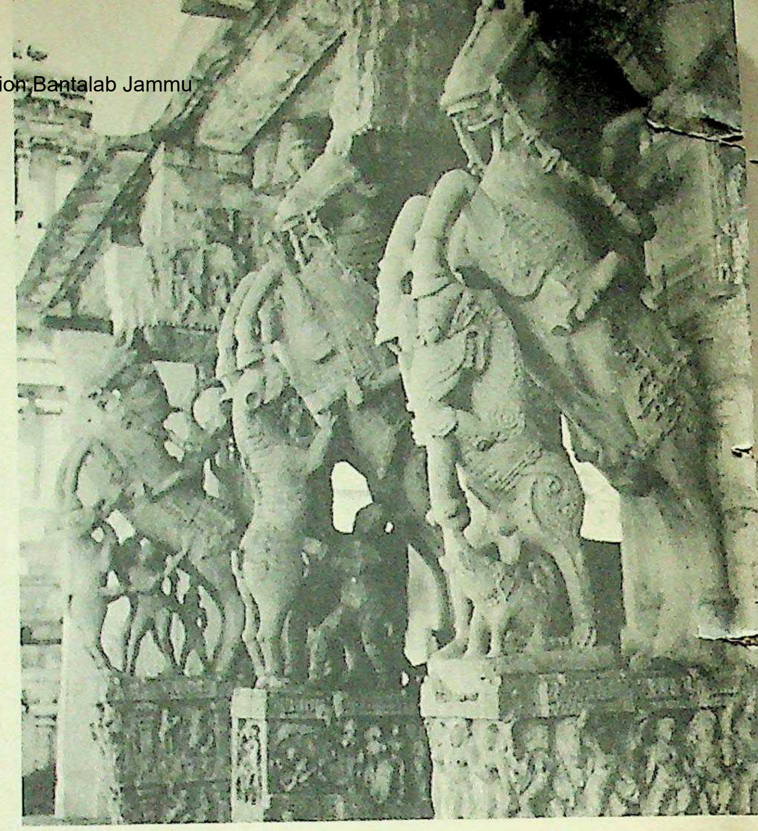
यह वास्तुशिल्प 11वीं शताब्दी में संपन्न तथा समृद्ध हुआ। जैसे-जैसे वर्गाकार मंदिरों के पवित्र स्थान, जो 'विमान' कहलाते हैं, ऊँचाई में कम होते गए, वैसे-वैसे मंदिरों के द्वार या गोपुर विशाल होते गए। 18वीं शताब्दी के अंत तक ये गोपुर गगनचुंबी बन गए (इन पृष्ठों और आवरण के भीतरी पृष्ठ के चित्र देखें)।

शिल्पकारों का सदैव यही प्रश्न रहा है कि अधिक से अधिक ऊँचाई प्राप्त की जाए। अतएव उन्होंने प्रस्तर का प्रयोग त्यागकर ईंट और लकड़ी के उपयोग से ऊँचे भवन को और ऊँचा किया तथा उन्हें सुंदर गचकारी आकृतियों तथा रंग-बिरंगे मूलभावों से अलंकृत किया।

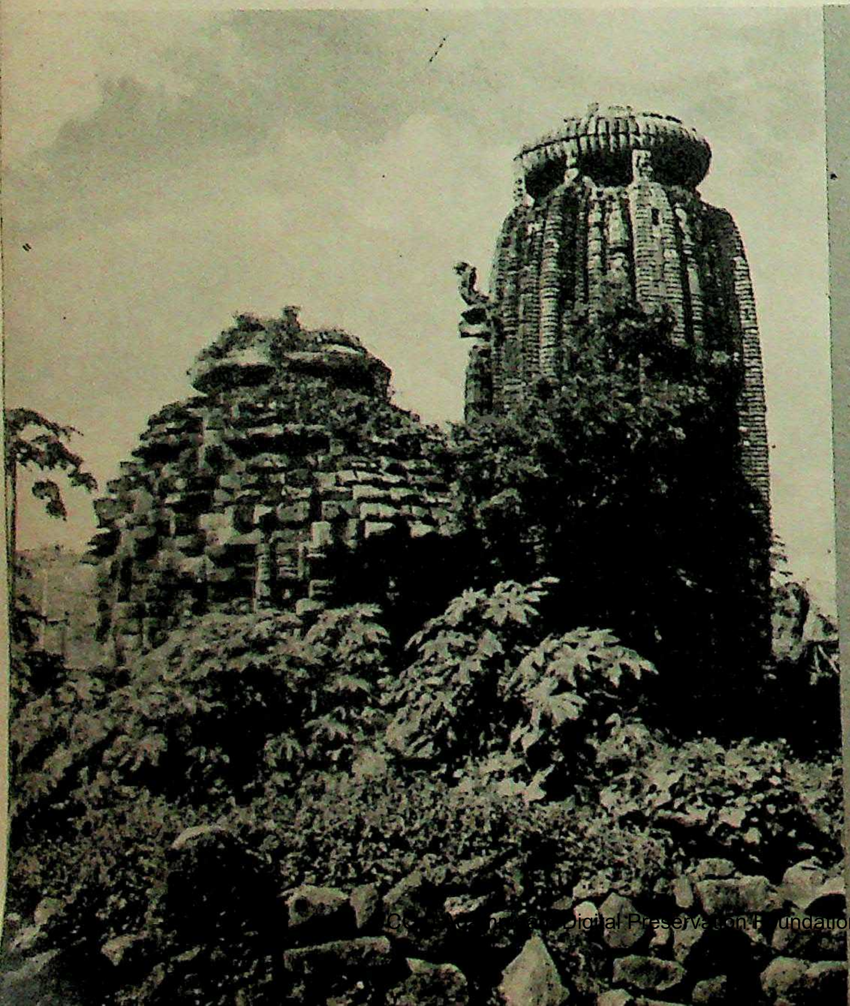
जैसे-जैसे धर्म में आस्था रखने वालों की संख्या बढ़ती गई वैसे-वैसे मंदिरों

पृष्ठ 32 पर जारी

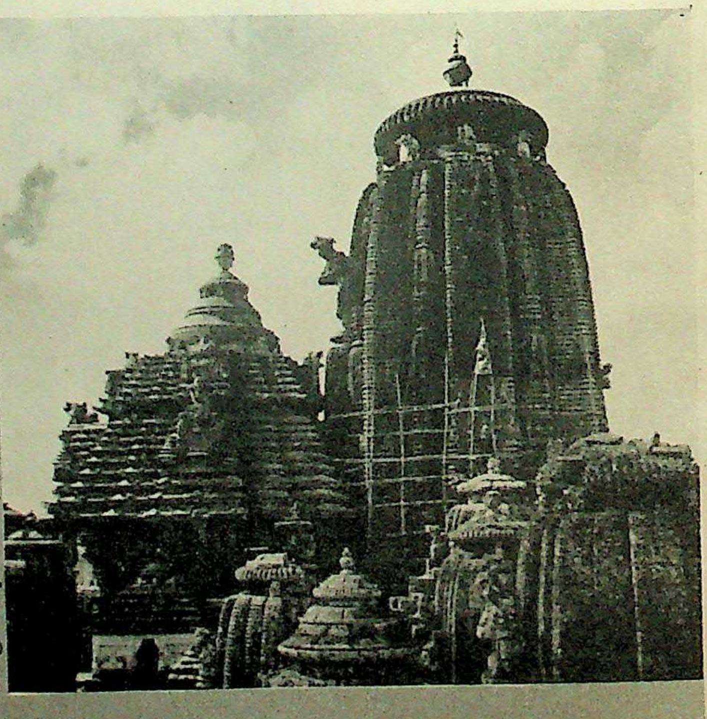




शिव के ज्येष्ठ पुत्र गजानन, गणेश मदुरई के मीनाक्षी मंदिर के पूजा-कक्ष में नृत्य-मुद्रा में (बाएँ)। अपनी जाँघ पर मीनाक्षी को बिठाए, समृद्धि के देवता गणेश की सूँड में सोने की थैली है। व्यापारी तथा यात्री वर्गों के पूज्य, सांसारिक बुद्धिकौशल के देवता गणेश-का सिर हाथी के सिर के रूप में चित्रित है जो इनकी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रतीक है। बहु-गुण-संपन्न होने के नाते इनकी बहुत अधिक पूजा होती है।



फोटो © रैफो–लूई फ्रैडरिक

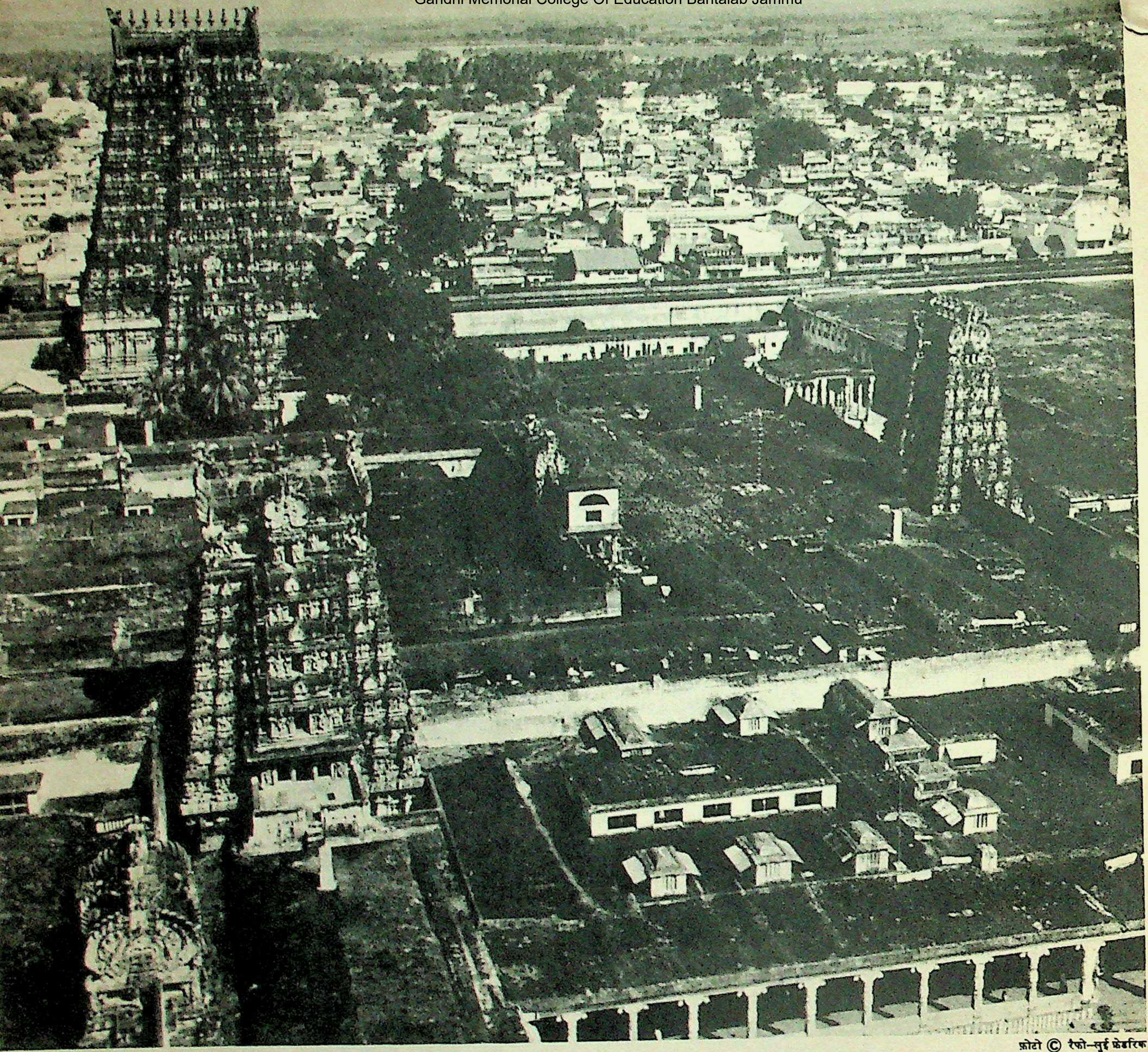


परिरक्षण तथा परित्याग ये चित्र परिरक्षण से पूर्व तथा परिरक्षण के पश्चात् एक ही मंदिर के नहीं हैं। बाईं ओर का बारहवीं शताब्दी का परित्यक्त तथा झाड़-झंखाड़ से भरा मंदिर, अब उपासनागृह नहीं रहा, यहाँ तक कि इसका नाम तक लोग भूल गए हैं। इसी काल का दाईं ओर का मंदिर बड़े ध्यान से सुरक्षित रखा गया है। दोनों मध्य भारत के पूर्वी तट के निकट उड़ीसा राज्य में भुवनेश्वर में हैं। यहाँ प्रदर्शित वक्ररेखावेष्टित स्तंभ उड़ीसा–स्थापत्य शैली के विशिष्ट नमूने हैं जिनका आठवीं तथा तेहरवीं शताब्दी के बीच उत्थान हुआ।

भारत के मद्रास राज्य में श्रीरंगनाथस्वामी का विशाल मंदिर शताब्दियों क्षतिग्रस्त रहा है। भारत सरकार की प्रार्थना पर 1966 में एक यूनेस्को दल ने मंदिर की क्षति का सर्वेक्षण किया तथा इसके परिरक्षण के लिए सुझाव तैयार किए। संगमरमर के चूने के पलस्तर में से रिसनेवाले पानी तथा तापमान की अत्यधिकता तथा अतिन्यूनता ने भारी संख्या में संरचनाओं को हानि पहुँचाई है; पाषाण–"रोग" ने मूर्तियों के चेहरे बिगाड़ दिए हैं तथा कई छतों में दरारें पड़ गई हैं। विज्ञापनों, विज्ञापन-पट्टों तथा बिजली और टेलीफ़ोन की लाइनों ने कई मंदिरों का रूप भ्रष्ट कर दिया है। नीचे, मंदिर का एक प्रवेशद्वार-स्तंभ, जिस पर बनी असंख्य मूर्तियाँ विष्णु-पुराण की घटनाओं को वर्णित करती हैं। अलफ़-मुद्रा में घोड़ा (दाएँ, अग्रभूमि में) प्रसिद्ध "अश्वारोहियों की राजसभा" का भाग है। बाएँ, इसी सभा में अन्य अश्वारोहियों की प्रतिमाएँ तथा स्थापत्य शिल्प की अन्य आदर्श कृतियों का समूह, जिसे प्रकृति-प्रकोप तथा मनुष्य से क्षति का भय है।

फ़ोटो © रैफो–लुई फ्रेडरिक





फ़ोटो © रैफो-लुई फ्रेडरिक

मीनाक्षी मंदिर के तीन ऊँचे प्रवेशद्वार मदुरई (मद्रास राज्य) के इस विराट् दृश्य में क्षितिज पर छाए हैं। दक्षिण भारत में मंदिर-स्थापत्य शिल्प के विशिष्ट नमूने ये शुंडाकार स्तंभ 50 मीटर तक ऊँचे हैं। गुआतेमाला में प्राचीन माया मंदिरों के पिरामिडों के साथ इनकी समानता आश्चर्य-जनक है। सामने के चित्र में तिकाल का माया पिरामिड है जो 50 मीटर ऊँचा है।

दक्षिण भारत के भव्य मंदिर

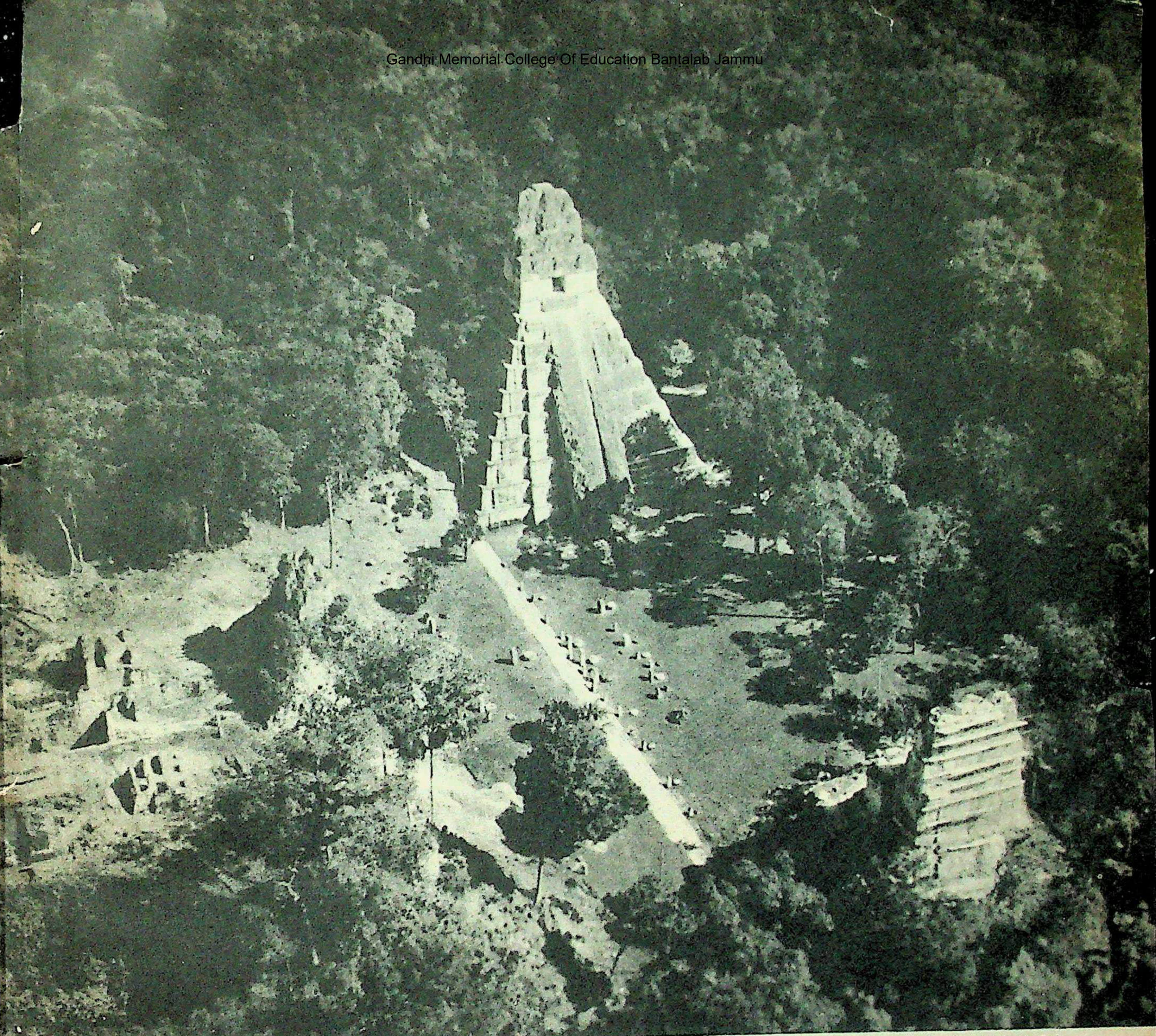
(पृष्ठ 29 से जारी)

का आकार भी बढ़ता गया। उनके अहाते बढ़ते गए और गोपुर भी संख्या में अधिक होते गए। इस प्रकार वह स्थान भी मंदिरों के घेरों में आ गया, जहाँ गलियाँ और मकान थे, जैसा श्रीरंगम् में हुआ है, जहाँ श्रीरंगम्-स्वामी, जिसे 'मंदिरों का शहर' कहते हैं, के सात अहाते हैं और 21 गोपुर।

इस अति विशाल भवन का निर्माण तिरुचिरापल्ली (मद्रास राज्य) में दो नदियों के बीच संभवतः दसवीं शताब्दी में आरंभ हुआ। आज इस भवन और इसकी मूर्तियों में भग्नावस्था के चिह्न स्पष्ट हो रहे हैं।

भारत सरकार के अनुरोध पर यूनेस्को ने इस बात की मौके पर जाँच की है कि इस मंदिर की मरम्मत और रक्षा कैसे की जाए। यह भारत के सबसे बड़े मंदिरों में से एक है (इसकी चार-दीवारी की परिधि चार मील है)। शायद यह नगर विजयनगर राजवंश (1350–1565) की शिल्प-कला का सबसे अच्छा नमूना है। पत्थरों के अखंड स्तंभ, मूर्तियों एवं नक्काशी से सुशोभित हैं (पृष्ठ 30–31 पर चित्र देखें)।

दक्षिण भारत के कई अन्य मंदिरों की मरम्मत भी आवश्यक है। इनमें दसवीं शताब्दी का तंजौर का बृहदीश्वरार मंदिर भी है, जिसकी मुख्य मूर्ति 27 मीटर ऊँची है और जिसके ऊपर अष्टभुजी गुंबद है जो 80 टन वज़न वाले एक ही पत्थर से बना है। आपत्काल में कावेरी नदी के तट पर बना यह मंदिर न केवल पूजा के लिए बनाया गया था, वरन् एक गढ़ी भी था जिसके भीतर संकटकालीन स्थिति में जनसंख्या (जनता) शरण पा सकती थी।



फ़ोटो © विलियम आर. को. "ऐक्सपेडिशन", दि बुलेटिन ऑफ़ दि यूनिवर्सिटी
म्यूज़ियम ऑफ़ दि यूनिवर्सिटी ऑफ़ पैंसिलवेनिया यू. एस. ए. के सौजन्य से।

गुआतेमाला के भव्य मंदिर

एक विशाल माया सभ्यता के शहर (तिकाल) के खंडहर
1853 में गुआतेमाला के बनों के भीतर पाए गए। तिकाल एक ऐसी
बड़ी सभ्यता का दर्शनीय केंद्र है, जो केंद्रीय अमरीका में अनेक शताब्दियों
पूर्व फैली हुई थी और जिसका उद्गम अभी तक रहस्य का विषय है। इसका
उद्गम तीसरी या चौथी शताब्दी से पूर्व का नहीं माना जाता था, परंतु
तिकाल में पाई गई नई खोज से ऐसा मालूम होता है कि यह इससे भी पहले
के काल का है। 1956 से जब गुआतेमाला की सरकार तथा पैंसिलवेनिया–
विश्वविद्यालय ने मिलकर खुदाई और मरम्मत का कार्यक्रम आरंभ किया,
तो उष्णकटिबंधीय वनों में दबे इस नगर की भव्यता धीरे-धीरे प्रकट होने
लगी। इन बनों को साफ़ करने और मलबे को हटाने से, जो एक हज़ार वर्ष
से तिकाल को छिपा रहे थे, पता चला है कि माया के निवासियों का गणित
ज्योतिष, वास्तुकला तथा कलात्मक रचनाओं का ज्ञान कितना विस्तृत था।

इस 16 वर्ग किलोमीटर में फैले शहर में 3000 मंदिर, स्तंभावलियाँ, मेहराबें, नृत्यभवन तथा वेधशालाएँ इत्यादि निकली हैं। सबसे अधिक प्रभावशाली पिरामिड के आकार के बड़े-बड़े मंदिर हैं जो लाइमस्टोन के बने हैं और 47 से 70 मीटर तक ऊँचे हैं। चित्र में एक नौ मंज़िलों वाला मंदिर दिखाया गया है जिसे 1957 में खोजा गया है। इसकी सीढ़ी जो अभी तक टूटी नहीं है, ज़मीन से 47 मीटर ऊँचे मूर्ति-स्थल तक जाती है। तिकाल के पिरामिड उसके चारों ओर फैले एल-पीटन जंगल के वृक्षों से ऊँचे हैं। इस पुराने शहर में खोदे गए, बहुत से भवन 500 और 900 ईसवी के बीच के "क्लासिक"—काल के बताए जाते हैं, जब माया सभ्यता अपने शिखर पर थी। परंतु मंदिर की नींव में बने हुए चबूतरों से पता चलता है कि यहाँ पर लोग 600 ईसवी पूर्व से रहते थे। पैंसिलवेनिया-विश्वविद्यालय के पुरातत्त्वज्ञ विलियम आर. को. का कथन है कि तिकाल एक हिम-शैल की तरह है; इसका दिखाई देने वाला भाग छिपे हुए भाग की तुलना में बहुत कम है।

पार्थिनॉन ख़तरे में (पृष्ठ 18 से जारी)

पूर्व की त्रिकोणिका की मूर्तियों को उतार कर ब्रिटिश म्यूज़ियम में भेज दिया गया था।

इससे भी जटिल समस्या मेटोपों की है। ये मेटोप खुदाई किए हुए संगमरमर के टुकड़े हैं जो पार्थिनॉन की छत के झुकाव को त्रिकोणिका के नीचे सहारा देते हैं। यहाँ से हटाकर उनकी जगह नकल-प्रतिमाएँ रखने का कार्य इतना नाज़ुक है, कि इन्हें अपनी जगह रहने देना ही उचित होगा। इनको सुरक्षित रखने का काम भी सारे मंदिर की सुरक्षा-योजना में शामिल कर लेना चाहिए।

मंदिर को अन्य भी कुछ ख़तरे हैं। एक हानि उस लोहे के शिकंजों के कारण है, जो पत्थरों को जोड़ने के लिए निर्माण के समय प्रयोग में लाए गए थे, या बाद में मरम्मत के वक्त पत्थरों को एकत्रित करने में इस्तेमाल हुए हैं। लोहे के इन शिकंजों पर समय ने इतना जंग लगा दिया है, है, कि अब ये बिल्कुल बेकार हो गए हैं। ये लोहे कहीं-कहीं फैल गए हैं, जिससे संगमरमर टूट गया है। इसलिए आवश्यक है कि इन पुराने शिकंजों को निकाल कर काँसे अथवा अन्य किसी जंग न लगने वाली धातु के शिकंजे प्रयोग में लाए जाएँ। यह एक बहुत बड़ा काम है जो अभी-अभी आरंभ हुआ है, और जिसे पूरा करने में कई वर्ष लगेंगे।

संगमरमर में अनगिनत दरारें—जो कि 1687 के विस्फोट के कारण आई अथवा जो समय के प्रभाव से उत्पन्न हुई—एक गंभीर समस्या बन गई हैं। इन दरारों के बीच से पानी अंदर चला जाता है और सर्दियों की रातों में पानी जम कर फैल जाता है और पत्थरों के टुकड़े कर देता है।

पानी जमने वाले इन दिनों की सुबहों को हमारे लोग चारों ओर घूमकर संगमरमर के टुकड़े इकट्ठे करते हैं और यह नोट करते हैं कि वे टुकड़े कहाँ के हैं, अथवा कहाँ गिरे हैं। बाद में इनको और लोहे के शिकंजों से छूटे टुकड़ों को फिर से चिपकाया जाता है। आजकल इन दरारों को बंद करने के प्रयत्न जारी हैं, ताकि इस प्रकार के नुकसान कम हो जाएँ।

पार्थिनॉन को सबसे बड़ा ख़तरा मौसमों के बदलने के कारण पत्थरों के विच्छेदन का है। वैसे तो यह ख़तरा किसी भी स्मारक पर कम या अधिक लागू हो सकता है, परंतु पार्थिनॉन को अधिक ख़तरा इसके संगमरमर के कैल्सीकरण के कारण है। यह कैल्सीकरण (जिसे पार्थिनॉन का रोग कहा जाता है) आग तथा मौसम के कारण हुआ जिसे यह मंदिर सैकड़ों वर्षों से सह रहा है। इसके साथ ही उन कारख़ानों के धुएँ से इसकी बर्बादी और अधिक हो गई है जो एथींस के चारों ओर स्थापित हो रहे हैं।

प्रश्न यह है कि ऐसी धीरे-धीरे हो रही बर्बादी की प्रक्रिया को कैसे रोका जाए? इसका उत्तर एक यह हो सकता है कि पार्थिनॉन के संगमरमर की सारी सतह को किसी पारदर्शक झिल्ली से ढक दिया जाए जो इसे वायुमंडल के प्रभाव से बचा सके। परंतु यह उपाय भी ख़तरे से ख़ाली नहीं है। यदि झिल्ली सख़्त हुई तो संभव है कि वह संगमरमर को ही खा जाए और पत्थरों के टुकड़े शीघ्र कर दे। यह भी संभव है कि झिल्ली के प्रयोग से स्मारक की सुंदरता नष्ट हो जाए तथा संगमरमर के असली रंग भी बदल जाएँ।

अंतिम निर्णय पर पहुँचने से पहले इसकी अच्छी प्रकार जाँच-पड़ताल करने की आवश्यकता है। इस समय रासायनिक रीतियाँ उन संगमरमर के टुकड़ों पर प्रयोग में लाई जा रही हैं, जो एक्रोपोलिस में पाई गई, और पार्थिनॉन से प्राप्त हुई हैं। परंतु मुझे खेद है कि आज तक ऐसी अनोखी चीज़ खोजी नहीं जा सकी जिससे कोई नुकसान न हो, और पूरी सुरक्षा हो सके। कुछ चीज़ें जो इधर बाज़ार में आई हैं और जिनका प्रयोग किया गया है, या तो व्यर्थ पाई गई या हानिकारक सिद्ध हुई हैं।

अंत में एक नई समस्या जेट वायुयानों और हैलिकॉप्टरों द्वारा पार्थिनॉन के ऊपर उड़ान करने की है। इन वायुयानों का कंपन इतना प्रबल है कि इससे भय है कि संगमरमर के टुकड़े ढीले पड़ जाएँगे अथवा पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़ों की स्थिरता को हानि पहुँचेगी। इस ख़तरे के विषय में अधिकारियों को सावधान कर दिया गया है और इन उड़ानों को बंद करने के लिए कहा गया है।

समय और मनुष्य के हाथ ने पार्थिनॉन मंदिर पर गहरे ज़ख़्म बना दिए हैं, जिनका निरंतर ध्यान रखने की आवश्यकता है। ग्रीस के पुरातत्त्वज्ञ इन ज़िम्मेदारियों के प्रति पूर्णतया सजग हैं और वे अपनी ओर से इस सुंदर कलात्मक स्मारक को मानव के लिए सुरक्षित रखने के लिए पूरी तरह से प्रयत्नशील हैं।

यूरोप की सांस्कृतिक दाय की रक्षा

यूरोप की सांस्कृतिक दाय को समृद्ध बनाने वाले सांस्कृतिक स्मारकों, ऐतिहासिक नगरों तथा प्राकृतिक स्थलों की सुरक्षा हेतु कौंसिल ऑफ़ यूरोप (1) के 18 सदस्य देशों ने एक महाद्वीपीय कार्यक्रम संचालन का आरंभ किया है।

प्रथम चरण के रूप में कई देशों में इस दाय की विधिवत् सूची तैयार की जा रही है। प्रत्येक स्मारक तथा प्रत्येक ऐतिहासिक, कलात्मक अथवा पुरातात्त्विक स्थल से संबद्ध ब्यौरों का अभिलेख तैयार किया जाएगा। जब यूरोप के स्मारकों तथा स्थलों की संपूर्ण "कार्ड-विषयतालिका" (इंडैक्स) तैयार हो जाएगी तो प्रत्येक "स्थल-वृत्त" का सारांश प्रकाशित किया जाएगा।

महाद्वीपीय स्तर पर किया जा रहा यह सर्वेक्षण उन भूखंडों के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध हो सकता है जो अपनी सांस्कृतिक दाय की विधिवत् छानबीन कर रहे हैं और इसकी रक्षा हेतु योजनाएँ बना रहे हैं।

1965 से अब तक कौंसिल ऑफ़ यूरोप अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन कर चुकी है जिनमें विशेषज्ञों ने इस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है: यूरोप के स्मारकों तथा स्थलों का परिरक्षण एवं परिवर्द्धन; ऐतिहासिक-स्मारकों तथा स्थलों के संरक्षण को दृष्टि में रखते हुए इसके साथ आधुनिक नगर-योजना का समन्वय; मोटर यातायात में भारी वृद्धि तथा वर्धमान भवन-निर्माणों के संकट का सामना कर रहे कई ऐतिहासिक नगरों की समस्या।

मानव की सांस्कृतिक दाय की रक्षा की समस्या को यूनेस्को विश्व-स्तर पर कार्रवाई के विशालतर संदर्भ में देखता है। जून, 1964 में, इसने अंतर्राष्ट्रीय स्मारक आंदोलन चलाया जिसका उद्देश्य था हमारे अतीतकालीन स्मारकों तथा सांस्कृतिक संपदाओं की सुरक्षा की आवश्यकता के प्रति जनता तथा सरकारों में तीव्र जागृति पैदा करना (देखिए "यूनेस्को कूरियर", जनवरी, 1965)।

अभी हाल ही में, इस वर्ष के फ़रवरी तथा मार्च मासों में, यूनेस्को, पेरिस में कई विशेषज्ञ संगठनों तथा कौंसिल ऑफ़ यूरोप एवं लीग ऑफ़ अरब स्टेट्स के विशेषज्ञों तथा पर्यवेक्षकों की दो अंतर्राष्ट्रीय सभाएँ यूनेस्को ने आयोजित की हैं।

पहली सभा का उद्देश्य था अंतर्राष्ट्रीय रूप से अपनाने के लिए सिद्धांतों तथा स्मारकों और स्थलों के प्रभावकारी संरक्षण तथा वर्धन के लिए वैज्ञानिक, तकनीकी एवं विधि-संबंधी मानदंडों का समन्वय करना। दूसरी सभा ने सरकारी तथा निजी निर्माण-कार्यों से त्रस्त सांस्कृतिक संपत्ति की बेहतर रक्षा के निश्चय के लिए यूनेस्को द्वारा तैयार अंतर्राष्ट्रीय संहिता-सामग्री का अनुमोदन किया। यह संहिता-सामग्री नवंबर, 1968 में यूनेस्को महासम्मेलन में अनुमोदनार्थ प्रस्तुत की जाएगी।

(1) आस्ट्रिया, बेल्जियम, साइप्रस, डेन्मार्क, फ़्रांस, संघीय गणराज्य जर्मनी, यूनान, आइसलैंड, आयरलैंड, इटली, लक्सम्बर्ग, माल्टा, नीदरलैंड्ज़, नार्वे, स्वीडन, स्विट्ज़रलैंड, तुर्की तथा यूनाइटेड किंगडम।



—यूनेस्को का बल्गेरियन डेलिगेशन

कज़ानलुक, बल्गेरिया, के समीप 1944 के विशाल थ्रासी-मक़बरे के दफ़न-गुंबद का मित्ति-चित्र (देखिए रंगीन चित्र, पृष्ठ 20-21)। यहां, एक सईस रथ में जुते चार घोड़ों को हांक रहा है। निकट तथा मध्य पूर्व में उत्खनित कई मक़बरों तथा ताबूतों पर चारों ओर खुदाई की गई झालरें पाई गई हैं।

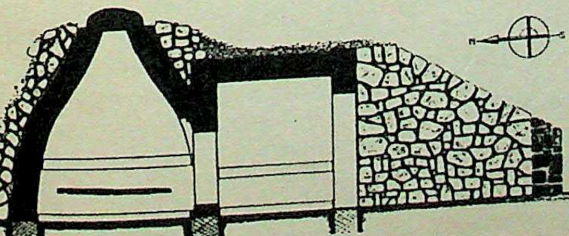
कज़ानलुक

थ्रासी-मक़बरे का एक भीतरी दृश्य

अप्रैल, 1944 में सोफ़िया से 100 मील पूर्व की ओर स्थित कज़ानलुक (बल्गेरिया) के पास सिपाहियों को खोदते-खोदते एक पुरानी क़ब्र का दरवाज़ा मिला। बाहर से तो यह क़ब्र उन अन्य क़ब्रों से मिलती-जुलती थी, जो इस प्रदेश में पाई जानेवाली ईसा से पूर्व के थ्रासी निवासियों की मानी जाती हैं। मगर क़ब्र खोलने पर यह एक अनोखी खोज सिद्ध हुई क्योंकि यह पहली थ्रासी क़ब्र थी जिसकी छत और दीवारें मित्ति-चित्रों से भरी पड़ी थीं। ये मित्ति-चित्र प्राचीन कला की श्रेष्ठ कृतियों के उत्तम उदाहरण माने जाते हैं। इनमें ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के अंत और ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के आरंभ में जो थ्रासी और यूनानी संस्कृतियों का संगम हुआ है उसका उदाहरण पाया जाता है। यह क़ब्र एक थ्रासी सरदार और उसकी पत्नी के लिए बनाई गई थी। इसके भीतर दफ़न करने के कमरे तक के रास्ते में प्राचीन युद्धों के मित्ति-चित्र हैं जो संभवतः इस सरदार के जीवन की घटनाओं से लिए गए हैं। दफ़न करने के कमरे की दीवारों और छत पर रथ-दौड़ और मृत्यु-भोज के चित्र हैं। मृत्यु-भोज के चित्र में सरदार और उसकी पत्नी भी हैं। इनके चारों ओर नौकर-चाकर हैं, प्याला उठाने वाला है, मुरलीवादक है और एक सईस है जो रथ के चार घोड़ों को हाँक रहा है। कज़ानलुक के ये मित्ति-चित्र एक पुरातत्त्वज्ञ और इतिहासकार के लिए थ्रासी जीवन और सभ्यता, वेशभूषा और रीति-रिवाजों पर एक नया प्रकाश डालते हैं। चित्रों में दिखाई गई दावत थ्रासी सरदारों के उस यूनानी काल के जीवन को प्रकट करती है जब सिकंदर महान् की मृत्यु हो चुकी थी। आजकल के दर्शकों को इस बीते हुए काल का ज्ञान प्रदान करने के कुल 25 वर्ष बाद ही कज़ानलुक ख़तरे में पड़ गया है। दो हज़ार वर्षों तक इस क़ब्र पर पड़ी मिट्टी के हटाने से इस स्मारक की जलवायु बदल गई है और इसको ख़तरा पड़ गया है। तापमान तथा नमी के उतार-चढ़ाव के कारण इसके अंदर बहुत से हानिकारक, भौतिक और रासायनिक, परिवर्तन हुए हैं। इसके कुछ चित्रों की पपड़ियाँ उड़ने लगी हैं और कहीं-कहीं दरारें भी पड़ गई हैं। यह क़ब्र अब दर्शकों के लिए बंद कर दी गई है ताकि उनकी उपस्थिति से उत्पन्न हुई नमी द्वारा और अधिक हानि को रोका जा सके। परंतु कज़ानलुक की ये श्रेष्ठ कला-कृतियाँ मिटेंगी नहीं। बल्गेरिया के अधिकारियों ने यूनेस्को की सहायता से विस्तृत अध्ययन द्वारा इसकी रक्षा की योजना बनाई है। यूनेस्को के 6 विशेषज्ञों की एक जाँच-टोली ने इसके नाश के कारणों की भली प्रकार से जाँच की है और उन्होंने कुछ उपाय बताए हैं जिनसे इस अद्भुत सभ्यता-स्मारक की रक्षा की जा सके।

मिट्टी के टीले से उत्खनित 7 मीटर ऊँचा तथा 42 मीटर व्यास के कज़ानलुक मक़बरे का कटाव-आरेखीय चित्र। इसमें (दाएँ से बाएँ) एक दालान, एक गलियारा और 3.25 मीटर ऊँची तथा 2.65 मीटर व्यास की एक क़ब्र है।

वासिली माइकॉफ़ रचित "दि एंशिएंट टॉम्ब नियर कज़ानलुक" से, प्रकाशक—दि बल्गेरियन एकेडेमी ऑफ़ साइंसिज़, सोफ़िया, 1954.



महान् पुरुष, महान् घटनाएँ

कार्ल मार्क्स



1818 में ट्रीयर (जर्मनी) में उत्पन्न एक विधिवेत्ता का पुत्र, "वैज्ञानिक समाजवाद" का निर्माता, जिसने 20वीं शताब्दी के विश्व-इतिहास में प्रसिद्ध अनेक क्रांतिकारी आंदोलन प्रेरित किए। अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में कार्ल मार्क्स को शिक्षक बनने की चाह थी। उन्होंने बोन तथा बर्लिन में विधि, इतिहास एवं दर्शन-शास्त्र का अध्ययन किया। उन्होंने अपना शोध-प्रबंध एपीकुरस और डेमोक्रीटस पर लिखा, किंतु जब उनकी विश्वविद्यालयीय कार्य की आशाएँ विफल होने लगीं, तो उन्होंने पत्रकारिता की ओर अपना ध्यान लगाया। 24 वर्ष की आयु में वे कोलों के एक समाचार-पत्र के संपादक बने, जो एक वर्ष बाद ही बंद कर दिया गया। तब वह पेरिस गए जहाँ उनकी आजीवन मित्रता फ़ैडरिक एंजिल्स के साथ हुई जो जर्मनी के समाजवादी सैद्धांतिक थे। दोनों ने संयुक्त रूप से असंख्य आलोचनात्मक अध्ययन लिखे, विशेषकर "कम्यूनिस्ट मैनीफ़ैस्टो" जो लंदन में 1848 में प्रकाशित हुआ। 30 वर्ष की आयु में मार्क्स ने लिखा कि वे दर्शन-शास्त्र की उपलब्धि के लिए काम आरंभ करेंगे। उन्होंने कहा कि अभी तक दार्शनिकों ने विश्व की केवल व्याख्या ही की है, किंतु अब इसमें परिवर्तन करने का समय आ गया है। अपने जीवन का शेष भाग उन्होंने आर्थिक पद्धति की व्याख्या करने तथा समाज में परिवर्तन लाने में व्यतीत किया। राजनीति के उतार-चढ़ावों ने उन्हें पेरिस से ब्रूसेल्स और फिर कोलों जाने पर बाध्य किया, किंतु अंततः 1849 में वह लंदन में बस गए जहाँ वह अपनी मृत्यु (1883) तक रहे। यहाँ 1864 में उन्होंने 'फ़र्स्ट इंटरनेशनल' स्थापित करने में सहायता दी और इसके आचार्य तथा पथ-प्रदर्शक बने तथा यहीं पर 1867 में उन्होंने अपने सर्वोत्तम ग्रंथ "दास कापिताल" का प्रथम भाग प्रकाशित किया जिसका अध्ययन करने में उन्हें 15 वर्ष लगे थे। मार्क्स की मृत्यु के बाद एंजिल्स की लगन के फलस्वरूप इस ग्रंथ के द्वितीय एवं तृतीय भाग प्रकाशित हुए। एंजिल्स ने अपने जीवन का शेष भाग मार्क्स की विभिन्न पांडुलिपियों को संगृहीत करने तथा नये अनुवादों एवं संस्करणों की देखरेख करने में व्यतीत किया। मार्क्स द्वारा लिखित पुस्तकों, निबंधों, लेखों तथा आंकिक पत्र-व्यवहार के विश्लेषणात्मक अध्ययनों, समालोचनाओं एवं मतभेदपूर्ण चर्चाओं के प्रति विश्व की रुचि कभी नहीं घटी। पेरिस के यूनेस्को हाउस में, पिछले महीने अंतर्राष्ट्रीय-दर्शन एवं मानववादी अध्ययन समिति तथा अंतर्राष्ट्रीय-समाज-विज्ञान-समिति ने एक परिसंवाद आयोजित किया जिसका विषय "समकालीन वैज्ञानिक विचारधारा के विकास में कार्ल मार्क्स की देन" था। यह परिसंवाद इस महान् जर्मन विचारक की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया। यूनेस्को के महानिदेशक श्री रेने मेहयू ने इस परिसंवाद के आरंभ में कहा—"चाहे हम मार्क्सवाद को स्वीकार करें अथवा अस्वीकार करें, चाहे हम इसे सिद्धांत रूप में ग्रहण करें अथवा इसे दोषपूर्ण मानकर इसका खंडन करें, चाहे इसे एक विधि मानें अथवा इसे प्रचारमात्र मानकर इसका विरोध करें, मार्क्स ने हमारे काल से संबद्ध जिन प्रश्नों को पूछने पर हमें बाध्य किया, और हमें सत्य और न्याय की खोज की प्रेरणा दी, इसके कारण वह हमारे मध्य सदा जीवित हैं।"

जोहान गुटेनबर्ग



यूरोप के मुद्रण-कला के जनक, जोहान गुटेनबर्ग, का जन्म जर्मनी के मेंज नामक स्थान में हुआ। आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व (1468) में उनकी मृत्यु हुई। मुद्रण वह कला है, जिसके माध्यम से प्रत्येक कला की सेवा होती है। वास्तव में मुद्रण चीन का आविष्कार है, जहाँ ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में मिलने वाले धातु के अक्षरों द्वारा छापने की तकनीक को खोजा गया और उसका विकास हुआ। इससे भी कई सौ वर्ष पूर्व चीन ने लकड़ी के गुटकों पर नक्काशी के द्वारा, चावल से निर्मित कागज़ों पर छापने का कार्य किया था। फिर भी गुटेनबर्ग को अपनी उपलब्धियों के लिए श्रेय प्राप्त है। अपनी अद्वितीय देन के रूप में उन्होंने एक नई प्रणाली को जन्म दिया, जिससे बड़ी संख्या में, सही और जल्दी हिलनेवाले टाइप ढाले जा सकते थे। उन्होंने अपने आविष्कार से पश्चिम को इस परिश्रम से बचा लिया जो वृथा ही पांडुलिपियों को हस्तलिपि से नकल करने पर लगता था तथा उन्होंने इस प्रकार एक सांस्कृतिक तथा आर्थिक क्रांति को जन्म दिया। 1436 में स्ट्रैसबर्ग में रहकर गुटेनबर्ग सुनार का काम करते थे, जब उनके मस्तिष्क में उन लिखित पृष्ठों को छापने का विचार आया जिनकी सेंट आर्बोगस्ट के भिक्षुक अपने हाथ से नकल किया करते थे। लॉरेंस कोस्टर नामक एक डच के मस्तिष्क में लकड़ी के हिलने वाले अक्षरों से छापने का विचार इससे पहले आया था। परंतु गुटेनबर्ग समझते थे और इसमें वह ठीक भी थे कि धातु पर की गई नक्काशी से होने वाली छपाई अधिक सही और उपयुक्त होगी। मेंज लौटने पर उन्होंने तथाकथित 'फ़्रैगमेंट्स ऑफ़ दि लॉस्ट जजमेंट' लैटिन व्याकरण के कई संस्करण तथा कैलेंडर प्रकाशित किए। 1456 में उन्होंने टाइप का एक पूरा सैट तैयार किया और इससे 42 पंक्तियों वाला प्रसिद्ध बाइबिल मुद्रित किया। 1460 में 36 पंक्तियों वाला बाइबल मुद्रित हुआ। इसके बाद मुद्रण प्रणाली सारे यूरोप में शीघ्र ही फैल गई। परंतु अपने उद्यमों से गुटेनबर्ग ऋण-भार से दबकर दैन्यावस्था में मृत्यु के शिकार हुए तथा उनका नाम शताब्दियों तक अज्ञात रहा।

मुहम्मद इक़बाल



पाकिस्तान के महान् कवि और दार्शनिक मुहम्मद इक़बाल का देहांत इस राज्य (देश) के बनने से नौ वर्ष पहले 1938 में हुआ जब उसकी आयु 65 वर्ष की थी। पाकिस्तान की स्वतंत्रता का समर्थन करने वालों में उनका नाम प्रथम स्थान पर है। किंतु उनकी प्रसिद्धि पाकिस्तान की सीमा के बाहर भी है। भारत तथा पाकिस्तान के लाखों मुसलमान एवं अन्य इस्लामी देश उनका आदर करते हैं तथा उन्हें आध्यात्मिक विद्या का पथ-प्रदर्शक मानते हैं। वह गद्य और पद्य लिखने वाले एक प्रसिद्ध दार्शनिक-कवि थे जो अंग्रेज़ी, उर्दू और फ़ारसी में समान अभिव्यक्ति-क्षमता रखते थे। उनकी कुछ पुस्तकें फ़ारसी में हैं क्योंकि विज्ञ मुसलमानों में यह भाषा बहुत सुपरिचित है और इसमें कुछ विशेष दार्शनिक विषय भली प्रकार से लिखे जा सकते हैं। इक़बाल ने जीवन की रचनात्मक गति पर हज़ारों भाव अभिव्यक्त किए, यद्यपि वह जानते थे कि मृत्यु अनिवार्य है। उनके विचार में आधुनिक अवस्था के बदलने की संभावना मनुष्य की बड़ी सिद्धि एवं महान् उपहार है। उनकी धारणा है कि क़ुरान में श्रद्धा और विज्ञान की उन्नति, दोनों मिलकर मनुष्य की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। उनकी रचनाएँ मनुष्य के भाग्य में उनके विश्वास को दर्शाती हैं, चाहे भिन्न सभ्यताओं के लोग परिपूर्ण जगत् की खोज में किसी भी कसौटी को क्यों न अपनाएँ। उन्हें पूर्व एवं पश्चिम के दार्शनिक सूत्रों का ज्ञान था तथा वह पूर्व और पश्चिम के मध्य सेतु का कार्य करने के लिए पूरी तरह से उपयुक्त थे। उनकी सर्वश्रेष्ठ तीन पुस्तकें "दि सीक्रेट्स ऑफ़ दि सैल्फ़", "दि मिस्ट्रीज़ ऑफ़ सैल्फ़लैसनैस" और "दि जाविदनामा" हैं इनमें से "जाविदनामा" का फ़ारसी से अंग्रेज़ी में अनुवाद यूनेस्को द्वारा संगृहीत प्रतिनिधि पुस्तकों में से एक है।

कार्लोस रीलिस



आधुनिक उरुग्वेई साहित्य के सर्वप्रथम उपन्यासकार कार्लोस रीलिस, एक पशुसंवर्धक से लेखक बन गए तथा उन्होंने अपना जीवन लिखने में बिताया। वे मांटिविडियो में ही जन्मे तथा वहीं पर मृत्यु को भी प्राप्त हुए (1868–1938)। उन्होंने पर्याप्त भ्रमण किया तथा अपने जीवन का अधिकतर भाग सेविले व पेरिस में व्यतीत किया। अपने प्रथम प्रसिद्ध उपन्यासों, 'बेबा' और 'ला-रज़ा-डि केन' में उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में उरुग्वे के ग्राम्य-जीवन संबंधी परिवर्तनों को दर्शाया है। 'एल-गोशो फ़्लोरिडो' नामक पुस्तक में उन्होंने अपने देश की विगत कटुताओं को फिर से चित्रित किया। कार्लोस रीलिस ने बहुत सी लघु कथाएँ तथा निबंध भी लिखे, जिनमें पिछली शताब्दी के अंतिम दौर पर पेरिस के दर्शन तथा सौंदर्य-बोधी प्रवृत्तियों का पुनरवलोकन किया गया है। उनकी श्रेष्ठतम कृति 'एल-एंबुजो डि-सेविला' सेविले के प्रति उनके अनुराग से प्रेरित थी।

संपादक के नाम पत्र

वैज्ञानिक का सामाजिक उत्तरदायित्व

महोदय,

'यूनेस्को कूरियर' (पत्रिका) मुझे सदैव मनुष्य-जाति के भविष्य के प्रति एक आशा देती रही है। परंतु टेलीविज़न पर प्रदर्शित तथा समाचार-पत्रों में प्रकाशित समाचारों के कटु सत्य को देख और पढ़ कर निराशा होती है। निश्चय ही "यूनेस्को कूरियर" का इसके साथ कोई संबंध नहीं है, फिर भी, इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। कष्टों तथा आतंक को देखकर विस्मयपूर्ण निराशा होती है कि विज्ञान ने इनसे छुटकारा दिलाने के लिए क्या कुछ किया है। इसके साथ ही इस बात की भी आशंका होती है कि विज्ञान ने भूतकाल में क्या किया, वर्तमान काल में क्या कर रहा है तथा भविष्य में अवस्था को और भी गंभीर बनाने में क्या करेगा।

आपके मार्च, 1968 अंक को देखने से पता चलता है कि कुछ वैज्ञानिकों की दृढ़ मान्यता है कि विज्ञान हमारे लिए वरदान सिद्ध हो सकता है तथापि कैसी विडंबना है कि आज विज्ञान का उपयोग ऐसे कार्यों में किया जा रहा है जो सुखी जीवन के प्रतिकूल हैं।

एमिले ज़ोला ने "जे एक्यूज़" में फ़्रांसीसियों के मानव-जीवन के प्रति बुरे वर्त्ताव पर लिखा है। समय आ गया है कि एक और 'जे एक्यूज़' लिखा जाए जिसमें यह दिखाया जाए कि वैज्ञानिक लाखों मनुष्यों के लिए क्या कर रहे हैं। विशेषज्ञों की सहायता के बिना राज्य युद्ध की तैयारियाँ नहीं कर सकते। अतः यह परम आवश्यक है कि इन विशेषज्ञों को अविलंब रोक दिया जाए। मानव की बुद्धिमत्ता इसी में है कि कोई भी विशेषज्ञ ऐसी प्रायोजना पर कार्य करने के लिए न मिले, जो मानव के विरुद्ध हो, चाहे वह किसी रंग, जाति अथवा 'वाद' का क्यों न हो।

विल्बर श्रम्म का लेख "अंतरिक्षीय नव संगीत" शायद वह संगीत न निकले, जिसकी उन्हें आशा है। मेरा अनुमान है कि उपग्रहों का प्रयोग अति तुच्छ एवं विनाशात्मक लक्ष्यों, विज्ञापन तथा प्रचार के लिए किया जाएगा। प्रचार में वैसे कोई बुराई नहीं किंतु राष्ट्र एक ऐसे अलौकिक अवसर को खो बैठेगा जिससे उसे बहुत लाभ पहुँच सकता है।

निःसंदेह वैज्ञानिक कहेंगे कि उनकी खोजों के दुरुपयोग के लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता। यह ठीक है, परंतु वे वैज्ञानिकों के नाते प्रबलतापूर्वक इनके ख़तरों की चेतावनी तो दे सकते हैं। जहाँ तक, उन लोगों का संबंध है जो जान-बूझकर ऐसी अमानवीय प्रायोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं, उन्हें यह अनुभव कराया जाए कि उनके कार्यों को जनता पसंद नहीं करती। मेरे विचार में ऐसा करना अव्यावहारिक नहीं है। डॉक्टरों की भी अपनी संहिता है—चिकित्सकों की शपथ। इसी तरह वैज्ञानिकों की भी शपथ हो जिससे वे केवल मानव की भलाई के लिए ही कार्य कर सकें। यह ऐसी शपथ हो जिसके नैतिक बंधन में होकर वैज्ञानिक सदैव मनुष्यों की भलाई का ही ध्यान करे तथा कभी भी न तो स्वयं को और न ही दूसरों को ऐसी खोजों को विकसित करने दे जो मानवता के लिए हानिकर हों।

गोर्डन हे
सोलीहुल, यू. के.

वैज्ञानिक इन ख़तरों की ऊँचे स्वर में चेतावनी दे रहे हैं। 'यूनेस्को कूरियर', अक्तूबर-नवंबर 1967, अंक में फ़िलिप नोएल बेकर का लेख और नवंबर 1964 के निःशस्त्रीकरण अंक में, विशेष रूप से पुगवाश पर लेख देखें, जो विश्व के मामलों के प्रति वैज्ञानिकों के उत्तरदायित्व का विश्व-आंदोलन है—
—संपादक

बहुत अधिक श्वेत कण

महोदय,

"आगामी कल में हमारा स्वास्थ्य" विषय पर आपके अप्रेल 1968 अंक के पृष्ठ 13 के चित्र में लिखा है : "प्रयोगशाला में एक बूँद रक्त का परीक्षण करने से पता चलता है कि उसमें साधारणतः 50 लाख लाल रक्त कण, 80 लाख श्वेत कण तथा 200,000 रक्त बिबाणु (प्लेटलेट्स) होते हैं . . . ." वास्तव में, उसमें श्वेत कणों की संख्या 80 लाख नहीं, बल्कि 8,000 होनी चाहिए।

गॉय कूटियू
ड्रियुक्स, फ़्रांस

मानव-अधिकार तथा कर्त्तव्य

महोदय,

लोग मानव-अधिकारों के विषय में तो बहुत बढ़ी-चढ़ी बातें करते हैं (जैसा कि आपकी मनोरंजक पत्रिका के फ़रवरी, 1968 अंक में था) परंतु, सचाई यह है कि मानव-"कर्त्तव्यों" की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। स्वभावतः "कर्त्तव्यों" का विचार कम आकर्षक होता है। क्योंकि यह दायित्वों तथा प्रतिबंधों से आबद्ध रहता है। यद्यपि प्रत्येक अधिकार कर्त्तव्य का अंग मात्र होता है। और प्रथम कर्त्तव्य तो दूसरों के वैधानिक अधिकारों का सम्मान करना होता है। इसमें लाभ ही क्या है कि मनुष्यों के अधिकारों को तो स्वीकार कर लिया जाए किंतु उनके प्रति कोई कृतज्ञता न दिखाई जाए।

जे. क्विगनार्ड
पेरिस, फ़्रांस

कोलाहल प्रदूषण

महोदय,

कोलाहल प्रदूषण पर आपका जुलाई, 1967 अंक आधुनिक प्रगति के कुछ दोषों का महत्त्वपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है।

मेरा विचार है कि डॉ. बिरानैक के सूचनात्मक लेख के कुछ अंशों पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है। वे कहते हैं (पृष्ठ 14) कि उन लोगों में से, जो हवाई अड्डों के पास रहते हैं, 25 प्रतिशत ऐसे हैं जो इस कोलाहल से बाधित होते दिखाई नहीं देते और 10 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो प्रायः ऐसा कोलाहल पसंद नहीं करते जो उनका अपना न हो। शेष ऐसे लोग हैं जो इस कोलाहल से बाधित होते हैं। किंतु शेष 65 प्रतिशत लोगों के इस बड़े समूह के विषय में कुछ नहीं कहा गया है।

लेखक का कथन है, "लोगों को किसी हद तक आधुनिक सभ्यता के कोलाहल से अभ्यस्त हो जाना चाहिए"। उसका तात्पर्य संभवतः यह नहीं कि जितना कोलाहल हम सहन कर रहे हैं, उससे भी अधिक हमें सहन करना चाहिए। उसका अभिप्राय संभवतः यह है कि हमें यह मानना चाहिए कि कोलाहल करने वाली मशीनें सामाजिक दृष्टि से अयोग्य मशीनें हैं और उत्तरदायी लोगों का कर्त्तव्य है कि वे न ऐसी मशीनें ख़रीदें और न उनका प्रयोग करें। अनावश्यक कोलाहल करने वाले लोगों के साथ हमें वही व्यवहार करना चाहिए जो हम उन लोगों के साथ करते हैं जो अपने घर का कूड़ा-कर्कट शहर की गलियों में फेंक देते हैं। ऐसा करना उचित ही होगा और हमें आशा है कि हमारे शिक्षाविद् इस मामले में और अधिक विचार करेंगे।

एम्स्टर्डम, बंबई, लंदन, पेरिस तथा रोम के निवासी गंदगी के विषय में अपने मध्यकालीन पूर्वजों से बहुत आगे बढ़ गए हैं और हमें भी इसी प्रकार कोलाहल को दूर करना चाहिए।

ज्योफ़्रे बेल
पेरिस, फ़्रांस

फूल, जिन्होंने युद्ध रोक दिया





महोदय,

यहाँ मैं दो चित्र भेज रही हूँ जिन्हें बच्चों ने अवकाश-शिविर में बनाया है। इनको मैंने "हरी उँगलियों वाले तिस्तू" ('यूनेस्को कूरियर', अक्तूबर-नवंबर 1967) की कहानी सुनाई। मैंने उन्हें सुझाया कि वे उस युवा बालक से संबद्ध इस कहानी के कुछ अंशों के चित्र बनाएँ जिसने पौधे उगाने की अनूठी प्रतिभा के द्वारा युद्ध को रोक दिया। 12 वर्षीय क्रिस्टैनी ने यह मुहावरा चुना : "धूप में हथियार अकेशिया की तरह खिल उठें" (ऊपर दाईं ओर) और डैनियल (12 वर्ष) ने—"गो इट लोगों के मुक़ामों पर फ़ॉक्सग्लोव, ब्लूबेल तथा कार्नफ़्लावर की वर्षा" का चित्र बनाया। अध्यापिका होने के नाते मैं यह कहना चाहती हूँ कि बच्चों को कहानियाँ सुनाने में कितना आनंद आता है—ऐसी कहानियाँ जिनसे उन्हें स्वयं विचार करने का अवसर मिलता है, जो वयस्कों के पक्षपातों से अप्रभावित होती हैं तथा जो उन्हें अपने निष्कर्ष निकालने में प्रोत्साहन देती हैं। "तिस्तू" में एक विशेष बात यह है कि इसमें 5 वर्ष से 15 वर्ष तक के सभी बच्चों की रुचि है। आजकल लोगों को आशा है कि उनके बच्चे एक शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण करेंगे जिसकी सफलता के लिए शिक्षकों को अंतर्राष्ट्रीय समझौते को बढ़ाने वाली सामग्री की आवश्यकता है। शांति जैसे विषय पर ऐसी उत्तम कहानियाँ प्रायः विरली ही हैं।

श्रीमती एम. एफ़. गांजोनांड
तॉलौसी, फ़्रांस

यूनेस्को समाचार दर्शन

जल के नीचे पुरातत्त्व संबंधी प्रशिक्षण

लंदन विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व-संस्थान ने युवा पुरातत्त्वज्ञों, जो जल के अंदर प्राचीन नष्ट पोतों तथा स्थलों की खोज के लिए विशिष्ट ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, को प्रशिक्षण देने की सुविधा का कार्यक्रम बनाया है। विशेषज्ञ उन्हें प्राचीन जल-पोतों तथा उनके आवागमन के रास्तों के इतिहास तथा अनुसंधान से संबद्ध क्षेत्रों का ज्ञान करा रहे हैं। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य उन पुरातत्त्वज्ञों को जल के नीचे खोज-कार्य के लिए ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम की तैयारी कराना है, प्रमुखतः ब्रिटेन के तटीय स्थानों पर।

जापान की प्राकृतिक वाष्प-शक्ति

मात्सुकावा में पर्वतीय क्षेत्र हाचीमानताई के राष्ट्रीय पार्क में स्थित जापान का भू-तापीय केंद्र अपने पूरे व्यापारिक यौवन पर है। यह ज़िला चिरकाल से अपने गर्म स्रोतों के लिए प्रसिद्ध है तथा यह केंद्र लगभग 3000 फ़ुट गहरे भू-गर्त्त से प्राकृतिक स्रोतों को ग्रहण कर रहा है।

स्मारकों की सुरक्षा के लिए नई अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

सांस्कृतिक संपत्तियों, स्मारकों तथा अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व वाले स्थानों की सुरक्षा से संबद्ध समस्याओं पर प्रकाश डालनेवाली "मानुमैंटम" नामक एक छमाही अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका हाल ही में प्रकाशित हुई है। "इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ़ मानुमैंट्स एंड साइट्स" (आई. सी. ओ. एम. ओ. एस.) से प्रकाशित यह पत्रिका 'यूनेस्को' तथा बेल्जियम के संस्कृति-मंत्रालय की आर्थिक सहायता से निकलती है। इसमें प्रकाशित लेख अंग्रेज़ी या फ़्रेंच में होते हैं और उनका अन्य भाषाओं में सारांश दिया रहता है। इसके प्रथम अंक में अनेक चित्र, रंगीन प्लेटें तथा पाँच प्रमुख लेख हैं। साथ ही, पुनःस्थापन तथा संरक्षण संबंधी विषयों पर लगभग 450 लेखों वाली संदर्भ-ग्रंथ-सूची है। "मानुमैंटम", 95 प्रूट बिजिनहॉफ़, लौवेन, (बेल्जियम) आई. सी. ओ. एम. ओ. एस. के सदस्यों के लिए वार्षिक चंदा 8 डॉलर तथा दूसरों के लिए 12 डॉलर।

यू. एस. खेलों का कला-संग्रहालय

'खेलों का राष्ट्रीय कला-संग्रहालय' (एन. ए. एम. ओ. एस.) मैडीसन स्क्वायर गार्डन सेंटर, न्यूयार्क में एक स्थायी कला-विधि खोल रहा है। इस संग्रहालय के बढ़ते हुए संग्रह में विभिन्न कालों की कांस्य मूर्तियाँ, चित्रकारियाँ तथा मृत्तिका-शिल्प दिखाए गए हैं। यहाँ ऊँची डुबकियों से लेकर ऊँट की दौड़ तक सभी क्रीड़ाओं को प्रदर्शित किया गया है।

मैड्रिड में यूनेस्को के मित्र

मैड्रिड (स्पेन) में "दि फ़्रैंड्स ऑफ़ यूनेस्को क्लब" ने 1968 में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय मानव-अधिकार सम्मेलन के अवसर पर विचार-गोष्ठियों, व्याख्यानों तथा प्रदर्शनियों का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया है। विश्व के कई अन्य क्लब हैं जो 'यूनेस्को' के अंतर्राष्ट्रीय समझौते तथा सहयोग का प्रचार करते हैं। मैड्रिड क्लब उनमें से एक है जिसकी स्थापना 1959 में हुई थी। इसकी शिक्षा-समिति के युवा अनुभाग ने हाल ही में, पुरस्कृत लेख "हमारी आशा का संसार" का अध्ययन किया तथा उस पर चर्चाएँ कीं। इसकी लेखिका उरुग्वेई छात्रा, मेरिया क्रिस्टिना कोस्टा डायज है और यह 'यूनेस्को कूरियर' (मार्च, 1968) में प्रकाशित हुआ है।

'लियोनार्डो' कलाकारों की पत्रिका

एक नई प्रकार की कला-पत्रिका, 'लियोनार्डो', जिसका उपशीर्षक "समकालीन कलाकारों की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका" है, का हाल ही में ब्रिटेन में प्रकाशन आरंभ हुआ है। इसका संपादकीय कार्यालय फ़्रांस में है। इसके लेख अंग्रेज़ी या फ़्रैंच भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। प्रथम अंक का संपादकीय इस प्रकार है: "यद्यपि दृश्य अथवा प्लास्टिक ललित कला मनुष्य के प्रयत्न का प्राचीनतम क्षेत्र रहा है, तथापि विश्व में ऐसी कोई पत्रिका नहीं है जो एकमात्र कलाकारों के लिए हो और कलाकार द्वारा ही रचित हो।" 'लियोनार्डो' त्रैमासिक पत्रिका है तथा नाना चित्रों से अलंकृत है। मुख्यतः इसका लक्ष्य कलाकारों के बीच विचार विनिमय का माध्यम प्रस्तुत करना है। पेरगैमॉन प्रेस, ऑक्सफ़ोर्ड, यूनाइटेड किंग्डम द्वारा प्रकाशित; सामान्य ग्राहकों के लिए वार्षिक चंदा: यू. के.–2 पौंड; यू. एस.–6 डॉलर; फ़्रांस–29.20 फ़्रैंक; आस्ट्रेलिया–5 डॉलर।

झलकियाँ

- स्पेन की निरक्षरता दर हाल ही के साक्षरता आंदोलनों द्वारा 3.2 प्रतिशत से घट गई है। इन आंदोलनों में दिसंबर, 1967 तक 818,000 वयस्कों को पढ़ना-लिखना सिखाया गया।
- विश्व स्वास्थ्य-संगठन की रिपोर्ट है कि मूलतः मलेरिया-ग्रस्त विश्व-क्षेत्रों में रहनेवाली जनसंख्या का 78 प्रतिशत भाग इन रोगों से सुरक्षित हो चुका है या आगामी कुछ वर्षों में हो जाएगा।
- सोवियत संघ आगामी पाँच वर्षों में अपनी सड़कों के विस्तार में पाँचवें भाग (63,000 किलोमीटर) की और वृद्धि कर लेगा।
- भारतीय तथा अन्यदेशीय इंजीनियरों और तकनीशियनों को प्रशिक्षण तथा अनुसंधान की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए अहमदाबाद (भारत) में उपग्रह संप्रेषण तकनीक का एक कॉलेज खोला गया है।

आर्थिक प्रगति के लिए औद्योगिक विकास



संसार की जनसंख्या के दो तिहाई भाग वाले देशों में आर्थिक विकास के लिए पूर्वापेक्षित रूप में उद्योग-प्रसार के परिवर्द्धन के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के औद्योगिक विकास संगठन द्वारा किए जा रहे काम के अभिनंदन-स्वरूप हाल ही में 6 तथा 13 सेंटों के यू. एन. डाक टिकट जारी किए गए हैं। यूनिडो, जिसका मुख्य कार्यालय विएना (आस्ट्रिया) में है, उद्योगीकरण संबंधी अध्ययन तथा अनुसंधान कार्यक्रमों का संचालन तथा इस क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्रसंघ और इसकी विशेषज्ञ-एजेंसियों के काम का समन्वय करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ डाक-प्रशासन के फ़्रांस में एजेंट के रूप में यूनेस्को का टिकट-संग्रह विभाग संयुक्त राष्ट्र संघ की सभी टिकटों तथा प्रथम दिवसीय लिफ़ाफ़ों को विक्रयार्थ रखता है। ब्यौरे के लिए यूनेस्को फ़िलेटलिक सर्विस; प्लेस डि फ़ोंटेनॉय, पेरिस (7 इ) को लिखें।

इस अंक के अनुवादक —

1. जे. एन. कल्ला
2. प्रो. संत लाल

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए	ले. वी. ज़ेलेनिन	पृ. 142	मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास	ले. हरीराम गुप्त	पृ. 304	मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अँग्रेज़ी शब्दकोश		पृ. 324	मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा	ले. रामचंद्र वर्मा	पृ. 326	मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 28 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु. वार्षिक 7.50 रु.

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ. 148	मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ. 270	मूल्य 12.50
3. संकलन—भारतीय साहित्य के प्रमुख कृतिकारों की रचनाएँ	पृ. 580	मूल्य 10.50

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्द्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. स्टैंडर्ड देवनागरी स्क्रिप्ट
4. देवनागरी थ्रू द एजेज़
5. परिवर्द्धित देवनागरी (चार्ट)

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थियेटर कम्यूनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रबंध संपादक ए. चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा-मंत्रालय, भारत सरकार
द्वारा प्रकाशित। ए. के. [illegible] द्वारा थॉमसन प्रेस, फरीदाबाद (भारत) में मुद्रित।



फ़ोटो © बर्नार्ड विलारेट

मेक्सिको की बारोक़ कला में ओक्साका छत

गुआतेमाला की सीमा के निकट ओक्साका, मेक्सिको के एक गिरजे की यह मूर्तियों तथा नक़्क़ाशी से सुसज्जित छत 17वीं और 18वीं शताब्दी की बारोक़ कला की कई लेटिन अमरीकी उत्कृष्ट कृतियों में से है। यह "जीसे वृक्ष" का चित्र है जो ईसाई देशों में मध्य युग से चित्रकला के विषय के रूप में प्रचलित है। किंग डेविड के पिता जीसे के सुप्तावस्था के चित्र से एक वृक्ष का उद्‌गम दिखलाया गया है जिसकी शाखाओं में जीसस तक उसके मुख्य पूर्वज मूर्ति-रूप में प्रदर्शित है। परंतु ओक्साका के कलाकार ने सेंट लुई, क्रिस्टोफ़र कोलंबस, पिज़ारो तथा कोर्टेज़ को मिला कर इस वंशवृक्ष में कुछ वृद्धि की है। मेक्सिको नगर के निकट, यूनेस्को की सहायता से, सांस्कृतिक संपत्ति के संरक्षण के लिए स्थापित एक लेटिन अमरीकी केंद्र समूचे लेटिन अमरीका में स्मारकों तथा कलाकृतियों के पुनरुद्धार तथा परिरक्षण के लिए सहायता दे रहा है।

रजि. सं. R. N. 14443/67